लावनी ॥

अर्थात् मरहटीख़याल ॥

श्रीमत् काशीगिरि बनारसी परमहंसने देवता और देवियों की स्तुति विशेष कर ब्रह्म की उपासना ब्रह्मज्ञान उपदेश और हरिभक्तों के ज्ञानकी दृढ़ता के हेतु श्रीकृष्णचन्द्र परब्रह्म की बालक्रीड़ा का वर्णन, यवनभाषामिश्रित अति ललित ख[illegible]ों में रची है ॥

नवींबार

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी

दिसम्बर सन १९०२ ई० ॥

भूमिका

कोई इसको लावनी कहते हैं और कोई मरहटी वा ख्याल कहते हैं असलमें इसका बनाना और गाना दक्षिण से उत्पन्न है और इसके दो कर्त्ता हुये एक का नाम तुकनगिर और दूसरेकानाम शाहअलीथा उन्हों ने दो मत खड़ेकिये तुर्रा और कलँगी तुकनगिर तुर्रे को बड़ा कहतेथे और शाहअली कलँगीको बड़ा रख- ते थे आपसमें विवाद कियाकरते थे और अपना अ- पना पन्थ उन्होंने चलाया यहांतक कि [illegible] उन के [illegible] बहुत से लोग इस देशमें भी बनाते गाते हैं उनमें पढ़े लिखे भी हैं परन्तु बड़ा अफ़सोसहै कि गा- लीही गुफ़्ना बकते हैं एकदूसरेसे कि आपसमें लड़भी पड़ते हैं इसी सबबसे इसको कोई भला आदमी पसंद नहीं करताहै और मैंभी इसी विषयमें बालअवस्थासे मशग़ूलथा जब ईश्वरने मेरे ऊपर अपनी कृपाकरी तो [illegible] मुझको छुड़ाया और फ़क़ीर बनाया अपना जलवा मुझको दिखलाया उसको देखतेही वह मस्ती का आलमहुआ कि आली आली मज़मून नज़र आने लगे तो मैंने अपने दिलमें यह बिचारा कि तू इसी ला- वनीसे भगवत् आराधनाकर तो उर्दू बोली में मैंने इ- श्क़मारफ़त मतलबतौहीद और हिन्दी में उपासना ब्र- ह्मज्ञान को कहा इसवास्ते कि जो कोई इसके असल

मतालिबको पायेगा वह जीतेही जी उसमें मिलजाये
गा और वही ईश्वर मेरे दिलमें बैठके ये सब बातें ब
नाताहै मैं कुछ पढ़ालिखा नहीं परन्तु जो कोई इस
मज़मूनको सुनतेहैं वह जाय तअ़ज्जुब समझते हैं औ
पसंद करतेहैं इसीसबबसे मैंने थोड़ीसी लावनी छपवा
ई हैं कि जिसमें सब अमीर व ग़रीब पढ़ें और इसक
समझें और जो कोई इसको अपनी तबीअ़त लगा
पढ़ेंगे तो उनका भला होगा ॥

दोपदी

जो कहता हमकरते वो दुःख भरताहै ।
जो करता जगके कार वही करताहै ॥

श्रीमत्काशीगिरि बनारसी परमहंस आशकेहक़ानी

लावनी ॥

हृदय में हैं हिंगलाज करैं काज लाज रखनेवाली। नयनादेवी नयनमें बसैं हँसैं देदेताली। शीशमें सीता सती बिराजैं सावित्री सङ्कटारानी। मस्तक में रहैं आय श्री महाविद्या औ महरानी। भृकुटी में करैं बास भैरवी भयमानैं सब अभिमानी। ब्रह्ममें अपने बिराजैं बिंध्याचल और ब्रह्मानी। बसैं नासिकामें नवदुर्गे नगरकोट लाटोंवाली। नयनादेवी नयनमें बसैं हँसैं देदेताली १ मुखमेंबसैं मङ्गलादेवी सब कारज करदें मंगल। होठमें हेमावतीरहैं क्षणमें काटिदेवें कलिमल। जिह्वामें जाह्नवी और यमुना सरस्वती सबसेनिर्म्मल। गलेमें गौरी और गायत्री का जपनामअटल। कण्ठमें बसैं कालिकादेवी कंकाली और महाकाली। नयनादेवी नयनमें बसैं हँसैं देदेताली २ कानमें कमला और कात्यायिनी क्रियारूप अद्भुतमाया। दोनोंभुजामें बसैं भवानी बड़ामुख दिखलाया। उरमें बसैं उमा उत्रानी उग्रतेज उनका छाया। कहांलों वर्णों लखी नहींजातीहै अपनी काया। बुद्धिमें

बसैं विधाता माता बड़ी बुद्धि देनेवाली । नयनादेवी नयनमें बसैं हँसैं दे देताली ३ रोमरोममें रमीरम्भा और नाभिकमलमें निरवानी । कहैं देवीसिंह इसे कोई पहिंचाने चातुरज्ञानी । श्वासश्वासमें शक्तीबोलै ध्यान धरैं पूरेध्यानी । बनारसीयहकहैं भगवतीकी भक्तीमनमानी । मेवा और मिष्टान्नहारफूलोंकी नितचढ़तीडाली । नयना देवी नयनमें बसैं हँसैं दे देताली ४ ॥

सर्वधर्मसे परेवेदमें लिखाहै सुन संन्यासीका धर्म्म । क्या कोइजाने पण्डित के संन्यासी का कौन है कर्म्म । ग्रहणकरैं तो बनै नहीं और त्यागकरैं तो क्या त्यागैं । सोवें तो निद्रा नहिं आवै जागें तो सोवतजागैं । युद्धकरैं तो धर्मघटै और पापलगै रणसेभागैं । त्रैलोकीकेदाताहैं फिर क्यों भिक्षा घरघर मांगैं । उनकी गती वोहीजाने नहीं मिलै किसीको जिनकाधर्म्म । क्याकोइजाने पंडित के संन्यासीका कौनहै कर्म्म १ मौनरहैं पर बोलैं सबसे बरततहैं और सबखावें । आसन दृढ़है बाटचलैं जित चाहैं वहउतहीजावें । पढ़ेनहीं एकोअक्षर और वेदशास्त्र निशिदिनगावें । आंखमूंद देखेसबको पर आप दृष्टिमें नहिंआवें । वह क्या देखैंगे उनको जिनकी दृष्टिमें लगा है चर्म्म । क्या कोइजाने पण्डितके संन्यासीका कौनहै कर्म्म २ योगबिषे वह भोगकरैं और भोगबिषे साधैं वह योग । शोकबिषे वह हर्षकरैं और रोगबिषे रहैं सदानिरोग । बियोगमें संयोगकरैं संयोगबिषेरहैं बिना बियोग । लोकबिषे परलोकसुधारैं इसको समझैं ज्ञानी लोग । जिनकीमायासे सृष्टीमें व्यापरहाहैसबकोभर्म्म ।

क्याकोइजाने पंडितके संन्यासीका कौनहै कर्म्म ३ देह विषे वह रहैं विदेही मायामें रहैं निर्माया। देवीसिंह यकहैं कि उनका पार किसीने नहिंपाया। चारवेद षट् शास्त्र अठारोंपुराणने योंहीं गाया। सर्व धर्मसे बड़ाधर्म संन्यास मेरेमनमें भाया। बनारसीतीनोंगुणसे है रहित न समभै धर्म अधर्म्म। क्याकोइजाने पंडितके संन्यासीका कौनहै कर्म्म ४॥

मनमुरशद्सेमिलके अबतू चित्तको अपने चेलाकर। दुईदूरकर हमेशा निर्भयपदमें खेलाकर। देखतो अपने आपकोतूहै कौनकहांसे आयाहै। किसनेपैदाकिया और किसने तुझे बनायाहै। जो तू कहैहूं बापसे पैदा माने मुझको जायाहै। यह तो गलतहै अरे तू आपीमें आप समायाहै। दुबिधाको कर अलग और सब दिलकादूर झमेलाकर। दुईदूरकर हमेशा निर्भयपदमें खेलाकर १ जबतकहै अज्ञान तभीतक कुटुम्बकबीला भाईहै। ज्ञान हुआ तो आतमाआपमें आपसमाईहै। कोईबनाब्राह्मण क्षत्री कोई वैश्य शूद्र कहनाई है। हमने देखा तो सबके बीचमें कुंवरकन्हाई है। समदर्शीहो बिचरपड़े जो दुख सुख तनपर झेलाकर। दुईदूरकर हमेशा निर्भयपदमें खेलाकर २ तू उसकोपहिंचान तेरे इसशरीरमें बसता है जो। किसगफ़लतमें पड़ा औ कौन नींदभर रहाहै सो। खोलके अपनीआंखदेख वहएकहै उसको समुझनदो। कौनहै तेरा और तू किसकाहै इसे तुम समझोतो। आतममें परमातमको अब देखके दर्शनमेलाकर। दुईदूर कर हमेशा निर्भयपदमें खेलाकर ३ एक ब्रह्म और द्वि-

तीयोनास्ति यही वेदकी बानीहै। इसकोसमझै वहीनर जो पूरा बिज्ञानी है। जैसे जलकी तरंग फिर जलहीके बीच समानीहै। कहैंदेवीसिंह बात यहबनारसीने जानी है। छोड़तुर्रे कलँगी का गाना निर्गुणके डँड़ पेलाकर। दुई दूरकर हमेशा निर्भयपदमें खेलाकर ४॥

संतखेलते होली जिस में इज्ज़त हुरमत लाजरहे। गुणीजनों के अगाड़ी अनहदबाजे बाजरहे। ज्ञानगुलाल केबादल छाये प्रेमरंगनितबर्षावें। ब्रह्मवादसोंलड़ें और भर्मधूलको उड़ावें। धीरजका डफ़बाजे संगमें नामनारायणकागावें। क्रोध कुम्कुमा मारके कामशत्रुको हटावें। दयाकी दौलतदेते सबको साथमें सबीसमाजरहे। गुणी जनों के अगाड़ी अनहदबाजे बाजरहे १ अमर अबीर को साधुलगाये मुक्तरूप पहिनेमाला। भस्मके भूषण झलकते तनपर मन में उजियाला। मंत्र मिठाई संत पावते बहुतखूब सबसे आला। अमृतरसको पियैं और खोलदेइँ घटका ताला। नेहनाचको देखैंहरिजन सत्य साजको साजरहे। गुणीजनोंके अगाड़ी अनहद बाजे बाजरहे २ लौकीलकड़ी लूटले आप आतमकीअगनी। हरहर होली जगावें वहीनहीं जनमेमरते। बिज्ञान की गाली देतेहैं सन्तकिसीसे नहिंडरते। कष्टके कपड़े पहिन के कायाको निर्मल करते। शीलसितार सुनावैंसाधू नाम नक्कारे गाजरहे। गुणीजनोंके अगाड़ी अनहदबाजेबाज रहे ३ रामनामका शोरचलावें परस्वारथकी पिचकारी। जिसकोमारें उसीकेमुखपर लगती है प्यारी। मिलैंगले गोविन्दसेचलके जापजपैं गिरिवरधारी। भावभोगको

करै हैं वही यती वही ब्रह्मचारी। शुद्ध सिंहासनपर चढ़ बैठे तीनलोकमें राजरहे। गुणीजनों के अगाड़ी अनहद बाजे बाजरहे ४ तीरथकी फेरी फिरते हैं सुमत समग्री लेजाते। पूजैंहोली गुणीजन ब्रह्मज्ञानमें मदमाते। देवी सिंह योंकहैं कि ऐसी होली जो कोई गाते। भवसागर के पारहो परमधाम पदवीपाते। बनारसी ने हरिको पाया किसीके नहिं मुहताजरहे। गुणीजनों के अगाड़ी अनहद बाजे बाजरहे ५ ॥

इसतनमें आतमाकृष्णहै और गोपी ग्वालोंकादल। सुनो कानदे बनाहै तन में मेरे रहसमंडल। विश्वकर्मा ने आज्ञापाके शीशमहलतय्यारकिया। अनहदबाजोंका उसमें संपूरण बिस्तार किया। चारों खम्भे लगाये उसमें ऐसासुन्दर कारकिया। खुशीहुये हम तो अपने रहसका वहीं बिचार किया। सबको साथले आया मैं दिखलाया उन्हें भवनउज्ज्वल। सुनोकानदेबनाहै तनमें मेरेरहस मंडल १ मनऊधवजी मित्रहमारे सदासेहैं आज्ञाकारी। बुद्धि राधिका सो मेरेप्राणोंकोहै अतिप्यारी। नेत्र करण मुख दंत कण्ठ सबसखा हमारे हितकारी। लगनहै ललिता बहुतसुन्दर शोभाहै सबसे न्यारी। बलहै सोबल-भद्रहमारे भ्राताजिनका अटूटबल। सुनोकानदे बनाहै तनमें मेरे रहसमंडल २ हज़ार इक्कीस छःसै श्वासा सो सबसखियां सँग आईं। वोतोसमझोहमींथे कृष्णहमारे हैं साईं। गलेसेमेरे लपटलपट क्याक्याही तान सुँदर गाईं। बजाईबंशी जो मैंने अनहद तोसब बिलमाईं। प्रेम में मगनभईं ब्रजबनिता कामनेकिया बहुतबे कल। सुनो

कानदे बनाहै तनमें मेरे रहसमंडल ३ नौनारीथीं पति-
व्रता सोभीसबआईं पासमेरे। रोमरोमको सखासमझो
या समझो दासमेरे। मेरीलीला देखदेख नहीं होते मित्र
उदासमेरे। बर्णन करते हैं गुणको जगत में वेदव्यास
मेरे। मैंतोहूं आतमाकृष्ण यह शरीरमेराहै मंडल। सुनो
कानदे बनाहैतनमें मेरे रहसमंडल ४ आये वहांगोपिका
बनके ज्ञानरूपधर गोपेश्वर। हमने उनको लखाये गोपी
नहीं हैं शिवशंकर। पूजन करके पास बिठाया रहस
दिखाया अतिसुन्दर। कहांलग बरणनकरूं इस काया
में है चराअचर। बनारसी सच्चिदानन्द चैतन्यरूप नि-
र्गुणनिर्मल। सुनोकानदेबनाहैतनमें मेरेरहसमंडल ५॥

पूरेजौहरी संतपरखते मनमेंमणि और लालरतन्।
हितकाहीरा खरीदें जिसका नहीं कुछमोल वजन्। ब्रह्म
बजार लगाया घटमें कृपाकमरबाँधी कसके। सांचेजौ-
हरी साधुसंत गुरु सबजा साधैं हँस हँसके। ज्ञान की
गठरी लगी फेंटमें जरानहीं नीचेखसके। करते सौदा
सदा वो दया दुकानों पर बसके। लगनकी लड़ियां ल-
टकें जिसमें मुक्तारूपमोतीलटकन्। हितकाहीराखरीदें
जिसका कुछनहीं मोलवजन् १ चतुराईकी चुन्नी ले
आपसमें सबको दिखलाते। मेल का मूँगा खरीदें हर
भक्तोंसे मिलजाते। दिनपर दिनहो मोल सवाया कभी
नहीं घाटा खाते। साँचे जौहरीके आगे सभी जवाहिर
शर्माते। तपकरनेका लियातामड़ा पासमेंरक्खाकरके
यतन्। हितकाहीरा खरीदें जिसकानहीं कुछ मोल व-
जन् २ यश करनेका जामा पहना घरसे निकल बाहर

आये। बड़ीदूरपर जायकर अक्कीक़ हिकमतका लाये। पुण्य पापसे न्यारेहोके लाखों पारस बनाये। फनेनाम के फ़िरोजे हरभक्तोंके मनभाये। मनका मनका फेरंमन में श्याम श्याम करके सुमिरनू। हितका हीरा खरीदें जिसका नहीं कुछ मोल वजनू ३ हमने अब इस दिल को जौहर किया है येहै सचादाना। वही जौहरी कि जिसने अपने दिलको पहिंचाना। इसके बीचमें सबकी खानिहै मुल्क मुल्कका खज्जाना। कहैं देवीसिंह वोही मालिक जिसका कुलजम्माना। बनारसीने दिलपरखा कईलाख वर्ज़के लगायेघनू। हितकाहीरा खरीदें जिस का नहीं कुछ मोल वजनू ४ ॥

योगी होय जो सकलमें बैठे देखै दशवें द्वारको वो। कारज करै जगत्के सब और लखै अलख कर्त्तारको वो। नाचैगावै गालबजावै ध्यान आत्मामें धरके। सबमें रहै और सबमें न्यारा पूरणहोय योग करके। निर्भयहोके बिचरे निशिदिन कबहूंनहीं चले डरके। अपने आपमें आपकोदेखे धन्यभाग हैं वा नरके। जबवहकायात्यागे तब फेर पहुँचे परलेपारको वो। कारजकरै जगत्के सब और लखे अलख कर्त्तारको वो १ प्रसन्न चित औ बुद्धी निर्मल कर्म अकर्म न कुछ जाने। द्वैतभावसे अलगरहे अद्वैतज्ञानको बखाने। समदर्शी औ शुद्धसमाधी अपने को आपीमाने। जीव ब्रह्ममें एक भावकर अपने मनमें पहिंचाने। भूमीभार उतारन कारन धरे आप अवतार को वो। कारजकरै जगत्केसब औरलखेअलखकर्त्तारको वो २ त्रैगुणकोजीते औ चौथेपदपर अपनीकरैमती। सं-

पूर्णसृष्टिको भोगजो करै वोहीहोवे बालयती। चराचरमें अपने आपकोदेखै सबसे उसकी होय गती। आपीपिता और आपी पुत्रहै आपीस्त्री आपपती। चाहेकरैवहप्रलय और चाहेरचे सकल संसारको वह। कारजकरै जगत्के सब और लखेअलखकर्त्तारको वह ३ पुण्यपापसे अलग रहे दुखसुखकानहीं विचारकरै। ब्रह्मज्ञानकीचर्चा अपने मुखसे बारंबारकरै। आत्मदर्शीहोयतो अपने सबकुलका उद्धारकरै। बनारसीयेकहैं वह जो चाहे सो आपकर्त्तार करै। चाहेकरे वहनरपैदा और चाहेबनाये नारिकोवह। कारजकरैजगत्केसब औरलखैअलखकर्त्तारकोवह ४॥

कालबलीसे लड़के कुश्ती जीते जगत्में साधूसन्त। उनके दांवका किसीने आजतलक नहिंपायाअन्त। बांध लँगोटाबनेजितेन्द्रिय कभीनदेखेंपरनारी। गमकेभोजन करें जब चढ़ैबदनपर तैयारी। कामक्रोध मद लोभ मोह इन पांचोंकी कुश्ती भारी। कालके ऊपर जायके बांधी अपनी असवारी। मनकोकियामुरीद पेंच बतलाये उसके तईंअनन्त। उनकेदांवकाकिसीने आजतलक नहिंपाया अन्त १ रामनामकी कसरतसे जबहुआ बदन में ज़ोर बड़ा। उदय अस्ततक हुआ उनकी कुश्तीकाज़ोरबड़ा। पहलवानहै वहीजगत्में जोकोइहै गमखोरबड़ा। उसके सानी कोईनहींहुआ कहीं शहज़ोरबड़ा। लोगलड़ें दुनियांमें कुश्ती कालको जीतें सन्ततुरन्त। उनके दांवका किसीने आजतलक नहिं पायाअन्त २ जो कोइ उनसे दस्तमिलावे उसके हाथमें यशहोजाय। कभी न पछड़े जगत्में मौतभी उसके बशहोजाय। कालफांससेबचैवह

जिसकी रसनामें हरिरसहोजाय। कपटकीकैंची तजैतौ पहलवान चौरसहोजाय। वह नहिंगिरै किसीके गिराये जो सद्गुरुकी पढ़ैपढ़न्त। उनकेदांवका किसीने आजतलकनाहिंपायाअन्त ३ हतकोड़ागल लपेटकुश्ती औरपेंच सब झूंठेखेल। इन्हैं छोड़के तू भज हरनाम और दंड निर्गुणकेपेल। शीलसत्यका बांधसींगड़ा जो गुज़रै वह दिलपरखेल। कहैंदेवीसिंह अरेनरमूढ़ तू करसद्गुरुसे मेल। बनारसी सन्तोंका सेवक कहैबात जो होवै तन्त। उनकेदांवका किसीने आजतलक नहिं पायाअन्त ४॥

हिरदयमें हरिहर हीरामन परखैं जौहरी संतरतन्। प्रीतिकापारस पासमें अलखलालका करें भजन्। बोध के बस्तर पहनें तनपर नयेनये सजके भूषन्। यशका जामा पहरके कुंजकुंजमें फिरें मगन्। पुण्यपोटकी फेंट लगाई वासारखते तेरीपवन्। तेजतत्त्वकातामड़ा झलके जैसे दिव्यअगन्। मुक्तकीमाला अमोलदाने परमहंस पहिरे सज्जन्। प्रीतिका पारस पास में अलखलाल का करें भजन् १ जपताहूंमैं नाम उसीका सत्यशब्दकी गहिसुमिरन्। सादादिलथाखरीदा सद्गुरु सबजाशुद्ध बरन्। तुरियापदकी पायतुरमुली श्यामा श्याम के गहे चरन्। लगन लाड़िली मिलिगये मोरमुकुटवाले की शरन्। लौकालाल लसुनियांपाया कहाये हमने सत्य बचन्। प्रीतिकापारसपासमें अलखलालका करें भजन् २ हरीनामका अक़ीक़ इसका बयान करना बहुत कठिन्। बुरेकामसे बाज़ आगमन रूपमूंगेको पहिन्। ऐसा रस मतछोड़ो साधो राधावर हैं शिरे रतन्। मती बिसारो

नाम शुभ लक्षण का पहिरो लटकन्। जुम्बिश नहीं खातेहैं संतचित्त चुन्नीको करके धारन्। प्रीतिकापारस पासमें अलखलालका करें भजन् ३ परमारथका पहिन केपन्ना जीतिलिये अबतीनोंपन्। कोईलवायकनअबना मेरातोहै वहीवतन्। कहूंमार अपने मनको अब पहिन ज़मुर्रद जसजीवन्। देवीसिंह येकहैं कहूं ख्यालदुमानी नयाचलन्। मैंने तो अबलखाहैमनमें मुक्तरूपमोतीभग-वन्। प्रीतिकापारसपासमें अलखलालकाकरैंभजन् ४ ॥

त्रैलोकी है जिह्वापर अब और किसीसे कामनहीं। कोटिजन्मतक कभीजोभूलै शिवकानामनहीं। इस जि-ह्वापर गंगा यमुना सरस्वतीकीहै धारा। इस जिह्वापर रचाया तीनलोकका पसारा। ब्रह्मा विष्णु महेशने अब जिह्वापर आसनमारा। चांद और सूरजरहैं इस जिह्वा पर नवलख तारा। नारायण गोविन्दशब्द जिसने जि-ह्वासेउच्चारा। उसीकेताईं हुआमालूम हालघटकासारा। चारधामहैं इसजिह्वापर जिह्वासाकोईधामनहीं। कोटि जन्मतककभी जो भूलै शिवका नामनहीं १ हीरे मोतीला-ल औ पारस जिह्वापर अकसीरबसे। दई देवते इसी जिह्वापर पांचों पीरबसे। नौनाथ चौरासी सिद्ध जिह्वा पर इसमें बावन बीरबसे। ऋषीमुनी सब इसजिह्वामें साधु फ़क़ीरबसे। भरत शत्रुहन हनूमानजी जिह्वामें रघुवीरबसे। समुद्रसातों इसीजिह्वापर अमृतनीरबसे। रामचन्द्र हैं इस जिह्वापर और कहीं आरामनहीं। कोटि जन्मतक कभी जो भूलै शिवकानाम नहीं २ चारवेदषट् शास्त्र अठारहपुराण जिह्वाके भीतर। सातद्वीप हैं औ

चौदह भुवन रत्न चौदह सुन्दर। जब जिह्वासे कहा तो आई श्रीगंगारहदासके घर। अजामीलनेकहानारायण मुखसे गया बोतर। और कहीं कछु नहीं है प्यारे जो कुछहै सो जिह्वापर। इस जिह्वापर गायत्री पार्वती शङ्कर हरहर। आठयामहैं इस जिह्वापर जिह्वासा कोई यामनहीं। कोटिजन्मतकभीजोभूले हरकानामनहीं ३ श्रीकृष्णने इस जिह्वापर तीनलोकको दिखलाया। देख के अर्जुन रूपको अपने मनमें घबराया। हाथबांधिके अस्तुतिकरता सबकुछहै तेरीमाया। अभेदहै तू तेरातो भेदकिसीने नहिंपाया। जोकोइपूछै भेद किसी का उसे भेदकुछनाहिंआया। कहैदेवीसिंह ज्ञानबिज्ञान मेरेमनमें भाया। बनारसीकहै रामरामरट भूलसुबह और शाम नहीं। कोटिजन्मतकभीजोभूलै शिवकानामनहीं ४॥

श्रीकृष्ण गोपाल गोकुलानन्द गुरू गिरिवरधारी। गोधी गोचर ज्ञानबिज्ञान आतमा अवतारी। पूरणब्रह्म अखण्ड सच्चिदानन्द सदा आनन्दकरें। कालको जीतें और जंजालपाप सब बन्दकरें। दुष्टोंको हनहनके मारें राक्षसकी मतिमन्दकरें। भावभक्तको देयँ और संतोंको निर्द्वन्दकरें। वेदशास्त्र गीताको गावें और नये नये छन्द करें। मुखपर मुरली बजावें अस्तुतिउनकीनन्दकरें। मातु यशोदा करें आरती ध्यानधरें नितत्रिपुरारी। गोधीगोचर ज्ञानबिज्ञान आतमा अवतारी १ मोरमुकुट मकराकृत कुण्डल कण्ठ कौस्तुभमणी लसे। उरमें मुक्तामाल और कटिपीताम्बर पीतकसे। श्यामगात छबि स्वरूप सुन्दर सन्तों के हिरदयमें बसे। चरणमें झलके व सुंदर

पद्मपद्मिनी देखहँसे। सबदुखदूरहोयँ उनके जो हरिकी भक्तीमाहिंधसे। गोविंद गोविंदकहै जो उन्हें न काला कालडसे। परमहंस सबकरैंअस्तुती ब्रह्मब्रह्मकहै ब्रह्म-चारी। गोधी गोचर ज्ञानविज्ञान आत्मा अवतारी २ नारायण वोही सत्यनारायण अनेकरूप अनन्तनयन्। मोहनीमूरतिमोहेमनको हँसिबोलेमधुरबयन्। शेषनाग की शय्यापर करें क्षीरसिंधुमें हरीशयन्। ब्रजमें प्रकटे चराई नंदबाबाकीकामधयन्। वृन्दाबन में रहसरचाया उजियाली खिलरही रयन्। सब सखियनको साथले उनके संग में करेंचयन्। जितनी ग्वालिनखड़ीरहसमें उतनेहि बनगये बनवारी। गोधी गोचर ज्ञानविज्ञान आत्मा अवतारी ३ मीन कूर्म बाराहकहीं नरसिंहरूप हरिनेधारा। बामनबनके छलाबलि इन्द्रको राज्यदिया सारा। परशुरामहोक्षत्रियजीते सहस्रबाहुको संहारा। रामरूपधरिछेदरावण को एकपलमें मारा। कृष्णरूप सोलहोंकलाबन पण्डोंकाकिया निस्तारा। बनाई गीता इसीसे दुर्योधनका दलहारा। बौद्धरूपधर बने हैं बौद्ध निष्कलंककीतय्यारी। गोधी गोचर ज्ञानविज्ञान आत्मा अवतारी ४ अपारमायाअलखलखीनहीं जायकृष्णअ-वतारकी। कवीकथाबर्णनकरे जोमहिमाबनीमुरारीकी। सहस्रमुखसेरटैंशेष नहींपावैंथाह बिहारीकी। बालरूप धरि कामना बसुदेवकी सारीकी। रखीदेवकीकी लज्जा कंसाको मार बहुभारी की। कहै देवीसिंहप्रभू अबहमने शरणतुम्हारीकी। बनारसी जैजै करता ब्रह्माने अस्तुति उच्चारी। गोधीगोचर ज्ञानविज्ञान आत्मा अवतारी ५॥

विश्वरूप खिलरहा बागमें जिसमें आदमकी गुल-जारी। रंगरंगके फूलहैं तरह तरहकी फुलवारी। पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण ये चारोंदीवारबनी। हरएकतरफ़ से नदियों की छूटी हैं जो नहरघनी। सातसिंधु सोई तालाब सातों सबका मालिक वही धनी। चाहे बनावे चाहे एकपलमें करदे फ़नाफ़नी। विश्वबागका मालिक है वही श्रीकृष्ण गिरिवरधारी। रंगरंगके फूल हैं तरह तरहकी फुलवारी १ नवखण्डोंके महलबनाये दशोंदिशा के दशद्वारे। त्यारकियेहैं बागमें चौदहभुवन न्यारेन्यारे। आसमानकी छत्तलगाई जिसमें जड़ादियेहैं तारे। गर-जगरज घनकरें छिड़काव छोड़ते फव्वारे। चांद और सूरज चारोंतरफ़की करतेहैं चौकीदारी। रंगरंगके फूल हैं तरहतरहकी फुलवारी २ चमत्कारका चमनूलगाया परब्रह्म ने आपहि आप। हरजर्रें में झलकता हरशय में वही रहाहै व्याप। इसीबागके भीतरबैठे ऋषीमुनी सब करते जाप। कोई गावते भजन और कोईरहे पंच-ग्नीताप। साधुसन्त करैं सैर बाग में परमहंस और ब्रह्मचारी। रंगरंगके फूल हैं तरह तरहकी फुलवारी ३ तोते मैनाखालहंससब सैरबागकी करते हैं। जो नर हरहर रटैं वह नहिं जन्मैं नहिं मरते हैं। देवीसिंह ये कहैं ध्यान जो उस मालिकका धरते हैं। भवसागर के पार वह सहजहि जाय उतरते हैं। बागजहांके बीचमें उसके क़ुदरतकी फैली क्यारी। रंगरंगके फूलहैं तरह तरहकी फुलवारी ४॥

यह कायाहै कल्पवृक्ष तीनोंगुणकी तीनोंडाली। हर

एकफल है इसी में हरीनामकी हरियाली। प्रेमप्रीतिके पत्रलगे और परस्वारथके फूले फूल। उन फूलों में कोई नहीं कांटा है और कोई न शूल। शीलसत्यकी शाखाहै आनन्दरूप कहैं जिसका मूल। मोरहंससब और तोते मैना उसमें रहे हैं भूल। कल्पवृक्ष कायाको सींचे निराकार निर्गुणमाली। हरएक फल हैं इसी में हरीनाम की हरियाली १ समदृष्टीकी सुगंध सुंदर परमतत्त्वकी चलें पवन। क्षमाकी छायामें बैठे सन्त हरीका करैं भजन। छबिरूपी है डालवृक्षमें बैठे बोले हीरामन। ब्रह्मवीर्य से हुआ उतपत्तिकिया यह सत्यमथन। सबशाखाहैंभरी फूलसे कोईडाल नहीं है खाली। हरएकफलहैं इसीमें हरीनामकी हरियाली २ सरजीवन जलभरावृक्षमें हरीहरी कर हुआहरा। नखसे शिखलों वृक्षयह भावभक्तिसे रहे भरा। कल्पवृक्ष काया में बैठ के जिसने उसका भजन करा। अजर अमर वह हुआ और भवसागरमें सहज तरा। रंगरंगके बनेजाल और तरह तरहकी है जाली। हरएक फलहैं इसी में हरीनामकी हरियाली ३ मुक्तरूप फल लगे वृक्ष में भजनकरै सोई पावे। जन्म मरण से होवे वह रहित नहीं आवेजावे। रामरामरसभरा फलों में जोकि राम सों लवलावे। कहैं देवीसिंह होय वह अमर नहीं मरनेपावे। कल्पवृक्ष कायाका है वह निराकार निर्गुणमाली। हरएक फलहैं इसी में हरीनाम की हरियाली ४॥

अमरनाथने अमर कथा जबकही सुनैथी पार्वती। उत्तराखण्डमें लगाआसन बैठेकैलासपती। अविनाशी

कैलासी काशी उत्तराखण्डमें बसाई। बैठ गुफामें गौरि को अमरकथा जब सुनाई। अमृतबाणी सुनी उमा के नेत्रमें निद्रा भरिआई। वही कथा फिर एक तोते के बच्चे ने सुनिपाई। दिया हुँकारा शिवजी को शिव कहैं अर्थ कर समुझाई। सुआ सुनेथा औ वहीं सोती थीं गौरा माई। परब्रह्मका खेल हुआ पर उस तोतेकी बढ़ी रती। उत्तराखण्डमें लगा आसन बैठे कैलासपती १ हुई कथा सम्पूरण शिवने पार्वती को बोलाया। उठी गौरजा कह शिव मैंने कुछ नहिं सुनिपाया। फिर शिवजीने कहा हुँकारा किसने मुझको सूनाया। और तीसरा यहां पर कौन विधी करके आया। चढ़ा क्रोध शिवशङ्करको करसे त्रिशूलको उठाया। उसीवक्त फिर वह तोतेका बच्चा उठके धाया। दौड़े शिव उसके पीछे वह निकलगया कर सुमत मती। उत्तराखण्डमेंलगा आसनबैठकैलासपती २ तीन लोकमें उड़ा वह तोता कहीं मिला नहिं ठीकाना। उड़ते उड़ते बहुतसा अपने मनमें घबराना। पतिव्रता थीं खड़ी करे स्नान उसीको पहिंचाना। दौड़के तोता जाय फिर उसके मुखमें सामाना। वहां किसी का ज़ोर चले नहीं क्योंकर हो उसका पाना। फिर शिवजी ने दिया वरदान कहा यह है स्याना। वही हुये शुकदेव व्यास के पुत्रबड़े भये यती सती। उत्तराखण्डमें लगा आसन बैठे कैलासपती ३ अमरकथाका बड़ा महातम है जो कोई सुनने जावे। श्रवण कियेसे होय वह अमर नहीं मरने पावे। चारवेद षट्शास्त्र अठारहपुराण सबइसमेंआवें। अमरकथा को आप शुकदेव सदा मुखसे गावें। वह प-

ण्डितहैं बड़े कि जो कोई अमरकथाको सूनावें। और दूसरे बोल नहीं कछु मेरे मनमें भावें।जिस दिन शिवने कही कथा कौन बार तिथि कौन हती। उत्तराखण्ड में लगा आसन बैठे कैलासपती ४॥

योगी साधैं योग योगमें कायाको है खेद बड़ा। हमने जाना योगसे वियोगका है भेद बड़ा। योग किया रावण ने योगीबन सीतामाता हरलाया। रामचंन्द्र ने किया वियोग बड़ा एकयशपाया। योग किया हिरण्यकशिपु ने प्रह्लाद भक्तको डरपाया। वियोग करके बने नरसिंह दुष्टको गिराया। योग किया भस्मासुरने शिवशङ्करको अतिसत्ताया। वियोग करके विष्णुने उसे भस्मकर जलाया। योगी पढ़ते योगशास्त्र वियोगी का है बेद बड़ा। हमने जाना योगसे वियोगका है भेद बड़ा १ योगी बन के चला जलन्धर हरसे युद्ध कीना भारा। वियोग करके हरी ने छली जलन्धर की दारा। उसका योग घट गया पकड़के शिवने दुष्टको संहारा। इसीसे कहते योग से वियोग का रस्ता न्यारा। योग कियो कंसाने भाग श्रीकृष्णको बीचारा। वियोग करके कृष्णने केशपकड़ उसको मारा। योगी करते योग विधी से वियोगी का है निषेध बड़ा। हमने जाना योगसे वियोगकाहै भेदबड़ा २ योगकरनको श्रीकृष्णने सखियों को भेजी पाती। कहती सखियां ऊधो यह बात नहीं मनमें भाती। योगी धारैं भस्म हमने वियोगमें जाली छाती। योगी मदको पीवें हम वियोगमें हैं मदमाती। योगी बांधैं सेहली हमने वियोगकी बांधी गाती। जायके ऊधो कृष्णसे कहो

यह सखियां समझाती। वियोगी बेधे हीया योगी तो कानमें करते छेद बड़ा। हमने जाना योगसे वियोगका है भेद बड़ा ३ योगीकहते ज्ञान वियोगी फिरैं इश्क़में दीवाने। वियोग जिसको नहीं वह योगक रस्ता क्या जाने। योगी तो जंगल में बैठे चढ़ावते अपना प्राने। वियोग करके वियोगी घटमें आतम पहिंचाने। योगी के शिर जटा वियोगी शिर से परे हैं मस्ताने। कहैं देवीसिंह योगी से वियोगी हैंगे सय्याने। बनारसी ने वियोग साधा योगमें देखा खेद बड़ा। हमने जाना योगसे वियोगका है भेद बड़ा ४॥

ब्रह्मारचते सृष्टि पालना विष्णु करें शिवसंहारें। धन्य धन्य श्रीगंगाजी जो अधमपापियों को तारैं। गणेशजी विद्याका बरदें बुद्धबुद्धिका दानकरैं। सूर्यतेज देवें शरीर में जग में सब सन्मान करैं। शीतलताई देवें चन्द्रमा सतगुण को परधानकरैं। हनूमानजी चाहें तो एक पल भरमें बलवानकरैं। भैरोंजी भयहरैं डरें नाहिं दुर्जन को पलमें मारैं। धन्य धन्य श्रीगंगाजी जो अधम पापियों को तारैं १ इन्द्रका सुमिरन करे तो पावे सुन्दरसी अबलनारी। दुर्वासाजी पवनअहारी कामी को करें ब्रह्मचारी। कुबेरके हैं भक्त जो वह तो बड़े बड़े मायाधारी। धर्म्मराजजी धर्म्मबतावें जो हैं उनके हितकारी। शेषजी अपनेसहस्रमुखसे नयेनाम नितउच्चारैं। धन्य धन्य श्रीगंगाजी जो अधम पापियोंको तारैं २ तनुकारोगदूर करदेते बड़े बैद्य अश्विनीकुमार। वेदव्यास पुराण के मुनिहैं वेदका निशि दिनकरें बिचार। बालपने से त्याग

बतावें सनकसनन्दन सनत्कुमार। करो शनैश्चर की पूजन तो सकल विपदको देवेंटार। जितने देवतेहैंगे सो तो गुरूवृहस्पति को धारैं। धन्य धन्य श्रीगंगाजी जो अधम पापियों को तारैं ३ तेंतीसकोटि देवते सब अपना अपना देते हैं फल। अतिप्रसन्न होते हैं उनपै जब चढ़ता है गंगाजल। देवीसिंह यह कहै न भूलूं मैं श्री गंगाको यकपल। सब से ऊंचे शिवजी उनके शीशके ऊपरगंगअचल। बनारसी के अधमपापको धोवैंगंगाकी धारैं। धन्यधन्यश्रीगंगाजीजोअधमपापियोंकोतारैं ४॥

पापी एक मरा गंगापर हुई वह उसकी तय्यारी। महिमासुनो कानदै जैसी निकली वाकी असवारी। आयो कंचन को विमान सुन्दर और वामें रत्नजड़े। ब्रह्मा विष्णु महेश शेष सनकादिक सब लेनेको खड़े। उधरसे आये यमकेदूत वह लेलेहाथमें शस्त्रबड़े। देखतेही दल श्रीगंगाका भागे यमके पांवपड़े। वह जो पापीथा सो तो तनुत्यागके बनगया त्रिपुरारी। महिमा सुनो कानदै जैसी निकली वाकी असवारी १ अद्भुतभूषण कुबेरजी झटपटसे आपी ले आये। पीतवस्त्र नखशिखलौं उत्तम उसके तनुमें पहिराये। चोवाचन्दन इतरअरगजा सभी देवते लेधाये। पत्र पुष्पसे पूजनकरकर मगनभये मङ्गल गाये। तीनलोक चौदहोंभुवनकी पाई उसने सरदारी। महिमासुनो कानदै जैसी निकली वाकी असवारी २ मोरमुकुट मकराकृत कुण्डल गले में बैजयंतीमाला। शीशछत्रसुवरणका झूमै जयजयशब्दकीध्वनिआला। कंठ कौस्तुभमणी हार गजमुक्ताका उरमेंडाला। बाजूबंद

नौरतन और करमें कंगनका उजियाला। भरे अटलभं-
डार उसे गङ्गाने मायादीसारी। महिमासुनो कानदै जैसी
निकली वाकीअसवारी३ जब वो बैठा विमान में तो ब्रह्मा
जी मुरछललाये। इन्द्रडुलावें पंखा सब देवतोंने पुष्प अ-
तिबरसाये। शिव और विष्णुने करी शङ्खध्वनि ऐसे फल
उसनेपाये। धन्यभाग्यहैं उनके जो कलिकालमें गङ्गाजी
न्हाये। करैंनृत्यगंधर्व सकलमिलि बाजे बजनलगे भारी।
महिमासुनो कानदै जैसी निकली वाकी असवारी ४ अ-
ष्टसिद्धि नौनिद्धि सभी करजोरिजोरि आईं आगे। जिन
त्यागे गङ्गाकेतीर तनु उनके भाग्य ऐसे जागे। जब वह
बैठा विमान तो बोले अनहद्के दगनेलागे। नन्दीगण
अरु गरुड़ सिंह गज विमानके नीचे लागे। और सकल
बाहन कांधा देनेलागे बारीबारी। महिमा सुनो कान दै
जैसी निकली वाकी असवारी ५ हनूमानजी खवास
बनगये भैरव बनगये अगवानी। गणेशजी डङ्काले आगे
चले महायोगी ध्यानी। छप्पनकोटि मेघने मिलके रस्ते
में छिड़का पानी। इन्द्र सूर्य्यने करी रोशनी सब देवतों
केमनमानी। तेंतीसकोटि फौजसब सँगमेंचली औ छबि
न्यारीन्यारी। महिमासुनो कानदै जैसी निकली वाकी
असवारी ६ जब वह पहुँचा अमरलोकपुर सब फिर आये
अपने धाम। मिली ज्योति में ज्योतिरूप है श्रीगङ्गाको
करो प्रणाम। याहीते मैं कहतजातहौं जपो सकल गङ्गा
को नाम। और कोऊ नाहिं अन्तसमयमें आवैगो अब
तुम्हरे काम। बनारसी यह कहैं कभी तो आवैगी मेरीबारी।
महिमा सुनो कानदै जैसी निकली वाकी असवारी ७॥

आजु युद्धकी करो तय्यारी श्रीगङ्गाजी तुममसे। मैं पापी तुम तारणहारी बनिहैं पाप बहुत हमसे। मेरो पाप है पहाड़केसम समरकरनमें बीरबड़ो। देखौं मैं अब आय के कैसोहैगो तुम्हरो तीरबड़ो। रणमें लड़ैं हटैंनहिं कबहूं मेरोपाप रणधीरबड़ो। तुमतो यही कहतहौ मुखसे मेरो रेणुका नीरबड़ो। देखौं उनको पुरुषारथ जो लड़िहैं आय मेरेतमसे। मैं पापी तुम तारणहारी बनिहैं पाप बहुत हम से १ जबसे जन्मभयो पृथ्वीपर कभी न हरको नाम लियो। सेवाकी नाहिं मातु पिताकी साधुनको नाहिं कामकियो। हरो बहुत धन ठगठगके नहीं हाथसे एकहु दामदियो। कियो बहुत बिषपान अमृतको भी एकहुयामपियो। कैसे बचिहौं कालसे मैं अब कौन छुटाइहै अबहिं यमसे। मैं पापी तुम तारणहारी बनिहैं पाप बहुत हमसे २ वेद पुराण बखानत निशिदिन अधम पापियोंको तारा। किया बहुत संग्राम कालसे और यमदूतोंको मारा। सुनीबात यह श्रवणसे मैंने किये पाप अपरम्पारा। करिहौं और बहुतसे अघ देखौं कैसेहो निस्तारा। अबतो यही लड़ाई ठानी है गंगाजी मैं तुमसे। मैं पापी तुम तारणहारी बनिहैं पापबहुतहमसे ३ अइहैं जबयमदूत लेनको बड़े बड़े योद्धा भारी। तबतुम मोहिंबचैहौ तो मैंजइहौंतुम्हरी बलिहारी। तुम्हरे गणहैं पुष्पलिये और यमके दूत शस्तरधारी। इसका उत्तरदेव कि सेना किसबिधिसे यमकी हारी। कहौ मुझे समुझायके झटपट छूटजाऊँ मैं इसभ्रमसे। मैं पापी तुम तारणहारी बनिहैं पाप बहुत हमसे ४ भगिहैं सब यमदूत बुलैहौं मैं तुमको भेजके विमान।

एकबिन्दु गंगाजलसे जलजायँ पाप नहिंरहैं निशान ।
कियेपाप देवीसिंह ने वह पापभी होगये पुण्यसमान ।
बारम्बार यह कहत जातहौ क्यों बनारसी तुम ममसे ।
मैं पापी तुम तारणहारी बनिहैं पाप बहुत हमसे ५ ॥

ब्रह्मा विष्णु महेश शेष सनकादिकने जदकिया भजन । तब आईं ब्रह्ममण्डलसे श्रीगंगाजी तारणतरन । ब्रह्मरूप निर्भय निर्वाणी अखण्डगंगाकी धारा । विष्णुजीसे ब्रह्माकेपास आईं तब शिवजीने धारा। जटाको उनके शोभादी और रूपभी सुन्दर सुधारा । आगे कहूँगा वृत्तान्त जिसबिधि तीनिलोकको उद्धारा। अस्तुतिकरके आप ईशने शीशचढ़ाई भयेमगन। तब आईंब्रह्ममण्डलसे श्रीगंगाजी तारण तरन १ भागीरथने करी तपस्या मगनभये शम्भूभोला। कहामांगु कुछ हमसे तब भागीरथ मुखसे यों बोला । गङ्गादेउनाथजी हमको शुद्धकरौं कुलकाचोला । तबफिर अपनीजटाको शिवने अपनेहाथनसेखोला। एकबूँदगङ्गाजलनिकला जटासे जबअति कियायतन। तब आईं ब्रह्ममण्डलमे श्रीगंगाजी तारण तरन २ एकबूँदकी तीनधारभईं धाराएकगई पाताल। शेषनागनेदर्शनपाये जीवन्मुक्तभयेसबब्याल। एकधार आकाशगई सबदेवते देखभयेखुशहाल । हाथजोरिदण्डवत्करी गंगाने उन्हें तारातत्काल । एकधार भागीरथलाये मृत्युलोक तारणकरन । तबआईं ब्रह्ममण्डलसे श्रीगंगाजी तारणतरन ३ मृत्युलोकमें चलींवेगते तब समुद्रने किया बिचार । हाथजोड़ गंगासे कहा तुम्हारे बलका नहिंवारापार । येमुझसे नहिंजाय सहारा बहुत

सिन्धुने कीपुकार। तबगंगाने प्रसन्न ह्वैकै धारा अपनी करीहज़ार। नामपड़ागङ्गासागर कहैं बनारसी नितकर दर्शन। तबआईब्रह्ममण्डलसे श्रीगङ्गाजीतारणतरन ४॥

और सकल देवतनसे फलजोमांगोगे तब पावोगे। बिनमांगेदेहैं गङ्गाजी जोएकबारतुमन्हावोगे। शिवजीकी जोकरोतपस्या मनमें ध्यानलगावोगे। और श्रीगङ्गाका जलजब उनके शीशचढ़ावोगे। बेलपत्रऔरआकधतूरा मन्दिरमें लेजावोगे। तब वह ह्वैहैं प्रसन्न जबतुम दोनों गालबजावोगे। वोकहिहैं कछुमांगो हमसे तबतुम उनसे माँगिकेलावोगे। बिनमांगेदेहैं गङ्गाजी जो एकबार तुम न्हावोगे १ ठाकुरद्वारे जायजाय जब विष्णुको शीश झु-कावोगे। पत्रपुष्पसे पूजनकरके मालाको पहिरावोगे। धूप दीप नैवेद्य लगाकर और विष्णुपद गावोगे। तब वह रीझेंगे तुम से जब उनको भजन सुनावोगे। वह कहिहैं कुछमांगो तुम हम से तब मांगोगे शर्म्मावोगे। बिनमांगे देहैं गंगाजी जोएकबार तुमन्हावोगे २ ब्रह्मा जीका सुमिरणकरके लाखों बरस बितावोगे। कन्दमूल फल खाय खाय के बहुतहि कष्ट उठावोगे। यह काया कञ्चनतन अपना इसको खूब सुखावोगे। तब वो दर्शन देहैं पइहौ फल जो कुछ तुम चाहोगे। वह कहिहैं कुछ हम से लो तब तुम करको फैलावोगे। बिन मांगे देहैं गङ्गाजी जो एकबार तुम न्हावोगे ३ करिहौ पृथ्वी प-रिकम्मा और चारों धाम फिरावोगे। जगन्नाथ और रामेश्वरमें जायके पांव थकावोगे। और द्वारकामें छापे खाखाकर बदन जलावोगे। जइहौ बद्री किदार तब तुम

क्योंकर शीत बचावोगे। वहां तो तुम आपही मांगिहौ मांगनमें बहुत लजावोगे। बिनमांगेदेहैंगंगाजी जोएक बार तुम न्हावोगे ४ और कहीं जो पापकर्म करिहौ तो पाप उठावोगे। गंगाजीमें देहभीधोयहौ तौभी नहिं पछि- तावोगे। लात लगाइयो फँदियो कूदियो बहुतहि धूम मचावोगे। तबभीमाताप्रसन्नहोयगी वाकेपुत्रकहावोगे। बनारसीकहैं अंतमें मुक्ती आपीसे तुम पावोगे। बिन मांगे देहैं गंगाजी जो एकबार तुम न्हावोगे ५ ॥

भोजनकर या भूखारहु या वस्त्रपहर या फिर नंगा। जौलौं जिये तू कहु इसमुखसे जयगंगा श्रीजयगंगा। नेम धर्म औ कर्म अकर्ममें योग भोगमें कहुगंगा। दुखमेंसुख में भलेबुरेमें रोग अरोगमें कहुगंगा। सोवतजागतराह बाटमें हर्ष शोक में कहुगंगा। मातु पिता दारा सुत बि- छुड़े तो वियोगमें कहुगंगा। धनदौलत या राजपाटहो या फिर बनजा भिखमंगा। जौलौं जिये तू कहु इसमुख से जयगंगा श्रीजयगंगा १ रोवत हँसत नगर अरु बन में जहांरहै तू कहु गंगा। सम्पत् विपत् कुपत और पत नर सबी सहै तू कहु गंगा। डूबत तिरत मरत या जी- वत मेरे कहे तू कहु गंगा। ये मनमूढ़ समझ अब झट मेरो मन कहे तू कहुगंगा। जो तेरे मन बसेकार यह लगे तेरे चितमें चंगा। जौलौं जिये तू कहु इसमुखसे जय गंगा श्रीजयगंगा। २ खेलत कूदत उछलत फांदत अ- पने मनमें कहुगंगा। बाल जवानी और बुढ़ापा तीनों पनमें कहुगंगा। नाचत गावत ताल बजावत हररागन में कहु गंगा। सातद्वीप नवखण्ड और चौदहभुवन में

कहुगंगा । अंधाहो या बहराहो या लूलाहो या इकटंगा । जौलौं जिये तू कहु इसमुखसे जयगंगा श्रीजयगंगा ३ घटीनफे में दिवसरात्रिमें आदि अन्तमें कहुगंगा । संग असंग और रंगकुरंग में साधु सन्त में कहुगंगा । चराचर चैतन्य औ जड़में तू अनन्तमें कहु गंगा । चाहे सब में बैठिके कहु चाहे एकान्तमें कहु गंगा । बनारसी ये कहैं चहै तू गरीबबन या करदंगा । जौलौंजिये तू कहु इस मुखसे जयगंगा श्रीजयगंगा ४ ॥

सागरकी गिनी जायँ लहर गिने जायँ तारे । नहीं जायँगिने श्रीगंगाजीके तारे । षट्शास्त्र गिनेजायँ गिने जायँसबनरनारी । दशदिशागिनीजायँ सृष्टिगिनीजायँ सारी । सिद्ध साधु गिनेजायँ गिनेजायँ आचारी । राजा रानी गिनेजायँ गिनीजाय खलक सरकारी । गिनेजायँ शाह शाहानी गिनेजायँ हलकारे । नहीं जायँ गिने श्री गंगाजीकेतारे १ गिनेजायँनदीनदसिंधुगिनेजायँनाले । गिनेजायँ श्वेतरंग लाल गिनेजायँकाले । दरख़्तडाली जायँगिनी गिनेजायँ डाले । छत्तीसरागिनी रागसकल गिनडाले । गिनते गिनते कई हज़ार शायर हारे । नहीं जायँ गिने श्रीगंगाजीके तारे २ खग चरन्द जाते गिने गिनेजायँ चातर । हरजात गिनीजायँ नगर गिने जायँ घरघर । काग़ज़स्याहीजायँ गिनी गिने जायँ अक्षर । सरदार गिनेजायँ गिनेजायँ सागरसर । क्याजाने गंगा ने कितने शठ निस्तारे । नहीं जायँ गिने श्रीगंगाजीके तारे ३ दिनरात गिनीजायँ गिनीजायँ तिथि घड़ी । शायरी गिनी जायँ गिनी जायँ छन्दकी लड़ी । शायर

कायर जायँ गिने गिनीजायँ कड़ी। जंगल खेड़ा जाय गिना गिनीजायँ जड़ी। यह सत्य सत्य छन्द काशी गिरिल्लकारे। नहीं जायँ गिने श्रीगङ्गाजी के तारे ४॥

अब विष्णुसे जाकर यमने यही पुकारा। गंगानेबंद करदिया नरकका द्वारा। लाखोंपापी पृथ्वीपै रोज मरते हैं। क्य कहूँमैं वह एकक्षणभरमें तरते हैं। मेरे भयसे भी ज़रा नहीं डरते हैं। गङ्गाके गण उनकी रक्षा करते हैं। बिन भजनकिये होता उनका निस्तारा। गङ्गाने बन्दकरादिया नरक काद्वारा १ हिन्दू या तुर्क या बेहना डोम कसाई। भंगी धोबी हड़फोड़ या होवे नाई। गंगाकी लहर जिसे दूरसे दी दिखलाई। फिर अंतसमयमें उसने मुक्तीपाई। दर्शन करतेही तरा महाहत्यारा। गंगाने बंद करदिया नरकका द्वारा २ जो मेरेदूत पापियोंको जायँ पकड़ने। तो गङ्गाके गण आवें उनसे लड़ने। वह देखदेख दूतों को लगे अकड़ने। और मारे बाण तनबीच लगे वह गड़ने। मैं लड़लड़ कई लाख लड़ाई हारा। गङ्गाने बंद करदिया नरकका द्वारा ३ गंगासे सौयोजनपर एक नगरथा। उस नगरमें एकपापीका ऊंचाघरथा। वह पाप कर्म्मकर करता रोज़गुजरथा। मरगया तो उसपर पड़ा एकबरुतरथा। गंगाकाधोया उसीने उसको तारा। गंगाने बन्द करादिया नरकका द्वारा ४ यह सुनी बात तब विष्णुजी यमसे बोले। गंगाकी महिमा कहांलों कोई खोले। इस नेत्रसे दर्शन श्रीगंगाके जोले। वैकुण्ठ में वह फिर झूले सदा हिंडोले। कुछ वश नहीं मेरा चले न चले तुम्हारा। गंगाने बन्दकरादिया नरकका द्वारा ५

जब मृत्युलोक से गंगा आय सिधरिहैं। तब वह पापी फिर कौनविधी करि तरिहैं। उसकाल में जो कोई पाप कर्मकरि मरिहैं। वह आन आनकर नरक तुम्हारो भरिहैं। यमराजजी अब थोड़े दिन करोगुज़ारा। गंगाने बंद करदिया नरक का द्वारा ६ यह सुनी बात यमराज नेघरफिरआये। कुछहँसे और कुछकुछ मनमें पछिताये। मनमारके यह गंगाको बचनसुनाये। अबतो तुम्हरेथोड़े दिनरहिनेपाये। कहेंबनारसी कुछयमकाचला न चारा। गंगाने बंदकरदिया नरकका द्वारा ७॥

जौलौं पृथ्वीपर है श्रीगंगाकीधारा। तौलौं यमराजा करिहैं कहा तुम्हारा। मतडरो कोई यमदूतसे मेरेभाई। रक्षाकरनेकोहै श्रीगंगा माई। जबसे शंकरने अपनेशीश चढ़ाई। तब ईश और जगदीशकी पदवीपाई। शिवबना वोही जिसने एक गोता मारा। तौलौं यमराजा करिहैं कहातुम्हारा १ कुछ जोर न यमकोचले पाप नहिं लागे। और कालभी देखै दूरसे तो वहभागे। जो गंगाके दर्शन कर कायात्यागे। वह अमरलोक पुरबसै अलखह्वैजागे। यह निश्चयकरके मानो बचन हमारा। तौलौं यमराजा करिहैं कहा तुम्हारा २ चाहे हो पुत्र कुपुत्र तो माता पाले। कुछकर्म्म अकर्म्म न उसके देखेभाले। जो एकबार प्राणी गंगा में न्हाले। वह जन्म जन्म के सकल पाप को टाले। है श्रीगंगाकी महिमा अपरम्पारा। तौलौं यमराजा करिहैं कहा तुम्हारा ३ मतचलो हमारे मित्र किसीसे डरके। निर्भयहो दर्शन श्रीगंगाके करके। कहैं देवीसिंह गंगा को ध्यान में धरके। जइहौं भवसागर

सहजहि आप उतरके। गंगाके बलसे दल सब यमका हारा। तौलौं यमराजा करिहैं कहा तुम्हारा ४॥

श्रीगंगाजी के तीर नीरपीनेको नाग इकआया। था बड़ा व विषधर नागभाग कुछ उसदिन वाके जागे। वह जलपीने जबलगा तो मेढ़क देखदेखकरभागे। इतने में आयेगरुड़ चोंचसेपकड़के खानेलागे। झटपटवाकोगये निगल प्राण तत्कालही उसने त्यागे। मरतेहि विष्णु तनधारा। चढ़िगरुड़पै यही पुकारा। तू बाहनहुआहमारा। धन धन गंगाको बिन्दु मुझे गोविन्दहि आप बनाया। श्रीगंगाजीकेतीर नीरपीनेको नागइकआया १ शिर मोरमुकुटकीलटक कानमें कुण्डल अधिक बिराजे। गलमें बैजयंतीमाल पीत पीताम्बर तनपरसाजे। वह शंखचक्र और गदापद्मकी सम्पूरण छबिछाजे। येचरित्र वाके देख देखके गरुड़जी मनमें लाजे। कुछ कहतनहीं बनिआवे। गंगा जो चाहै बनावे। चाहे शिवकारूप धरावे। हैमहिमा अपरम्पार नहिंसुरनरमुनिने पाया। श्री गंगाजी के तीर नीर पीनेको नाग इक आया २ तब श्री गंगाकी आप अस्तुति करी गरुड़ने मुखसे। हुई प्रसन्न गंगामातु तो बाणीबोली एक सन्मुखसे। थाबहुत कष्टमें नागछुड़ाया मैंने इसको दुखसे। अबतुमइसको बैकुण्ठ पहुँचाओ बसेजाय यह अति सुखसे। ये गरुड़ने आज्ञा मानी। गंगाकी महिमा जानी। तब उड़े बड़े बलवानी। एक पलमें पहुँचेजाय उसे बैकुण्ठ में तुरतबिठाया। श्री गंगाजी के तीर नीर पीनेको नाग इक आया ३ जो यह अस्तुति गंगाकी कानदेय सुनै और मुखसे गावे। वह

भुक्तिमुक्ति सम्पूर्णपदारथ मनमानेफलपावे। गंगासेपरे न और देव कोई मेरी दृष्टि में आवे। हैं धन धन वाके भाग जो दर्शनकरे और गंगान्हावे। कहैं देवीसिंहभजु गंगा। तब तेरा मन होवे चंगा। मन बनारसीने रंगा। गंगाजी में तन बोरबोर झकझोरके पापबहाया। श्रीगंगाजी के तीर नीर पीनेको नाग इकआया ४॥

हरेक ढूंढ़ने जंगलमें दवा रसायनकी बूटी। नारायण हैं सरजीवन भई वह बूटी हमने लूटी। कोईढूंढ़ता उस बूटी को जिसमें पारा तुरत मरे। कोई खोजताजड़ी को जो कोई तनकायाका दुःख हरे। बहुत लोग खोदैं पृथ्वी को वृक्ष काटने हरे भरे। उनको भी फिर यमकाटेगा कहैं शब्द ये खरेखरे। हरीहरी बूटी है समझो हरी नामहै सबसे परे। उस बूटीको जिसने पाया वह भवसागर सहज तरे। रामरसायन पाई हमने और रसायन सब छूटी। नारायण हैं सरजीवन भई वह बूटी हमने लूटी १ कोई कहै हम सिंगरफ़ मारें और काढ़ैं गन्धकका तेल। कोई देखते जड़ीब्राह्मी कोई कोई ढूंढ़ते अम्बर बेल। हमने सबको देखायारो येतो हैं सब झूठे खेल। अमर नामहै दत्त निरंजन उसको अपने मनमें मेल। मनको मारके बनाले कुश्ता जो गुजरे वह दिलपर झेल। तनको शोधके शुद्धकरो तुम तजो झूठ और तजो झमेल। जौन शख्स फूंके धातुको उनकेहियेकी हैं फूटी। नारायणहैं सरजीवन भई वह बूटी हमने लूटी २ कोई मारते अबरख तांबा कोईफूंकते हरताल। हमने अपने मनको मारा मिले हमें गोविन्द गोपाल। कोई कहैं हम

आँटीमारैं जिसमेंहो कुछ धन और माल। इन कर्मोंको जोई करता उसका होता हाल बिहाल। कोई कहै हम सोना मारें और करें पैसेको लाल। ठगठगके लूटैं दुनियाको उनको एकदिन ठगेगा काल। बहुत घोटते खरलमें धातू सन्तोंने कायाकूटी। नारायण हैं सरजीवन भई वह बूटी हमनेलूटी ३ कोई मारते हैं कलह को जिसमें होवे पुष्ट शरीर। घरको फूंकके तबाह किया वह अमीरसे होगये फक़ीर। साधूका नहिं धर्म्म जोनमारे धातू करके ततबीर। कहैं देवीसिंह हरी २ कहोजोजिह्वा हैगी अकसीर। खाकमारकी ज़बां रसायन इनमेंहै हर यक तासीर। ज़बांसे वह मुरदेको जिलादे ज़बांसे देडालें जहांगीर। बनारसी ये कहैं हमारी रामनाम हैगी घूटी। नारायणहैं सरजीवन भई वह बूटीहमने लूटी ४॥

बहुतदिनोंपर बिछीहै चौसरमें मलके खेलो यहचाल क्याहै। जो फेंकूँपांसातौ छूटैंछक्के नलो दमनकी मजाल क्याहै। मैंहूं जुवारी सुघर खिलारी हमेशह जीतूँ कभी न हारूं। सदा पड़ै पौदुई दूरहो चौरासी घरकी नरद मारूं। पड़े अगरचे जो तीनकाणे तौ अपने दिलमें मैंयह बिचारूं। ये तीनगुणहैं सबोंके तनमें मैं इनसे चलके अलग सिधारूं। हैं चारकोणे वह चौथापद है मिला अब हमको मलाल क्या है। जो फेंकूँ पांस तौ छूटैंछक्के नलोदमनकी मजाल क्या है १ है इसमें पँजड़ी सो पांचतत्त्व हैं मैं इनसे गोटी चला बचाइके। और फैंकूँ छकड़ी लेआऊं सत्ता सतको सतगुरुके पासजाके। हैंदावँ अठासी आठसिद्धि नवनिधिको मैं रक्खूँमनाके।

पड़े अगर छः चहार दशतो दशोद्वार देखूं दिल लगा के। न रंग अपनामैं किसी से मैं अब समझताहूँ काल क्याहै। जो फेंकूँ पांसे तौ छूटैंछक्के नलोदमनकी मज़ाल क्याहै २ आयें हमारे वह दशपौ ग्यारह सो ग्यारहों रुद्र हैं बदनमें। और बारहराशैं सो दोनों बारह समझ शोचकुछ तू अपने मनमें। बड़े हैं इनमें वहदोनों तेरह मैं तेरह २ कहूँहूँ मनमें। तू चौधरीहै जहां का मालिक नजरपड़ै चौदहों भुवनमें। करूं भजन मैं ये पन्द्रहोंदिन मायामोह का वह जालक्याहै। जो फेंकूँपांसे तो छूटैंछक्के नलो दमनकी मजाल क्याहै ३ है आतमा सोलहों कला ये सोपांसे मैं सोलहों बनाये। वह आये सत्रह ये सत्रहों अब हरीहरी हरिकेगुणगाये। पढ़े अठारह पुराण हमने औ अर्थ उसके ये दिलमें पाये। उठेरंग बदरंग भी उठगये वहसारी माया को जीतलाये। बनारसीका सदा बनारस बनाहुआहै वबाल क्याहै। जो फेंकूँपांसे तो छूटें छक्के नलो दमनकी मजाल क्याहै ४॥

लालला‍ल तन झलकत ललकत चलतदलतदल गर्जतघन। करतसकल जगहर्षकरै जयजय श्री अंजनी नन्दन। तारण तरण तरण तारण धरणी धारण हैं कष्ट दलन। रक्तरंग अंगजंगजद करत लगत संसारहलन। जल थल हल चल करत धरतजद चरण गर्जिकरजगतचलन। झल झल झलकत जलत गढ़लंक दैत्य शठलगत जलन। हतहत गतकरदेत शठनकी जड़त शस्त्रकाटतनसतन। करतसकलजगहर्षकर जयजयश्री अञ्जनीनन्दन १ गर्जत लर्जत धरतचरण जदहलत

धरणिडगडगकरनन। शेष थकत अतिछकत सतासिंधु देखि जिनके चरनन। हरीजरी नहीं देरकरी गिरिलाये सकलकर दियेजरनन। सेतुहेतुकर रचाया ऐसेहैं संकट हरनन। तनितनि हनिहनि रणदल छेदत राक्षसकीका-टतगरदन। करत सकल जग हर्षकर जयजय श्रीअं-जनीनन्दन २ करधर गदाचक्रकरगहिकर झट जलदी सेलेतजगन। कड़ कड़ कड़कर कड़कधरणिसे क्षणअन्दर चढ़िजातगगन। रण अन्दर धँसधँसकर कसकर जड़त गदाधर धरके लगन। हरेक अस्त्र अतिचलत शठदल के अन्दर लगत अगन। अस अस करत सकल नर यशाकर हरहर रटत हँसत हरजन। करत सकल जग हर्षकर जयजय श्रीअंजनीनन्दन ३ चढ़िचढ़िजातहाथ गिरिलेकर करके घात जद लगत अड़न। झट छत छोड़त हाथहठ नाथ ताकतके लगत जड़न। दरदश-रदकरदेत करदजद करसे गहिकर जात लड़न। असं-ख्य गर्जत शंख अनहद गतडंके लगत झलन। का-शीनन्द आनन्द छन्द कथ कहत अधर नितनई कथन। करत सकल जग हर्षकर जयजय श्रीअंजनीनन्दन ४॥

महावीरमस्तकंललित सिंदूरंकुम्कुम्अगरं। ज्ञान-वान अभिमान रहित निर अहंकार हरयोगी। इन्द्री-जीत कामिनी त्यागी नचकामी नचभोगी। रूपअनन्दं परमानन्दं। महावीर मस्तकं ललित सिंदूरं कुम्कुम् अगरं १ दशकन्धर अभिमान हनन लङ्कादाहन बज-रङ्गी। पूरण ब्रह्मअखण्ड सच्चिदानन्द साधु सतसङ्गी। नाम उचारत नितगोविन्दं। महावीर मस्तकं ललित

सिंदूरंकुम्कुम् अगरं २ रक्तंचीर गदाकर शोभित पुष्प माल उरधारन्। दानव दलनं हनन दुष्टदल सकलशत्रु संहारन्। शब्द ध्वनि गर्जत हरिहरी बम्बम्। महावीरमस्तकंललित सिन्दूरं कुम्कुम् अगरं ३ शिवशङ्कर सर्वज्ञस्वरूपं विश्वेश्वरसुविशालम्। परम वैष्णव शुद्ध आत्मा कालंकाल अकालम्। बहुविस्तारं मम किंवरणम्। महावीर मस्तकं ललितसिंदूरं कुम्कुम् अगरं ४ जटाजूट मकराकृत कुण्डल रत्न जटित अंगभूषण। पंचम मुख सुखदायक दाता देवपती निरदूषण। छन्द काशीगिर शास्तर कथितं। महावीर मस्तकंललित सिंदूरं कुम्कुम् अगरं ५ ॥

नन्दनँदन ब्रजराजकीछबि अब कोटिनभानु प्रकाश करें। उद्दितकरें चन्दकोटिन अरु कोटिन तमका नाश करें। कोटिन शीश नेत्र कोटिन अरु कोटिन कर्णहरीके हैं। कोटिन हैं नासिका हरीकी कोटिन बर्ण हरीके हैं। कोटिन मुख कोटिन जिह्वा कोटिनगति शरण हरीके हैं। कोटिन भुजा उदर कोटिन अरु कोटिन चरण हरीके हैं।

शेर कोटिन हरी के मुकुट हैं कोटिनहैं तिलकभाल।
कोटिन हरी के कण्ठहैं कोटिनहैं मुक्तमाल ॥
कोटिन मणी हरीकी हैं कोटिन हरी के लाल।
कोटिन हरीके भावहैं कोटिन हरी की चाल ॥

कोटिनपग पातालछुवे और कोटिन आश अकाश करें। उद्दितकरें चन्द्रकोटिन और कोटिन तमका नाश करें १ कोटिन कर्म हरीके हैं और कोटिन नाम हरीके हैं। कोटिन रूपहरीके हैं और कोटिन नाम हरी के हैं।

कोटिन ग्राम हरीकेहैं और कोटिनधाम हरीकेहैं। को-
टिन शैव हरीके हैं और कोटिन बाम हरीके हैं ॥

शेर कोटिन हरी के वेद हैं कोटिन हरी के मन्त्र ।
कोटिन हरी के शास्त्रहैं कोटिन हरी के तन्त्र ॥
कोटिन हरी की पूजाहैं कोटिन हरी के यन्त्र ।
कोटिन से हरी अन्तहैं कोटिन से हैं निरन्त्र ॥

कोटिनको सुखदेयँ हरी कोटिनके मनमें त्रासकरें।
उद्दितकरें चन्द्रकोटिन और कोटिन तमका नाशकरें २
कोटिन इन्द्र हरीके हैं और कोटिन राज हरीके हैं।
कोटिनहैं गन्धर्व हरीके कोटिन साज हरीके हैं। कोटिन
माया हरीकी हैं कोटीन समाज हरीके हैं। कोटिन मित्र
हरीके हैं कोटिन मुहताज हरीके हैं ॥

शेर कोटिन हरीके गजहैं और कोटिन खडे तुरङ्ग ।
कोटिन हरी के रथहैं और कोटिनहैं रथके सङ्ग ॥
कोटिन हरी के भेषहैं कोटिन हरीके रङ्ग ।
कोटिन हरी की लहरहैं कोटिन उठें तरङ्ग ॥

कोटिन हरि बैकुण्ठकरें चाहैं कोटिन कैलासकरें।
उद्दितकरें चन्द्र कोटिन और कोटिन तमका नाशकरें ३
कोटिन हैं गोपिका हरीकी कोटिन ग्वाल हरीके हैं।
कोटिन धेनु हरीके हैं कोटिन गोपाल हरीके हैं। कोटिन
सिंधु हरीके हैं और कोटिन ताल हरीके हैं। कोटिन
रत्नहरीके हैं और कोटिन थाल हरीके हैं ॥

शेर कोटिन हरीके दैत्यहैं कोटिनहैं देवते ।
कोटिन हरीके नाम कोहैं मुख से लेवते ॥
कोटिन हरीके नावहैं कोटिन हैं खेवते ।
कोटिन हरीके चरण को हैं करसेसेवते॥

देवीसिंह कहै बनारसी के घटमें हरी निवासकरें। उदितकरें चन्द्रकोटिन और कोटिनतमका नाशकरें ४ ॥

ब्रह्ममें ब्रह्मा ब्रह्मामें हैं विष्णु विष्णुमें शिवशंकर। शिवशंकरमें शक्ति शक्तिमें सृष्टि सृष्टि में उसीका घर। घरमें जन्म जन्ममें बालक बालकमें हैं मनमोहन। मनमोहनमें मोहनी मोहनीमें रस रसमें भोलापन। भोलेपनमें खेल खेलमें खुशी खुशी में नन्दनँदन। नन्दनँदनमें राधे राधेमें सखियां सखियों में लगन। लगनमें प्रेम प्रेममें प्यारी प्यारी में सोलह लक्षण। लक्षण में शोभा शोभामें रूप रूपमें चन्द्रबदन। चन्द्रबदन में श्याम श्याममें सुन्दर सुन्दरमें वह दमक। दमक में कृष्ण कृष्णमें दामोदर। ब्रह्ममें ब्रह्मा ब्रह्मामें हैं विष्णु विष्णुमें शिवशंकर १ दामोदरमें दया दयामें धर्म धर्म में रहैसुमत। सुमतमें सुख और सुखमें सम्पति सम्पतिमें हैं सारा जगत्। जगत्में थल और थलमें पृथ्वी पृथ्वीमें आकाश रहन। आकाश में पवन पवनमें अग्नी अग्नीमें पांचों तत्त्व। तत्त्वमें त्रैगुण त्रैगुणमें हैं तीन लोक लोकों में सत्त्व। सत्त्वमें सारा विश्व विश्वमें रचना रचनामें हैं भक्त। भक्तमें भाव भावमें साधू साधू के मनमें ईश्वर। ईश्वरमें इच्छा इच्छामें रहित रहित में रहै अमर। ब्रह्ममें ब्रह्मा ब्रह्मामें हैं विष्णु विष्णुमें शिवशंकर २ अमरमें आदि आदि में आतम आतम में है आतमज्ञान। ज्ञानमें गोविन्द गोविन्द में गिरिधर गिरिधरमें श्रीभगवान। भगवानमें निर्गुण निर्गुणमें है सगुण सगुणमें हवैसुध्यान। ध्यानमें योग योगमें योगी

योगीके मनमें विज्ञान। विज्ञान में चैतन्य और चैतन्य में चित्त चित्तमें प्रान। प्रानमें जीव जीव में जप तप जप तपमें है यज्ञ औ दान। दानमें मान मानमें आदर आदरमें हैं हरि और हर। हरमें उमा उमामें लक्ष्मी श्री लक्ष्मी में चराअचर। ब्रह्म में ब्रह्मा ब्रह्मा में हैं विष्णु विष्णुमें शिवशंकर ३ चराअचरमें बीर्य बीर्य में वृक्ष वृक्ष में भराहै जल। जलमेंशाख शाखमें पत्रहैं पत्रमें पुष्प पुष्पमें फल। फलमें रस और रसमें अमृत अमृत में है स्वादअटल। अटलमें अलख अलखमें माया मायामें वह है निर्मल। निर्मलमें है शुद्ध शुद्धमें बुद्धि बुद्धि में है उज्ज्वल। उज्ज्वलमें उपमा उपमामें शान्तशान्त में बड़ाहै बल। बलमेंबीर बीरमें योद्धा योद्धा में हैं जोरावर। जोरावर में बनारसी और बनारसी में परमेश्वर। ब्रह्ममें ब्रह्मा ब्रह्मा में हैं विष्णु विष्णुमें शिवशंकर ४॥

बाजीखेली इश्ककी हमने जराकिया शशपंजनहीं। खेलले हर कोई जिसको यह वह बाजी शतरंज नहीं। सकलका तो कुछ ज़ोरनहीं जो घोड़े से चलकर जीते। फ़ीलकी क्याताक़तहै जो इसबाज़ीको बलकरजीते। ये तो इश्कका दिल है इस को क्या पैदल दलकरजीते। रुख़कारुख़ फिरजाय न वह इसबाज़ीको छलकरजीते। मेरे सिवा कोई और जहां में उठासके यह रंज नहीं। खेलले हरकोई जिसको यह वह बाजी शतरंज नहीं १ वज़ीरका क्या ज़िकर इश्क़में बादशाह तक हुये गदा। जोकि चालचूका वह मारागया मेरी है यही सदा। हम ने अपने शिरकीबाज़ी लगाके इसमें दावँबदा। जान

बेंचके जो खेला वहजीता उसको मिलाखुदा। वहक्या करेगा मात कि जिसके क़ाबूमें शशपंज नहीं। खेलले हरकोई जिसको यह वह बाज़ी शतरंज नहीं २ अरदब में नहीं आया बादशाह अपनेकीलीचोटबचा। उसीने तोड़ाक़िलाजहांमें कोई न उससे कोटबचा। तिरछेहोकर चलौगे तो क्योंकरके सकोगे गोटबचा। उसका माल लुटगया रखीथी जिसने ज़रकी पोटबचा। मुझेक़िस्त नहीं लगी कि मैंने जमाकिया कोई गंज नहीं। खेलले हरकोई जिसको यह वह बाज़ी शतरंजनहीं ३ यह शत-रंज इश्क़की इसको खेले सोई सयानाहै। बड़े बड़े हो गये जिन्ह नहीं भेद किसी ने जानाहै। यह तो इश्क़का ख्यालसदा आशिक़ोंके मनमें मानाहै। बनारसी अब जीतेजी निर्गुण के बीचसमानाहै। रामकृष्णके शीरीं सखुनको पाये शीर बेरंज नहीं। खेलले हरकोई जिस को यह वह बाज़ी शतरंज नहीं ४॥

बनकायामें मनमृग चारोंतरफ़ चौकड़ीभरताहै। बिना पैरसे खूब दौड़ता बिनमुख चारा चरताहै। बिना नेत्रसे देखे सबको बिना दाँत दानाखावे। सबकहीं जावे और यह कहीं नहीं आवे जावे। बिन जिह्वासे बातकरै और बिना कण्ठ गानागावे। बिनासींगसे लड़ै भगैनहीं बड़े बड़े दलहट्टावे। बहुत सिंह डरते इससे यह किसीसे भी नहिं डरताहै। बिनापैरसे खूबदौड़ता बिनमुखचाराचरता है १ बिनखुरखोदै सकल जगत्को ऐसायह मदमाताहै। बिन इन्द्रीसे भोगकरतहै यही यतीकहलाताहै। नहिं इस के कोई तात मात नहिं कुटुम्ब कबीला नाताहै। आपी

पैदाहोय आपमें आपीआप समाताहै। सबरंगोंसेन्यारा है और हरेकरूपको धरताहै। बिना पैरसे खूबदौड़ता बिनमुख चाराचरताहै २ बिनाजीवका मांसखाय यह किसीकोभी नहीं मारेहै। जिसकोमारे एकपलभरमें उस को फेरसुधारे है। बिनाकानसे सुनता सबकी जो कोई उसपुकारे है। ऐसे ज्ञानकोकोई भी साधूमन्त बिचारेहै। तीनलोकमें फिरता यहमृगभवसागरमें तिरताहै। बिना पैरसेखूबदौड़ता बिनमुखचाराचरताहै ३ बिनानासिका लेवेबासना हरेकचीज़कीखुशबोई। आपहीआपहै अ-केला और इसके नहीं संगकोई। देवीसिंह यहकहै कि जिसने बुद्धी निर्म्मलकर धोई। अपनी आतमा जानता इसमृगको जाने सोई। बनारसीने देखा यह मृग नहीं जन्मे नहीं मरताहै। बिना पैरसे खूब दौड़ता बिनमुख चाराचरताहै ४॥

यह कायाहै कामधेनुकरप्रेमप्रीतिहमनेपाली। सबी पदारथहैं इसमें इच्छाफल देनेवाली। मगनरूपमस्तक झलकत सन्तोष सुमतिकेसींग खड़े। नहीं वहमारे कि-सीसे नहींमरे और नहींलड़े। हीरे मोती लाल और हर एकरत्न रसनामें जड़े। कृपा और करुणाके दोनों कान नहीं छोटे औ बड़े। त्रयगुणके हैं तीन चिह्न कहीं श्वेत श्याम कहीं है लाली। सबी पदारथहैं इसमें इच्छाफल देनेवाली १ दया धर्म्म के दृग दोनों जैसे रवि शशिका उजियाला। बनीनासिकानामनिश्चयरूपीसबसेआला। अपार महिमाका मुख जिसमें मन्त्ररूप फिरती माला। अपनीकायाहमने कामधेनुकरकेपाला। जस जिह्वा और

दिग्गदन्त कल्याण कण्ठ रेखाकाली। सभी पदारथहैं इस में इच्छा फल देनेवाली २ परमतत्त्वकी पीठबनी और उग्रतेजका उदर मला। परमारथकी पूंछहिलरही कौर हरएक कला। चतुराई के चारोंथन समदृष्टी समदूध ढला। चर्चारूपी चरणचारों सुन्दरसबसे अबला। जग-मगातहिरदयमें जगमग ब्रह्मज्योतिकीउजियाली। सभी पदारथहैं इसमें इच्छाफल देनेवाली ३ हमनेधारतुही धीरजकी अब अपना उद्धार करा। ज्ञानध्यानके दूधको हिरदयकी हांडीमेंभरा। ज्ञानसे गरमकिया उसको सर जीवन जावन बीचधरा। जमादहीं को मथाछलछिद्र छांछनहींरहीजरा। मुक्तरूप माखनपाया हुई पूरीमनसा मनवाली। सभीपदारथहैं इसमें इच्छाफल देनेवाली ४ जोमांगे सो पावे इससे ऐसी कायाकामधेन। विश्वरूपहै जो देखे इसको उसकोहोमैंचैन। बनारसीकहैंइसेदेखकर खुशीहमारेहुयेनयन। रंगरंगकीपढ़ेंहैं बाणी और बोले हैं मधुरेबयन। सबकीमनसा पूरण करती कोई को नहीं फेरै खाली। सभीपदारथहैं इसमें इच्छाफल देनेवाली ५॥

हरिप्रियमनभाई जबबँसुरी राधाबर कुंजबिहारीने। ध्वनिसुनतअचानक उठिधाईं तजिकाजसकल ब्रजना-रीने। पड़ीभनकश्रवणमुरलीकी जबतबसबसखियांउठि धायचलीं। कोउएकदृगमें सुरमादेकर कोउएककर मे-हँदीलायचलीं। कोउ आधीसारी तनढांके कोउ यौवन खोलि दिखायचलीं। कोउके आधेदांतन मिस्सी कोउ आधाशीशगुंधायचलीं। कोउ लटलटकायचलीं लटपट लज्जातजिसकलबिचारीने। ध्वनिसुनत अचानकउठि

धाईं तजिकाज सकल ब्रजनारीने १ कोउ पाँवनसेबांधे पहुँची कोउहाथन पायल डालचलीं । कोउकण्ठमेंधारे किङ्किणिको और कोउ कटिपहिने मालचलीं। कोऊके काननन्थुनीलटकन कोउखोलेशिरकेबालचलीं। कोउ केनाकनबालीभुमकेहैं जोचलींतोसबबेहालचलीं। जब पहुँचीं कृष्ण निकट युवती तबहीं लखा गिरिवरधारी ने। ध्वनिसुनत अचानक उठिधाईं तजिकाज सकल ब्रज नारी ने २ फिरबोले कृष्ण कौनहोतुम कैसेतुमनेशृङ्गार किये। पांयनपहुँची हाथनपायल और कटिमुक्ताके हार किये। काननमेंनथुनी और लटकन ये भूषणबिनाबिचार किये। नाकनमें बाली और भुमके काहे तुमनेब्रजनारि किये। येसुनत बचन तब दियाज्वाब ब्रजकीयुवती दो चारीने। ध्वनि सुनत अचानक उठिधाईं तजिकाज सकल ब्रजनारीने ३ जब तनकीसुधिकुछनाहिंरही तब भूषण कौन सुधारचले । मनतो अटका इस बँसुरी में दृगसे अँसुवनकी धारचले। तुमराग बजावो रागकरो ऐसा कोउनहीं बिहारकरे । मँझधारमें नावपड़ी हमरी तुमबिनको बेड़ापारकरे। तुमपतिहमरे हमदासी सब ये दियाज्वाब दुखयारी ने। ध्वनिसुनतअचानक उठिधाईं तजिकाज सकल ब्रजनारीने ४ लखिप्रेम सकलब्रजब-निता फिर कृष्णने मुरली अधरधरी। मोहनभी वादिन मोहिगये वहतानजो निकली रागभरी। तनमनकीसुधि कछुनाहिंरही जब श्रीराधेपर दृष्टिपरी। कहैंकाशीगिरि बोलो सन्तो जयकृष्ण राधिका हरी हरी। ऐसी लीला नहिंकरी कोउ जैसी करी हरिअवतारी ने। ध्वनि सुनत

अचानकउठिधाईं तजिकाज सकल ब्रजनारीने ५ ॥

हरि बँसुरी ध्वनिसुनि ब्रजयुवती चलीं झुण्ड के झुरड्मगनमनकर। धन धन्यहरी धन धन्यसखी धन धनबँसुरी तन मनलियोहर। मन प्रेम प्रबल अति तन सुन्दर सब वेदश्रुती असगुणगावें। तजलाज सकल गृहकाज छोड़चलीं हरिपद पंकज मनभावें। हरिआनन्चन्द्र चकोरसखी छबिनिरखि निरखिकर सकुचावें। कुछकहि न सकैं चितकीबतियां अतिलज्जित मनमें मुसिक्यावें। अतिव्याकुल गीत मदन मद्कर सखिचाहतमिलें मनोहरवर। धन धन्यहरी धनधन्यसखी धन धन बँसुरी तनमन लियोहर १ मनकी बांछालखिमुरलीधर ब्रजयुवतिन संग बिहारकरें। एकएकहरी एकएक सखी एक एककेकर एकयकपकरें। एक एक मुरली दई गोपियनको हरिकहत बजावो तबहिंवरें। ये प्रेम कथा सुनि हँसि हँसि करि मुखधरत न बजत प्राणबिखेरें। कहेंब्रजयुवती हम कीन्हकहा अबतुमहीं बजावो नटनागर। धनधन्यहरी धनधन्य सखी धनधनबँसुरी तन मनलियोहर २ यक यक तरवर तर यक यक हरी यक यक युवती संग बातकरें। इतघर आवें यशुदाके पास उत गोपियनबीच प्रभातकरें। हरीढीठ पकड़कर मुखचूँबे और बातसखीसकुचातकरें। यहिमांगतवरबिनतीकरकर बिधनानित ऐसी रातकरें। युवतिनके जो पति आवत सब गृहपावत अपनी पत्नी घरघर। धन धन्यहरी धनधन्य सखी धनधन बँसुरी तनमन लियो हर ३ शिव नारद आदि सकलऋषि मुनि सब देखत

गगन विमानधरें। कौतुक गिरिवर के लख न परें तन मानुष ब्रह्मअखण्डतरें। युवतीतननारी वेदश्रुती रचि लीला ब्रजमें खेलकरें। हरि पुण्य न पाप न दुःख सुख कछु वेदान्तके करतावेदपरें। रचिछन्दयह काशीगिरि अस्तुतिकरमांगत भक्तिपदारथबर। धनधन्यहरी धन धन्यसखी धन धन बँसुरी तनमन लियोहर ४॥

किसीका बानाकलँगी तुर्रा ये नहीं गानाहै। फ़क़त देखलो यहांपर निर्गुण गुणकागानाहै। कम अक़लोंने कम अक़्लीकर माया कलँगी बनाई। ब्रह्मको तुर्रा जौन कहते वहतो हैं सौदाई। माया तो है निराकार नहीं देय किसीको दिखलाई। वोहीब्रह्महै कि जिसकीथाह किसी ने नहींपाई। तुर्रेवाले कहतेहैं कलँगीको तुर्रेकीलुगाई। कलँगीवालेकहैं तुर्रेकी कलँगीहै माई। येतोहैं सबझूंठे हमने सच्चेकोपहिंचानाहै। फ़क़तदेखलो यहांपर निर्गुण गुणकागानाहै १ क्यागाते पाखण्डीको कलँगी तुर्राभी मिटजावेगा। अनघड़ छत्तर और डुंडाभी कोई नहीं गावेगा। मायाब्रह्मकी निन्दाकरते फिरपीछे पछतावेगा। लखचौरासी योनि से तब कहो कौन बचावेगा। शिव शक्ति को एक समझता वह ज्ञानी कहिलावेगा। भव-सागर के पारहो परमधाम को पावेगा। हमने उसका कियाभजन तब अपनेको पहिंचानाहै। फ़क़त देखलो यहांपर निर्गुण गुणका गानाहै २ गरपूछो तौ बानामेरा सातद्वीपहै चौदहभुवन। नवखण्डहै मेरे बाने में जल अग्नि पवन। तीनलोक मेरे बानेमें सबसे न्यारा मेरा वतन। अज्ञानी नहीं मुझेजाने अगरकरै चाहै लाख

यतन। जिसको तुमकहतेहो शिव सो मेरारूपहै मेराही तन। अपने आपको मैंहीजानूहूं रहे मन सदामगन। चाहे कोईमाने नहींमाने हमकोतो समझानाहै। फ़क़त देखलो यहांपर निर्गुण गुणकागानाहै ३ कोई बना हिंदू और कोई मुसलमान होकर बैठा। कोई फिरङ्गी बना कोई किरिष्टान होकरबैठा। सबकीबातें सुनसुन मैं कर बन्द कानहोकरबैठा। अपना दिलतो मियांअब लामकान होकरबैठा। एकान्त गिरि एकान्तमें उसका धरके ध्यानहोकर बैठा। पक्षपातका मैं दिलसेतज गुमानहोकरबैठा। बनारसी कहैं एकनाम सोई मेरेमनमें मानाहै। फ़क़तदेखलो यहांपर निर्गुण गुणका गानाहै ४॥

जिसने नहीं कुछदिया जहांमें मियां वह खालीहाथ चला। लुटाया जिसनेमाल वहमाल उसीकेसाथचला। बलखबुख़ारेका वहबादशाह छोड़तलतनतगदाहुआ। छुटे वह क्योंकर जोथाउसकी किस्मतमें बदाहुआ। गया बियाबांको वह निकल नहिं दिलमें हैरतजदाहुआ। जोकि कौलथारब्बसे कियावह उससे अदाहुआ। नज़र पड़ा सामानऐश इशरतकाआगे लदाहुआ। कहाखुदाने ले अब ये तेरेवास्ते सदाहुआ। इसीकीसंग जाती है हशमत जो भारके ज़रको लादचला। लुटाया जिसने माल वहमाल उसीके साथचला १ जोकि सूम कञ्जूसहैं वहतो हाथपसारे जाते हैं। पकड़मवक्कल उन्हेंले यमके द्वारेजाते हैं। अग्निखम्भसेबांधके वहकोड़ोंसे मारेजाते हैं। डरतेरहियो यहांपर हमये पुकारेजाते हैं। खायँ खिलावें देवें दिलावें वहनर तारेजातेहैं। भवसागरके पार

एकक्षणमें उतारेजातेहैं। भुक्तिमुक्तिपातीहै वही जोदेता दिन औ रातचला। लुटाया जिसनेमाल वहमालउसी केसाथचला २ बीरबिक्रमादित्यने परस्वारथमें अपना नाम किया। जैसा जिसने कहा वैसाही उसका काम किया। कहीं फ़क़ीरीकरी कहीं पर उसने राज्य तमाम किया। परायेदुःखको आप दुख सहसह उसे आराम किया। बहुत तपस्याकरी हरीका सुमिरण आठोंयाम किया। परस्वारथमें नाम उसने अपना सरनामकिया। सख़ावतका बड़ाहै दरजा जो करता ख़ैरात चला। लुटाया जिसनेमाल वहमाल उसीके साथचला ३ उसीके संग जातीहै लक्ष्मी जिसने ज़रको लूटाया। इनहाथोंसे दिया सोआंखों के आगेआया। क्याकोई लेगया यहांसे और क्याकोई वहांसे लाया। जिसने पाया उसीने कुछ अपना देके पाया। देवीसिंहका छन्द रंगीला कुलआलमके मनभाया। बनारसी येकहैं मैंनेसबकेतईं येसमझाया। कोईचलाउठरातकोयारो कोईउठिपरभातचला॥ लुटाया जिसनेमाल वहमाल उसी के साथचला ४॥

देहभाव गयाछूट आतमारामको जबसे पहिंचाना। निराकारमें निराकारहो मिले छुटा आनाजाना। अहंग आतमस्वरूप है कुछनहीं देहसेकाम मेरा। शरीरतो है जड़बस्तु चैतन्य आतमा नाममेरा। रविशशिअग्नि अकाश से है परे निरन्तर धाममेरा। अनन्त अव्यय अविनाशी अद्वैतरूप शिवराममेरा। कायाकर्मको त्याग के हमने सत्यआतमाको माना। निराकारमें निराकारहो मिले छुटा आना जाना १ जीव ब्रह्म एकी स्वरूपहैपरंतु

है अज्ञानकाभेद। अज्ञानीतौजीवबनै और ज्ञानीबनतता
ब्रह्म अभेद। त्रयगुणसे जो रहितहैं उनकी कौन बिधि
और कौन निषेध। जो चाहैसोकरै वोहैवेदान्तकेकथिता
ग्रथिता वेद। चाहैवहबोले चाहेहँसे और चाहेलगे गाने
गाना। निराकारमें निराकारहो मिले छुटाआनाजाना २
आतमसत्य और शरीरमिथ्या इसबिधि करै है जिसके
ज्ञान। वहप्राणीहै आपीईश्वर ब्रह्ममेंउसमेंभेद नजान।
कामक्रोध मदलोभमोह अहंकार कपटतज मानगुमान।
मिले ब्रह्ममें ब्रह्मरूपहोकरके सबछोड़ाअभिमान। ज्यों
पानीसे उठैबुलबुला फिर जल अन्दरसामाना। निराकार
में निराकारहो मिले छुटा आनाजाना ३ जलतरंगहैएक
नामहै दो इनको एकीजानों। इसीतरहसे अपनेजीवको
परब्रह्मकर पहिंचानों। जीवब्रह्ममें भेदनहींहै वेदवाक्य
सुनलोकानों। द्वैतभावदोछोड़ रहो अद्वैत कहामेरामानों।
काशीगिरि ज्योतिस्वरूप ने तत्वज्ञान यह बाखाना।
निराकारमें निराकारहो मिले छुटा आनाजाना ४ ॥

द्रौपदी बिपतिमें करुणानिधिको टेरी। पति चली बि-
पतिमेंनाथ राखोपतिमेरी। इस दुर्योधन पापीने भला
क्याकीता। करिकपटसे मेरेपांचोंपतिको जीता। सब
राज्यपाटहरलिया मुझे हरलीता। श्रीकृष्णतुम्हारी कहां
गईवह गीता। क्योंमेरेकाजकोलगाई तुमनेदेरी। पति
चली बिपतिमेंनाथराखोपतिमेरी १ अबमेराचीरऐंचने
दुशासन आया। दुर्वासाजीके वरने शमादिखाया।
जब उसपापी ने चीरको हाथलगाया। तब श्रीकृष्णने
दिखलाई वहमाया। ऐंचत ऐंचतलगगई चीरकी ढेरी।

पतिचलीबिपतिमेंनाथराखौपतिमेरी २ ज्योंज्योंवहपापी चीरखींचताजावे। त्योंत्योंवह बढ़ताजाय न घटनेपावे। ये देखदुष्टकी सारीसभा घबरावे। तिसपरवहपापीमनमें दयानलावे। लगीचीरकीढेरी परढेरीबहुतेरी। पतिचली बिपतिमें नाथ राखौपतिमेरी ३ खैंचत खैंचत बलथकत दुशासनहारा। तब श्रीकृष्णनेमनमें यही बिचारा। लियाउसपापीकोपकड़हालकहासारा। ये चीरकभीनहिंतुम सेजायउतारा। कहैमनमेंद्रौपदीकृष्णमैंतुम्हारीचेरी। पतिचली बिपतिमेंनाथराखौपतिमेरी ४ फिरचीरहाथसे छोड़ा सब घबराये। और नीचाशिर करलिया बहुत शरमाये। द्रौपदीकी लज्जारही कृष्णगुणगाये। वहतरेजो कोईछन्द ये सुननेआये। कहैं बनारसीकरो कृष्णचन्द्र की फेरी। पतिचली बिपतिमें नाथराखौ पतिमेरी ५ ॥

कान्हाने लटलटकाके लटकालटका नया निकाला। श्रीकृष्णकी अलकैं अलक केशसे शेष लजत धरणीधर। घनघटा देखकर घटत निशा अतिछकत कहतधरणीधर। काली काली लट कलाकरैं चित हरत तकत धरणीधर। रसना सहस्रमुखसे रटतरटत दिनरात थकत धरणीधर। करसेगहिकर छिटकाई। नागिनी देखिलहराई। कालीने शङ्काखाई। लेखनी लेखना लिखत अलक जद दिखत कृष्णकीआला। कान्हाने लटलटकाके लटकालटका नया निकाला १ दृगचञ्चल चतुरहरीके नेत्रलागत खञ्जनतेनीके। करे लहरि लकीरैं लाल लगत कारे अञ्जनतेनीके। गड़गये कलेजे आयघायके चन्द्रकिरणते नीके। रससागरते अतिसरस हरणचित

लगतहरिणते नीके। शरचलत नेत्रते तीखे। जदल-
ङ्त दृगनते दीखे। हरिचरित्र कैसेसीखे। कसकत हृ-
दय दिनरैन नयनने अयन कलेजा शाला। कान्हा ने
लटलटका के लटका लटका नया निकाला २ आनन
की षटदश कला दन्तते हीरा लाल लजाये। दर्शन
कारण षटदर्शन आसन त्याग त्यागकर आये। शङ्कर
इन्द्रादिक सहित चरण नंगेकरकरकेधाये। श्रीकृष्ण कि
लीलादेखि छन्द आनन्द से कथ कथगाये। तनुचन्दन
हारचढ़ाये। अक्षतले शीशलगाये। हृदय चरणनचित
लाये। नँदलाल कंसकेकाल काटदिया अंधरकाताला।
कान्हाने लटलटकाकेलटकालटका नया निकाला ३ हरि
निराकार निरधार चारकर त्रयतालके कर्त्ता। षटराग
तीसरागिनी नारायण तीनतालके कर्त्ता। सच्चिदानन्द
कालके काल कालके कर्त्ता। हैं आदि अनादि अगाध
कृष्णअक्षय अकालके कर्त्ता। कहैकाशीगिरि हरीहर२
दिनरैन ध्यान हृदय धर। रज चरणन की अंजनकर।
कहा अधरछन्द धरध्यान ज्ञानदे दान नन्दके लाला।
कान्हाने लट लटकाके लटका लटका नयानिकाला ४॥

श्रीगिरिधरने लटकाली लटकाली आननपर आला।
अतिबिचित्र लटकी लटकलटककर अमृतरसकोचाखैं।
जो सर्प ओसजिह्वासेचाटकेप्राणकोअपनेराखैं। शशि-
मंडलकीसी शोभा उपमा वेदभी ऐसीभाखैं। राधेसखि-
यनसेकहैं घूमके मनको मेरेसुलाखैं। मोहनी अलकनमें
बसी। छबिभांतिभांतिकी फँसी। मानोंबने कृष्ण महेश
पहिनकर नागनकीसी माला। श्रीगिरिधरनेलटकाली

लटकाली आननपर आला १ कोइबांबी में से लपकचले कोइ गिंडलीमारकेबैठे। कोइ उगिलके मणीकोखड़े और कोइ सङ्गनारिके बैठे। कोइफणासे फुफुकारे और कोइ केंचुलीउतारकेबैठे। मानोंविषभरे भुजङ्गवहमलयागिरि बिचारकेबैठे। कोइ श्वेतलाल कोइपीले रंगरंगके सर्प रँगीले। रोलीकेसर चंदनसे चर्चिके अद्भुतरंगनिकाला। श्रीगिरिधरने लटकाली लटकाली आननपर आला २ उपमाएक और कहूं जो सुनो कोउकविसे कही न जावै। मानो कजलीबनसे सुगन्ध नानाप्रकारकी आवै। एक तो मनउलझा काव्यमेंदूजे कृष्णकीलट उलझावै। जो कुञ्जकुञ्जमें परदेशीभूला नहिंरस्तापावै। हरिकी लट भूलनीवारी। भूलेब्रजकेनरनारी। जो प्रेमजालमें फँसा वहीं वहबसा न गयानिकाला। श्रीगिरिधरने लटकाली लटकाली आननपर आला ३ अतिउत्तमछवि अलकनकी सुन्दरश्याम घटासी दरसे। जबकृष्ण करे अस्नान तो मोती झूमझूमके बरसे। वह घूंघुरवाले केश छाये चहुँदेश बसे अम्बरसे। अस्तुति करकरके थके शेष और महिमाको जीतरसे। जो इसपदको कोउगावै वह भुक्ति मुक्तिसबपावै। कहै बनारसी भजु रामकृष्ण गोबिन्द और श्रीगोपाला। श्रीगिरिधरने लटकाली लटकाली आननपर आला ४॥

शरीरसे है भिन्न आत्मा सोहं आतमराम। देहसे हमें नहीं कुछकामजी। जैसे जलमें कमलरहै वहजल में जलसेदूर। आतमाऐसेरहै भरपूरजी। आतमनोचैतन्य है और यहजड़शरीरहै धूर। आत्मारहा सर्वमेंपूरजी॥

दोहा ॥ शरीरकेहैं रंग भिन्न भिन्नआतम एकही रंग। जो हैं ज्ञानीपुरुषकरैं वह आतमसेसत्संग ॥ आतमा परब्रह्म का नामजी। शरीरसेहै भिन्न आत्मा सोहं आतमराम। देहसे हमैं नहीं कुछकामजी १ त्रैगुणसे है रहितआत्मा दशइंद्री से परे आतमा नहीं जन्मै नहीं मरे। शरीरको दुखसुखहै आत्मा दुःखसुख कुछनहींभरे। आतमापुण्य पापनहिंकरैजी॥ दोहा॥ देहबढ़ै और घटैदेहहोतीदुबली मोटी। रहैआतमाज्योंकीत्यों नहिंहोवे बड़ी नहिंछोटी॥ दूरहै सबसे आतमाधामजी। शरीरसेहै भिन्नआत्मा सो-हं आतमराम। देहसे हमैंनहीं कुछकामजी २ देहमिलै मिट्टी में और यहदेह अग्निमें जलै आतमानहींजलैनहीं बलैजी। देह पवनसे सूखै और यहदेह जल अन्दरगलै आत्मानहीं किसी में रलैजी॥ दोहा॥ अखण्ड अव्यय अविनाशीहै आतमाआदि अनाद। नहीं शस्त्रसे छिदै नहीं कुछइसमें बाद बिबाद॥ आत्मा कृष्ण आत्मा रामजी। शरीरसे है भिन्न आतमा सोहं आतमराम। देहसे नहींहमैं कुछ कामजी ३ गीतामें है लिखा श्रेष्ठहै सबमें आतमज्ञान। ध्यानमें यही बड़ाहै ध्यान। शरीर का अभिमानतजै जो बनै आप भगवान। होय एक क्षणभरमें कल्याणजी॥ दोहा॥ पानी का बुलबुला फूट जैसेहोतापानी। मिलैब्रह्ममेंब्रह्मरूपहोकरके नरज्ञानी॥ छन्द काशीगिरिके सरनामजी। शरीरसे है भिन्न आ-त्मा सोहं आतमराम। देहसेनहीं हमैं कुछ कामजी ४॥

श्रीकृष्ण शिव एकरूपहैं रहतेएकीसंग हरिहर दोनों हैं अर्द्धंगमला। आधा अंगहै श्रीकृष्णका आधाशिव

का जान कहाये परम पुरातन ज्ञान भला। कृष्ण करैं शिवका सुमिरण शिवधरैं कृष्णका ध्यान आतमा एक एक अस्थानभला ॥ दोहा ॥ शिवजीसाधैंयोग कृष्णजी करैं भोगविलास। योग भोगदोनोंयकी दोनोंकाब्रह्म में वास। वो पहिने भूषण वो रहैं नंगभला १ कृष्णपढ़ैंगीता और शिवजी पढ़ैं आप वेदान्त। वो करते क्रोध वो रहते शांत भला। कृष्णकरैं क्रीड़ाब्रजमें शिवरहैं सदा एकांत। दोनोंकी सुन्दरशोभा कांतिभला ॥ दोहा॥ शिव कासुमिरण करतेकरते कृष्णजी होगयेश्याम। शिवजी होगये श्वेत जपाकरते हैं कृष्णकानाम। ऐसानहीं कोई का सतसंगभला २ कृष्णबजावैं मुरली मुखधर शिवजी गातेगान। निकलै दोनों में एकीतान भला। कृष्णभरैं भण्डारजक्तके शिवदेते वरदान। करैं दोनों जनकाकल्याणभला ॥ दोहा ॥ कृष्णकरैं वैराग्यतीव्र और शिव धारे संन्यास। वो उनके सेवकहैंगे और वो हैं उनके दास। करैं राक्षसोंको दोनों दंगभला ३ कृष्ण सोवते शेषकी शय्यापर करके आराम। करैं शिव मशान में विश्राम भला। कृष्णकरैं शिवकी सेवा शिवकरैं कृष्ण काकाम। रटैं दोनों को आठोयामभला ॥ दोहा॥ शिव पूजैं कृष्णके चरण करैं कृष्णलिंगपूजा। हरीहरआतम एक मूरती और नहीं दूजा। उनके शिर मुकुट उनके शिर गंगभला ४ त्रैगुण से शिव रहित कृष्ण हैं तीन लोकमें परे। भजो चाहै हरिकहो चाहै हरेभला। शिव ने त्रिपुरासुरकोमारा कृष्णसे कौरवमरे। दोनों ये कोई से नहीं डरैंभला ॥ दोहा ॥ शिवके संगरहैं सदायोगिनी

चन्दनकाहै खौर। इधरमुर्छल और उधरहो चवँरभला। आधेमुख माखन और आधे धतूरेका है कौर। आधा अंग श्याम आधाअंग गौर भला॥ दोहा॥ आधेअंग में भस्म लगी औ आधे लगी सुगन्ध। आधा अंग है क्रोधवन्त और आधाहै आनन्द। आधे अंग बस्त्र औ आधानंगभला २ आधेमुखमुरली बाजे आधेमुखबाजे नाद। न उनका अंत न उनका आदिभला। आधेमुख अमृत और आधे हलाहलका स्वाद। दूरकरैं क्षणमें विघ्न बिख्यात भला॥ दोहा॥ आधे अंगमें सर्प और आधे अंगमें भूषण हेम। आधाअंगहै कर्मरहित और आधे अंगमें नेम। आधाब्रह्मचर्य आधासभँगभला ३ आधेकमरमें लँगोटा आधे कटिकछिनीकसे। दोनोंअंग एकअंगमें बसेभला। आधा आसन गरुड़पै आधा नन्दीगणपरलसै। यह शोभा देख मेरामन हँसै भला॥ दोहा॥ अर्द्धस्वरूप है महाकाल औ आधा पालनहार। बनारसी यह कहै है उसकी महिमा अगम अपार। देख सुर नर मुनि होगये दंगभला ४॥

घरमिलै उसे जो अपनाघर खोवे है। जो घररक्खै वो घरघरमें रोवेहै। जो राज्य तजै वो महाराज्यकरता है। और जानतजै सो कभी नहीं मरताहै। सुखत्यागै तो वह औरक दुखहरताहै। धनतजै तो फिर दौलतसे घरभरताहै। जो पलँगतजै वहफूलोंपरसोवे है। जोघर रक्खै वह घरघरमें रोवेहै १ जो परदारा को तजै वह पावैरानी। और झूठ बचनमें छोड़ सिद्ध होय बानी। जो दुर्बुद्धीको तजै वहीहोज्ञानी। मनसा त्यागै तो मिलै

ऋद्धिमनमानी। जो सर्वतजै उसको सबकुछहोवेहै। जो घररक्खै वह घरघरमें रोवेहै २ जो कुछ इच्छा नाहिंकरै वह इच्छापावै। औ स्वादतजै तो अमृतभोजनखावै। नहिंमाँगै तो फलपावै जो मनभावै। है त्यागमें तीनों लोकवेद यों गावै। जो मैलाहोके रहै वह दिल धोवे है। जो घररक्खै वह घरघरमें रोवेहै ३ जो पक्षबादकोतजै वह सबको जीते। औ कामतजै तो होयकाममनचीते। कहै देवीसिंह हरनाम जिन्होंने लीते। उनको गोविन्द ने ब्रह्मलोकपुर दीते। अब बनारसी घर खोके ब्रह्महोवे है। जो घररक्खै वह घरघरमें रोवे है ४॥

वह आपी आपहै एक और नहिंकोई। कहुकलँगी तुर्रा कहांसे आये दोई। वही ब्रह्मा बिष्णु महेश वही है शक्ती। निश्चयकर मानौ करौ प्रेमसेभक्ती। सुन किसी कि निन्दामुझे भली नहिं लगती। है सबमें पूरणब्रह्म ज्योतिसी जगती। क्यों झूठबाद करकरके बुद्धीखोई। कहुकलँगी तुर्राकहांसेआयेदोई १ मायामें बसता ब्रह्म ब्रह्ममेंमाया। है चारवेदने इसीतरह से गाया। मायासे सृष्टीकरी औ जक्तरचाया। मायाके बीचमें कलँगीतुर्रा आया। है ब्रह्म फूलमाया उसकी खुशबोई। कहुकलँगी तुर्रा कहांसेआयेदोई २ वही अलख निरंजन निराकार अविनासी। है सबसे न्यारा सबघटघटका बासी। वह बड़ी दूरपर बसै औ सबके पासी। जिसजिसनेउसको लखा वहीसंन्यासी। क्योंनिन्दाकरके पापकिगठरीढोई। कहुकलँगीतुर्रा कहांसे आये दोई ३ कोइ अनघड़ छन्तरहएडा डुह्वागावै। जोपक्षबादको करै वहगोतेखावै।

के इकलँगी तुर्राबहुतेरुयालबनावे। कहै देवीसिंह नहिं भेदज्ञानकापावे। कहै बनारसी यह सोहं पद है सोई। कहु कलँगी तुर्रा कहांसे आयेदोई ४॥

कहिं पुण्य करोतो बड़ापाप होताहै। कहिं पापकिये से पुण्य आप होताहै। कहिं अग्निमेंरहके शीतलतनु होताहै। कहिं जलमें बसके रूपअग्नि होता है। कहिं दुखमें सुखहो प्राणमग्न होता है। कहिं दान किये ते अति निर्द्धन होताहै। कहिंगालीदेनेसे भी जापहोताहै। कहिं पापकरोतो पुण्य आप होताहै १ कहिं भूलजाय तो सबविद्या आवे है। कहिंपढ़े तो वह फिर सबीभूल जावे है। कहिं पवन अहारी होके सब खावे है। कहिं भोगीहो जितइन्द्री कहलावे है। कहिं अशीश देने से भी शाप होताहै। कहिं पापकरो तो पुण्य आप होता है २ कहिं झूठ बोलके सच्चा कहलाताहै। कहिं सत्य वचन कहनरकबीच जाताहै। कहिं गुरुसे लड़के चेला फलपाताहै। कुछ उसका भेदलखनेमें नहिं आता है। कहिं वियोगकरके भी मिलाप होता है। कहिं पापकरो तो पुण्यआप होताहै ३ कहिं दुर्बल जायके पर्वतलेय उठाई। कहिं अति बलवानूसे उठे न एको राई। कहै देवीसिंह सचहै उसकी प्रभुताई। अय बनारसी तेरी गति लखी न जाई। जो होताहै वह आपीआप होता है। कहिंपापकरो तो पुण्य आपहोताहै ४॥

सबके बीचमें है और दिखाईनहीं दे गोबिंद। हुआ दुनियाको मोतियाबिंदुजी। भीतरकी गईफूट देबाहर से दिखलाई। कहैंये बापहै ये माईजी मरजावे तो कोई

साथ नहींचलै नहिंचलैबहिनभाई। या चाचाहो या हो ताईजी। झूठबात नहीं कहते बोले सत्यबचन येरिन्द। हुआ दुनियाको मोतियाबिन्दुजी १ अरेमूढ़ अज्ञानतू क्योंभटके है चारोंधाम। तेरे घटमें है आतमारामजी। उन्हेंतू क्योंनहींदेखे जो हृदयमेंकरे बिश्राम। नामजपतो तेराहो नामजी। घटमें आतमा सूझपड़ेनहीं योहींयोहीं गँवाई जिन्द। हुआदुनियाको मोतियाबिन्दुजी २ गोदीमेंलड़का औ ढिंढोरा शहरमें फिरवाते। मसलजो है वही हम गातेजी। इसीतरहसे घटमें हर बाहर खोजन जाते। मिलैनहीं उलटे फिरआतेजी। मुसलमान मक्के जाभटकै हिन्दू भटकै हिन्द। हुआ दुनियाको मोतियाबिन्दुजी ३ जगन्नाथ औ बद्रीनाथ सब हमभी फिर आये। कृष्ण इस हिरदयमें पायेजी। देवीसिंहने ज्ञान ध्यानके सदा छन्दगाये। रागके चरण चित्तलायेजी। बनारसीने ज्ञान दृष्टिसे दिया जक्तको निन्द। हुआ दुनियाको मोतियाबिन्दुजी ४॥

जो चाहै सोकरै प्रभू उसकी गति लखी न जाय। कर्मके लिखेको देय मिटायजी। कितनेही मरगये तो उनको पलमें दिया जिलाय। कालकोदेखो कालईखायजी। लूलाचढ़ै पहाड़केऊपर बिनपौरुषसे धाय। एक तृण में त्रैलोक समायजी। सेतुबांधके समुद्र में हरिपत्थर दिये तराय। कर्मके लिखेको देय मिटायजी १ मूरुख चातुरको देता एक पलमें वेद पढ़ाय। जिये वह सदाजो विषको खायजी। मीन धूपसे मग्नरहै नहिंपानी उसे सुहाय। कहो कोइ इसको अर्थ बतायजी। लोहा

कंचनबनै जो उसको पारसदेउ छुवाय। कर्मके लिखेको देय मिटायजी २ बिधवाहोय सुहागन उपजै पुत्र सो करै सहाय। आगिको पानी देय जलाय जी। भूखा भोजन नहीं करै औ पेटभरा सब खाय। शेरको भेड़ी देय भगायजी। भृंगीकीड़े को अपने समलेता आप बनाय। कर्मके लिखेको देय मिटायजी ३ मार्कण्डेयजी बारहबर्षकी आयेउमर लिखाय। लिखी बिधनाने बहुत चितलायजी। सोतो होगये चिरंजीव मैं सत्यसत्य कहुँगाय। प्रभुके आगे कर्म लजायजी। बनारसीकहै नरसे प्राणीनारायण होजाय। कर्मकेलिखेको देयमिटायजी ४॥

मनपतङ्ग बढ़गयासन्तका घूमरहाचहुँओर। कालके ऊपर कर्त्ता जोरजी। हवाजाय पश्चिमको तो यहपूरबकोजावै। हवाके बशमें नहिंआवैजी। पवन जो दक्षिणजाय तो यह उत्तरकी सुधिलावै। किसीसे जरा न भय खावैजी॥ दोहा॥ सातद्वीप नवखंड औ चौदहभुवनों में फिरता। जहांचाहै वहांजाय गिराये किसी के नहीं गिरता। तीनोंलोकोंमेंकरताशोरजी। मनपतङ्गबढ़गया सन्तका घूमरहाचहुँओर। कालके ऊपरकर्त्ताजोरजी १ चाहै जबले उतार औ चाहै जबदेचढ़ाय। उड़ावैयोगी ध्यानलगायजी। जहां कालका गुजरनहीं है वहांये तुकलजाय। त्यारकीअद्भुत लेयलगायजी॥ दोहा॥ लगी इसमें अद्वैतकीडोडीठहाठीकाढ़िला। और कोईनहींरंग हैइसमेंनिर्गुणरंगमिला। दवैनहींकहींपरइसकीकोरजी। मनपतङ्गबढ़गयासंतकाघूमरहाचहुँओर। कालकेऊपर कर्त्ताजोरजी २ कृष्णनामकी लगाई कंनी कभी न कन्नी

लगै। सातवें अकाशपर जगमगैजी। ब्रह्मपुरुषसेडर डरपापी कनककठनभगे। गये वह यमकेलोकमें ठगेजी॥ दोहा॥ ज्ञानकाभोला ध्यानकाभांझा ज्यों खांडेकीधार। सद्गुरुकी सहलगी तो होगये भवसागरकेपार। न टूटै सत्तशब्दकी डोरजी। मनपतङ्गचढ़गया संतकाघूमरहा चहुँओर। कालके ऊपरकत्तीजोरजी ३ शुद्धआत्मा बनी यह तुक्कल चौथेपदपर खड़ी। हैमहिमा इसतुक्कल कीबड़ीजी। पुण्यपापसे अलगहै यहनहींनभनहींकड़ी। काटाउसको जो इससे लड़ीजी॥ दोहा॥ देवीसिंह यों कहै जो इसके पेंचमें कोई आवे। झटपटले लपटखींच अपनेघरमेंलावे। कहैछन्दबनारसी किशोरजी। मन पतंगचढ़गया सन्तका घूमरहाचहुँओर। कालके ऊपर कत्तीजोरजी ४॥

ग्वालिनसे कृष्णजीकहैं मधुरबोलीमें। यहकहा चुराये जातहो तुम चोलीमें। गहदधिधेनन यह कहां से गठरीपाई। इसमें मोहिमोती माणिक दिखलाई। यह सुनत वचन तबतो ग्वालिन मुसुकाई। और लगी गालियांदेने बहुतरिसाई। मतबोलो ऐसा वचन मेरी टोलीमें। यहकहा चुराये जातहो तुमचोलीमें १ फिर कहैं कृष्णतुम हमकोतनकदिखाओ। जो चोरीनहींहैकरी तोक्योंशरमाओ। योंकहै ग्वालिनीहटो उधरकोजाओ। मतकरो हँसीकीबात न मोहिलजाओ। फिरकहैं कृष्ण अपनीनतियां भोलीमें। यहकहाचुरायेजातहो तुम चो- लीमें २ उसवक्त कृष्णने ऐसी मोहनीडाली। ग्वालिन मनमें भइचूर न बोलीचाली। सबखोलिके आँगया उस

की देखीभाली। दोनों कुचलीन्हे पकड़ हँसेबनमाली। नितऐसी लीला करैं कृष्ण होलीमें। यह कहा चुराये जातहौ तुमचोलीमें ३ थी यही इच्छा ग्वालिनकी कृष्ण मिलजावैं। औ पकड़के बहियां मोको गलेलगावैं। कहैं देवीसिंह जो कृष्णकी अस्तुतिगावैं। वहजीतेहीजी जीवन्मुक्ति फलपावैं। कहैं बनारसी क्याहै अँगियापोली में। यह कहा चुरायेजातहौ तुम चोली में ४॥

नहीं मेरायहशरीरहै नहींहै मुझको दुखदुन्द। मेरा है रूप सच्चिदानन्दजी। नहींलोभ नहीं मोह नहीं बुद्धी नहीं अहङ्कार नहीं आचार औ नहींबिचारजी। नहीं रातनहीं दिन नहींतिथिघड़ी लग्ननहींवार। नहींहैअपना पारावारजी। नहींऊजड़नहींजंगलनहीं बस्तीकुटुम्ब घरबार। नहींदारासुत नहींपरिवारजी॥ दोहा॥ नहींशीश नहीं मुख नहीं जिह्वा नहीं बाणी नहींहाथ। नहीं उदर नहीं लिंग चरणनहीं नहींवर्ण नहींजात। नहींवेद नहीं शास्त्रनहींश्लोक नहीं परछन्द। मेराहैरूप सच्चिदानन्द जी १ नहींकाम नहीं क्रोध नहीं कुछज्ञान नहीं अज्ञान नहींकोई मन्त्र तंत्र नहीं ध्यानजी। नहींनेम नहींसंयम पूजानहीं तीर्थस्नान। नहींव्रतहोम यज्ञनहीं दानजी। नहीं योग नहीं भोग नहीं संयोग मान अपमान। नहीं बनबासी नहींस्थानजी॥ दोहा॥ नहींसीधा नहीं गोल नहीं दुबला औ नहीं मोटा। नहीं टेढ़ा नहीं बेंड़ा बहुत नहीं बड़ा नहीं छोटा। नहीं तुर्श नहीं लोन अलोना नहीं कड़ुवा नहीं कन्द। मेराहै रूप सच्चिदानन्द जी २ नहींसुखनहींदुःखीनहींधनवान् नहींकंगाल। नहीं मंत्री

और नहीं भूपालजी। नहींसिंधु नहीं नदी नहीं है कूप बावड़ीताल। नहींहै आकाश नहींपातालजी। नहींश्वेत नहीं पीत नहीं है कपोत नीलालाल। नहीं है वृक्षफूल फलडाल जी ॥ दोहा ॥ नहींहीरा नहींमोती माणिकनहीं रत्नकीखानि। नहींखड्ग नहींचक्र नहींत्रिशूलधनुषनहीं बान। नहीं जाग्रत नहीं स्वप्न सुषुप्ति नहीं खुला नहीं बन्द। मेराहै रूप सच्चिदानन्दजी ३ नहीं त्रिपुण्डीनहीं बनखण्डी नहीं ब्रह्मचारी। नहीं मुण्डित न जटाधारी जी। नहीं अग्नि नहीं पवन न पानी नहीं मीठा खारी पशु नहीं पुरुषनहीं नारीजी। नहीं शैव नहीं शक्तिनहीं वैष्णव नहीं आचारी। नहीं हलका नहीं भारी जी॥ दोहा ॥ नहीं मिमांसक नहीं जैनी नहीं उदासीनमतबाद। नहीं देवगन्धर्व यक्षनहीं विघ्नबिस्वाद। नहीं बिजुली नहीं घननहींतारे नहीं सूर्य नहींचन्द। मेराहै रूप सच्चि-दानन्दजी ४ नहीं शिष्य नहीं गुरू न माता पिता नहीं भ्राता। नहींरिश्ता और नहीं नाता जी। नहींबैठा नहीं खड़ा नहीं आताहै नहीं जाता। नहींभूखाहै नहींखाता जी। नहींलेय नहींधरै नहींदेता नहीं दिलाता। सखी नहीं सूमनहीं दाताजी॥ दोहा ॥ नहीं कर्मकी रेख लेख नहीं नहीं पढ़ाजाता। नहीं मौनहोरहै नहीं बोले नहीं बुलाता। नहीं पक्षी नहीं फन्द कहै नहीं जाल नहीं फर-फन्द। मेराहै रूप सच्चिदानन्दजी ५ नहीं हिन्दू नहीं मुसलमान यहूदी नहीं फिरङ्ग। नहीं कोई रूप नहीं कोई रङ्गजी। नहींबीन बांसुरी नहीं करताल ताल मृ-दंग नहीं जलतरंग नहीं उपंगजी। नहीं कलँगी नहीं

तुरी नहीं अनघड़ डुगडा नहीं चंग। नहीं कोई संग है नहीं आसंग जी॥ दोहा॥ आपी आप में आप है रहा आपमें व्याप। नहीं स्वर्ग नहिं नरकहै नहीं पुण्यनाहिं पाप। बनारसी कहै रूपहमारा अखण्ड परमानन्द। मेराहै रूप सच्चिदानन्दजी ६॥

है ऊपरकुवां औ नीचे जिसके डोरी। पानी भरतीं पनिहारिन चोराचोरी। डोरीके ऊपर घिरनी चक्करखावे। वहमधुरमधुर ध्वनि बोले मोहिं सुहावे। जब तक वह डोरी कुवांसे आवेजावे। तब तलक कुआँ वह नहीं सूखनेपावे। उस कुवांके ऊपरखड़ीं हजारोंगोरी। पानी भरतीं पनिहारिन चोराचोरी १ मुँहबंद कुँएकाहै औ पानी दरसे। वहदेखे जिसकी डोरलगी है हरसे। जब पनिहारिन कुछकाम न राखै घरसे। तब अमृतजलको छके छुटै सब डरसे। वह नितउठि गागरिभरै बनी रहै कोरी। पानीभरतीं पनिहारिन चोराचोरी २ जबउलटा डोल वहजाय तो पानी आवै। फिर सींचै अपना बाग़ अमर फलपावै। है काहेका वह डोल औ कौन बनावै। जो पूरायोगी होय तो मोहिं बतावै। उस कुँएके ऊपर नहींचलै बरजोरी। पानीभरतीं पनिहारिन चोराचोरी ३ उस कुँएपै गंगायमुना सरस्वतीहैं। औ महादेव अविनाशी पार्वती हैं। नौनाथ चौरासी सिद्ध औौर बारु यतीहैं। नानाप्रकारकी उसमें बेलपती हैं। है राह वहां की बहुतै साँकरखोरी। पानी भरतीं पनिहारिन चोराचोरी ४ लाखौं पनिहारिन एक है औ पनिहारा। उस पनिहारेने सबको भरदी धारा। जिसने पाया वह नीर

तो जन्मसुधारा। कहैबनारसी उसकीगति अपरम्पारा। वहन्हावें उसमें जिसका पंथ अघोरी। पानी भरतीं पनिहारिन चोराचोरी ५ ॥

क्याही झलक दंदाँमेंहुई प्यारे तेरे मुसुक्यानेसे। बर्क़तड़पनेलगी अख़तररहे मुँहदिखलानेसे। अजबतिलस्महुआ ज़ालिमतेरे उसपानचबानेसे। मरजांगोहर जमुर्रद निकलपड़े दुर्दानेसे। शफ़क़ादमफ़क़हुनाबहुत फूलीथी वह सुर्ख़ीपानेसे। अनारके भी दाने मोताज होगयेदानेसे। देखतेरेदंदाँकी झलक उठिगयेवोलाल जमानेसे। बर्क़तड़पनेलगी अख़तररहेमुँहदिखलानेसे १ भूलजायँजौहरी वह परखना रत्न औ फिरैं दिवाने से। दंदाँतेरे देखपायें गर किसीबहाने से। कितनेही गये डूब वह सागरमें भी गोता खानेसे। परनहींवाक़िफ़हुये वहभी ऐसे दुर्दाने से। सूखगया वहलहू तेरे दाँतों की सिफ़त सुनानेसे। बर्क़तड़पनेलगी अख़तररहे मुंहदिखलानेसे २ शरमिन्दाहोगयेजवाहर दाँतोंकेचमकानेसे। खनउगलनेलगे हीरे क्याहोपछतानेसे। देखमुरूसेसाजता रहजाय अपनाकाम बनानेसे। यह वह जड़तहैं जड़ीबसखुदाके हाथलगानेसे। आजमुझे मिलगया मज़ा इस हँसीमें तुम्हें हँसानेसे। बर्क़तड़पनेलगी अख़तर रहेमुंह दिखलाने से ३ टुकड़ेहोयाक़ूत तेरे दाँतोंकेरूबरू आनेसे। कहैंचमेली बात यह अपने और बेगानेसे। पाननेभी पाई लाली उसमाहलक़ाके खानेसे। इसीवास्ते वह बस्तीमें आये वीरानेसे। यहदन्दां निकले हैं बेबहाखुदाकेसुनो ख़ज़ानेसे। बर्क़तड़पने लगी अख़तर

रहे मुँहदिखलानेसे ४ बनारसीने कहा हालयह अपने मन मस्तानेसे। इनदंदों में देखले खुदामेरे दिखलाने से। थकजायगा ओ नादाँतू लामकानकेजानेसे। यहीं देखलेनूरदंदाँमें यारकेआने से। ऐसी सिफ़तदांतों की किसीसेबनै नहीं मरजानेसे। बर्क़तड़पनेलगी अख़तर रहे मुँह दिखलानेसे ५ ॥

पानकी लाली से वह झलक दंदांमें तेरे लालों की बनी। लालेबदख्शां देखकर जिसेखायँ हीरेकीकनी। आज तू जो हँसकेबोला तो दहन में वह दंदांचमके। जिगर छिदगया हरएक गौहरका सुनो मारेग़मके। सुनतेही यकसिफ़त सूखकर होशउड़गये शबनमके। क्याताक़तहैमुक़ाबिल दन्दांके अख़तर दमके। हरएक जवाहरके ऊपर प्यारे तेरेदंदां हैं ग़नी। लालेबदख्शां देखकर जिसेखायँ हीरेकीकनी १ अगरचमेलीको देखूं तो उसका सुर्ख़ लिबासकहां। मरजांटुकड़े हुवा उसको जीनेकी आशकहां। झूठ नहीं बोलूंगासनम् मुझको कोईका पास कहां। सचकहताहूं मुक़ाबिल दन्दांके इ-लमासकहां। क्या ताक़त गर इनके रूबरू चमक सकै कोइ और मनी। लालेबदख्शां देखकर जिसेखायँ हीरे कीकनी २ इन्हें देखकर बर्क़तड़पती है वह आसमांके ऊपर। सदकेकरदूं शफ़क़कोभी इन दन्दांके ऊपर। किसीसे निस्बतकभीनदूं नहींलाऊं इसजबांके ऊपर। दन्दांतेरे झलकतेहैं वहलामकांके ऊपर। शायकतू पी-से जो दांत तो दममें करदे फ़नाफ़नी। लाले बदख्शां देखकर जिसेखायँ हीरेकीकनी ३ गरजोकोई याक़ूतकहै

तो ज़बांको उसकीकटवाऊं। अनारकेभी कहैं दाने तो काटके मैं खाऊं। और जो कहै गौहरकी लड़ी तो उस कोभी मैं छिद्वाऊं। किसी से निस्बतनदूं नहिंसुनूं न ख़ातिरमें लाऊं। बनारसी गरकहै तो क्या दिलमें उसके अब यही ठनी। लालेबदख्शां देखकर जिसेखायँ हीरेकीकनी ४॥

क़हर नाज़ो अन्दाज़ ग़ज़ब है अजब हुस्न दमकै दमूदम्। चालमें छलबल इशारे नहीं तेरे आफ़त से कम्। गरचे हुस्नतेरेकी सिफ़त कोई लाखतरहसे करै रक़म्। क्या ताक़तहै जो उसके हाथसे ठहरे लौहेक़लम्। जायेताज्जुबहै जलवातेरा जलवेगरबनासनम्। तेरेनूरसे हुआ कोहतूर में वहमूसा बेदम्। हाथमलायक मलैं हूरहैरत खाखाके हुयेक़दम्। जिनो बसरसब तेरी ताबेदारी करते हरदम्। सरतापा तस्वीर खिंची क़ुद्रतकी तेरी बिनाक़लम् । चालमें छलबल इशारे नहीं तेरे आफ़तसे कम् १ शिरतेराहै हरशिरका सरदार तुहै शाहेआलम्। उसके ऊपर ताजकलँगी औछत्र झलके झमझम् । जुल्फमुसलसिलमें वहपेंचहै और तेरे हरबाल में ख़म्। गोया नागिनी माहपर आईचाटने को शबनम्। यामैं जलवाको अब्रकहूँ या लामअलिफ़ या नसर नज़म्। यामैं उनको कहूँजुलमात याके जादुये सितम् । आगेलाखों तिलिस्महैं जुल्फों में तेरे तेरीक़सम्। चालमें छलबल इशारे नहीं तेरे आफ़त से कम् २ देखतेरे माथेको फ़लकपर आफ़ताब खाता है शरम्। चीनेजबीं से किरन खुरशैदकी कांपै होके ब-

हम्। सिफ़तकरूँ अबरूओंकी तौ शमशीरपर हो श-मशीरेअलम्। याकै कमांहैबनी मुलतानकी याहै तेगे दुहम्। मिज़ैतीरपैकांहै या नशतरहै या बरछी बल्लम्। यक पलमें वह करैं क़तलाम करैं एकपलमें रहम्। तेरी नज़र गरफिरै तो फिर होजायँ क़तललाखों रुसतम्। चालमें छलबल इशारे नहींतेरे आफ़तसेकम् ३ चेहरा गोल अनमोलके जिस्से रश्कक़मरको होवेग़म्। चश्म वह नरगिसकवँलसे खिलेहैं गोया बाग़े इरम्। देखकै बेनीकी तेज़ीको हरयकका हो नाकमेंदम्। गज़बफड़क है तेरेनथुनों की कहें किसतौरसेहम्। रुखसारोंपरछुटा पसीना जैसे दोदरियाये अगम्। बातबातमें दिल्लगी शीरीं सखुन औज़बांनरम्। हरएक आनमें जान नि-कालै अदाअजायब हुस्नेयम्। चालमें छलबल इशारे नहींतेरे आफ़तसेकम् ४ और जो करूँ तारीफ़तेरेदंदां की ऐदिलजाने दिलम्। या वह गौहर है बेशक़ीमत याने हीरोंकी क़िसम्। देखलबोंपर पान कि लाली ला-लोंका रुतबाहोकम्। खालेज़कनपर कर उगद सुरैया हुआखतम्। चाहेजनखदां देखकेतेरी चाहमें डूबाकुल आलम्। क़दवह क़यामतकी जिस्से सरोंसही को हो मातम्। गलासुराहीदार औ सीनासाफ़ आईनासा उत्तम। चालमेंछलबलइशारे नहींतेरेआफ़तसेकम् ५ दस्तवह नाजुकगोलकलाईहिनाहथेलीमेंरहीरम्। देख वहसुर्खीखूनेदिलकितनोंकाहो दममेंदम्। नाखूंवोगोया हिलाल औ मखमली मुलायमबना शिकम्। नाफ़वह सागर कमरचीतेसी वहज़ानूं नरके थम्। देखझलक

क़दमोंकी तेरे पैरोंमें आनकर पड़ापदम्। बनारसीकिहैं मैं आशिक़ तेरे नामकाहूं हम्दम्। नारंगीसीएंड़ीतलुवे मलैं तेरे बाबा आदम्। चालमें छलबल इशारे नहीं तेरे आफ़तसे कम् ६॥

कूचेजानाकी दिलपर गरज़रा किसीके हवालगी। रहानीमजां न उसकोताबे उम्रतकदवालगी। अदाहुआ जीजानसे जिसको प्यारीतेरी अदालगी। गदाहुआवह इश्क़की जिसके दिलपर गदालगी। सदाअनलहक़क-हूं ज़बांसेमुझे वहप्यारी सदालगी। खुदीमिटगईखुदा की याददिलपर खुदालगी। चोटइश्ककी जिसके दिल पर ज़रालगी या सिवालगी। रहानीमजां न उसकोताबे उम्रतक दवालगी १ तिलाकरदिया मिसकोख़ाकपातेरी उसे यकतिलालगी। दिलादे अपनादीद तबीअततुझ से ऐदिलालगी। सिलायक्योंकरजख़म जिगरपर जिस के इश्क़की सिलालगी। मिलाख़ाकमें ख़ाकसारी जिस को कामिलालगी। इश्क़के बीमारोंको और कोई दवा न तेरे सिवालगी। रहानीमजां न उसको ताबे उम्रतक दवालगी २ बलाकरैंदिनरात इश्क़की जिसकेपीछें बला लगी। भलाहो क्योंकर वह जिसको तेगइश्क़की बला लगी। मलाकरूं तलुवे तेरे मुझको यह चाह बरमला लगी। चलालामकांचाल क़दमोंमें मेरेचंचला लगी। तूहै समामैं परवाना मुझको तो लौ तेरी वह आलगी। रहानीमजां न उसको ताबेउम्रतक दवालगी ३ अथाहै दरिया इश्क़काकहो इसकी किसकोथालगी। नथाइश्क़ मेंवहडूबा हरगिज़इसकी नथालगी। कहाछंद देबीसिंह

नेउन्हेंइश्क़की प्यारीकथालगी। जत्थावालेहैं जोशायर उन्हेंबात यहयथालगी। बनारसीकोसिवाइश्क़के और बात नहिं रवालगी। रहानीमजां न उसको तावे उम्र तक दवालगी ४॥

रहेउम्रभर दरियामें निकलेतो खुश्कगौहर निकले। सदआफ़रीं है जो मेरी चश्मसे मोती तरनिकले। मिजैं की नोकोंपर जिस दम वह अश्क हमारे तुलनिकले। अजब ताज्जुबहुआ ज्यों खारके ऊपर गुलनिकले। चश्महमारे उन्हें देखनेको जो यहखुलखुल निकले। अश्क जो गुलरू बने तो दीदेभी बुल्बुल निकले। गरनिकले इलमास तो क्या वहभी सूखे कंकरनिकले। सदआफ़रीं है जो मेरी चश्मसे मोतीतर निकले १ कहौं मैं क्या क्या तशबीहूं जोबनबनकर आंसूनिकले। मैं वहदतमें किगोयाकरते बिहिश्तसेचूंनिकले। मैंनेकहाऐअश्कमेरी चश्मों से जिसतरह तू निकले। क्या ताक़तहै जो ऐसी लड़ी बनके लूलूनिकले। कहाजवाहर निकले तो वहभी श्यामल पत्थर निकले। सदआफ़रीं है जो मेरी चश्मसे मोती तरनिकले २ रोया फ़िराक़े यार मैं तो क्या क्या अश्कबनूबनू निकले। यक़ीं यहहुआ कि दरिया इसी में गंगोयमुननिकले। और भी कुछकहताहूं सुनो इस ज़बां से जोकि सखुननिकले। अब्र पुतलियां बनी तो चश्म भी दोसावन निकले। अश्कमेरे पुरआबहैं गौहर खाली खुश्क जिगर निकले। सदआफ़रीं है जो मेरीचश्म से मोतीतर निकले ३ फ़ुरक़तेजानांमें जोकभी हमरोते ज़ारज़ार निकले। तार न टूटा हारसेतोफ़ा गुथेहार

निकले। क्याताक़त इसदरियाके गर वारसे कोई पार निकले। बनारसी कहै जो निकले मगर तो हशीयार निकले। और जो निकले रतन वहभी अश्कों से मेरे बतर निकले। सद्आफ़रीं है जो मेरीचश्मसे मोतीतर निकले ४॥

तेग़लगै तरवारलगै औ तीरलगैतो चैनपड़े। नैन के मारे तड़पते हैं कितने बेचैनपड़े। एकझलक मूसा को नज़र गरपड़ी तो वह लगगईनज़र। गिराकोहपर न उसको तनोबदनकीरहीख़बर। जिसेइशारे रोज़करै वह क्योंकर उसकाहोवेगुज़र। जियेकिसतरे और फिर मरेभला वहकहो किसपर। दिलकाहाल दिलही जानै जो ज़ख़्माजिगरपर ऐनपड़े। नैनकेमारे तड़पते हैं कितने बेचैनपड़े १ तोपलगै बंदूक़लगै तो इसकी भी हो दवाकहीं। अगर दुगाड़े नैनकेलगैं तो फिर वह बचै नहीं। बरछीसे बचगये कटारीकी चोटैं कितनोंने सहीं। नोकपलककी ज़राभीचुभी तो वह रोदियेवहीं। नींद कहां आती है जागते हैंगे तो दिनरैनपड़े। नैनकेमारे तड़पते हैं कितने बेचैनपड़े २ बांकमें है क्या बांकपना और ख़ंजरमें वह आबकहां। चश्मकेआगे दिखाई देहै किसीका रुआबकहां। अगर नशेकीकहो तोदेखीऐसी भला शराब कहां। मस्तानों से भी गरपूँछो तो आये जवाब कहां। लाखोंदल कटजायँ मेरे क़ातिल की जिधरकोसैनपड़े। नैनकेमारेतड़पतेहैं कितनेबेचैनपड़े ३ वहहैंचश्मख़ूँरेज़ अब इनसेख़ूनकादावा कौनकरे। डार में चढ़के बोला मन्सूर अबहम नहींमरे। उसे मिले

दीदार जो आशक़ मस्ताने हैं सरसेपरे। बनारसीकहै हम सरमद्के पीरसुन हरेभरे। शबोरोज़ हरवक्तज़बां से कहतेहैं यहीबैनपड़े। नैनके मारे तड़पते हैं कितने बेचैनपड़े ४ ॥

मनकोमारके बनायामुर्दा जब यह तनुआबादकिया। पहनके कफ़नी फ़क़ीरोंने तो कफ़न आबाद किया। बस्तीको समझे उजाड़ सहरा औ बन आबाद किया। मालख़ज़ाना तर्ककर फ़क़्रकाधन आबाद किया। लौमें शोलेनूरके अपना जलाके मन आबाद किया। आह से अपनी मेहर औ चरख़ेकोहन आबादकिया। जिसेकहैं वीरानासब मैंने वह वतनू आबादकिया। पहनके कफ़नी फ़क़ीरोंने तो कफ़न आबाद किया १ गुलखाखा गुलबदनपै मैंने वह गुलशनू आबाद किया। जिसगुलशनू से गुलोंकाहुस्न चमनू आबादकिया। कहकेज़बांसे वह कुमबेइजनी अपना सखुन आबाद किया। जिलायामुर्दा हुकुमसे उसका कफ़न आबाद किया। जीतेजी जोमरा उसीने तो मुर्दन आबादकिया। पहनके कफ़नी फ़क़ीरों ने तो कफ़न आबाद किया २ ग़म खाखा इस दिलपर हमने रंजोमेहन आबाद किया। दीवानों को पढ़के दीवानापन आबाद किया। तख्तसल्तनत छोड़ खाकपर वह आसन आबाद किया। जिस आसन से इन्द्र का इन्द्रासन आबाद किया। तर्क किया दुनियाँ का रस्ता और चलन आबाद किया। पहनके कफ़नी फ़क़ीरों ने तो कफ़न आबाद किया ३ अश्कसे अपने दुर्वेशोंने दुर रत्न आबादकिया। इश्क़

में पैदाकिया गम गममें जश्न आबाद किया। जिसजा आशक़ बैठरहे उसजा मसकनू आबाद किया। कहै देबीसिंह नाम अपना रोशन आबाद किया । बनारसी ने करकेइश्क़ आशक़ीका कफ़न आबाद किया। पहनके कफ़नी फ़क़ीरोंने तो कफ़न आबाद किया ४ ॥

मेरीआहका तीरतोड़ गरदूंको गयालामकांतलक। बेअदबी अबबहुतसीहुई कहूंमें कहांतलक। हुआइश्क़ का ज़ोरजब इस दिलमेंतो मैंने आहकरी। सातोंफ़लक को चीरकर लामकांकी राहकरी। वहांजोदेखानूरखुदा का उसने पाकनिगाहकरी। और जहांमेंनहीं फिर किसी की मैंनेचाहकरी । आशक़सादिक़ नाममेरायह रोशन है कुल जहांतलक। बे अदबी अबबहुतसीहुई कहूं मैं कहांतलक १ अजब मज़ापायाहै हमने अपनी आहसो ज़ांकेबीच। हुस्नखुदाई दिखाई देहै मेरी जांके बीच। नहींवहजलवा मुल्कमेंदेखा और नहूरगिलमांकेबीच। नहीं मेहरमें नहीं वह झलक माहताबांके बीच। मेरी आह रोशनहै सातोंज़मीं औ कुल आसमांतलक। बे-अदबी अबबहुतसीहुई कहूं मैं कहांतलक २ इसीआह से इश्क़ यह पैदाहुआ और आशक़नाम हुआ। इसी आहसे जहांमें सारे मैं बदनामहुआ।इसीआहसे हुआ सखुनमस्ताना मस्तकलाम हुआ । इसी आहसे वह पैदा मये वहदतका जामहुआ । मेरी आहहै लिखी देख लो जांके कलमेको राहतलक। बेअदबी अब बहुतसी हुई कहूंमैं कहांतलक ३ इसी आहसे कुफुलतोड़के का-फ़रको माराहमने । इसीआहसे कियादुश्मन पारापारा

हमने। इसी आहसे पाया वह दिल में दिलबर प्यारा हमने। इसीआहसें करदिया फ़नां रंजसाराहमने। बनारसीकहै जहां वहहकहै मेरीआह है वहांतलक। बेअदबी अबबहुतमीहुई कहूं मैं कहांतलक ४॥

हमआशक़हैं हमेंनछेड़ो छेड़केपछतावोगेतुम। आह सेगरदूं गिरपड़ैगा तोदबजावोगेतुम। गरहमको छेड़ोगे तो निकलैगी इस दिलसे आतिशेआह। आगलगैगी वह जिससे कुल जहान होवेगातबाह। कहां भाग के बचोगे तुम फिर कहीं नहीं पावोगे राह। हक्कुलायेबातें हैं इसकाहै अल्लाही गवाह। जिसने आशक़को छेड़ा वह नहीं बचा हरगिज़ वल्लाह। क़समखुदाकी बात यह कुल जहानमें है आगाह॥

शेर–तुम्हें वाजिबनहीं है आशक़ोंको ज़ार दिखलाना।
जोहोवेनातवां उसको न ज़ोर औ शोर दिखलाना॥
अगरतुमज़ोरदिखलावोतोफिरमतकोर दिखलाना।
जोमांगे इश्क़से मैदां तो उसको गोर दिखलाना॥

आशक़केदिलकोकभीसतानेसे न चैनपावोगेतुम। आह से गरदूं गिरपड़ैगा तो दबजावोगे तुम १ शबोरोज़ हम आपमरे रहतेहैं हिज्रग़मकेमारे। हमेंसताना तुम्हें नहींवाजिबहै मेरेप्यारे। अभीआहगर करूंगा तो बरसैंगे फ़लकसे अंगारे। कोईबचैगानहिं मरजायँगे कुल बिनमारे। मेरीआह से डरें अवलिया पीर पैग़म्बर भी सारे। इसीवास्ते नहीं भरताहूं में आहोंकेनारे॥

शेर–अभीअगर उफ़करदूं कुलजहां पलमें उलटजाये।
ज़मींऊपरहो और ये आसमां पलमें उलट जाये॥
ये मोसम सब उलटजाये समांपलमें उलटजाये।

हरेकदरियाउलटजाये तवां पलमें उलट जाये॥

हमतो आपीजलेहैं हमकोऔरभीजलाओगे तुम। आह से गरदूंगिरपड़ैगा तो दबजावोगेतुम २ छेड़ाशम्सतबरेज़कोवहमुल्तानू अबतलकजलतीहै। वहांसे आतश देखलो अबतकनहींनिकलतीहै। और छेड़ा सरमदको दिल्ली इधरसेउधर उछलतीहै। आशिक़ेसादिक़केआगे रुसतमकीनहीं चलतीहै। मेरीआहसे शमाहैरोशनआतश अबतक बलतीहै। काफ़रको येजलादेती है औ मुझको फलतीहै॥

शेर——निकालूंदिलसे मैंगरयारब अपनी आहसोज़ाँको।
जलाडालूं हज़ारों कोसतक जंगलबियाबाँको॥
करूँ मैं खाकसा इस आहसे बस्ती व वीरांको।
क़यामत आहसे करदूं दिखाऊँ मैं वह तूफांको॥

छेड़छाड़गर करोगेआशक़से तोघबरावोगेतुम। आह से गरदूंगिरपड़ैगा तो दबजावोगेतुम ३ जिसने आशक़ को छेड़ा फिर उसकाघरबरबादहुआ। गयाशहरकोनहीं वहदुनियामें आबादहुआ। दोजख़ उसको मिली और वहबिहिश्तसेबेदाद हुआ। नाम उसीका जहांमें काफ़र और जल्लादहुआ। येहैसखुन आशक़ोंका इसपर जिस जिसको एतक़ाद हुआ। दोनोंजहांमेंउसीका भलाहुआ दिलशादहुआ॥

शेर——सदा ये आशक़ों कीहै भलाहोवे भलाहोवे।
अदापरउसकीऐदिलदेखिये किसदिन अदाहोवे॥
उसीकानाम रोशनहो जो उल्फ़त में जलाहोवे।
कहै ये छन्द देबीसिंह मेरा दिलबर खुदाहोवे॥

बनारसी यहकहै अगरनापाक इश्क़गावोगे तुम।

आहसे गरदूं गिरपड़ैगा तो दब जावोगे तुम ४॥

खुदातूहै बरहक़ तो मैंभी हक़्ज़बांसेकहताहूं। आब जोतूहै तो मैंभी लहर बहरमें रहताहूं। अगरतू है आतश तो मैं भी उसीका अङ्गाराहूंगा। तिलाजो तूहै तो मैं ज़ेवर तेराप्याराहूंगा। गरतूहै सीमाबतो मैंभी सनम् पारापाराहूंगा। आहनतूहै तोमैंभी बनातेरा आराहूंगा। जोतूहै दरियाव तो मैं क्यां मौजरवांहो बहताहूं। आब जोतूहै तो मैंभी लहर बहरमें रहताहूं १ तुहीतोदममेंदम तो मैंभीआदमकहलाताहूं। हुस्नजोतूहैतोमैंजलवातेरा दिखलाताहूं। गरचे तू ख़ामोशरहै तो मैं नहींज़बां हिलाताहूं। तुहीहै मेरा तोमैं प्यारेअबतेरा कहाताहूं। तुही नहींग़मखायतो फिर मैं जहांमें किसकीसहताहूं। आब जो तूहै तो मैंभी लहर बहरमें रहताहूं २ तेरानहीं कोइ दीन तो मेरीजातका कौनठिकानाहै। तुझे न जाना तो फिरमुझको किसने पहिंचानाहै। तूहै फ़ख़्र तो मेराभी दिलफ़क़ीर तेरादीवानाहै। तूहै लामकां तो मेरेमकांको किसनेजानाहै। तूहै सांवलियाशाह तो प्यारे मैं नरसी महताहूं। आबजोतूहै तो मैंभी लहर बहरमें रहताहूं ३ तूहै शम्स तो मैंभी शम्सतबरेजजहांमें आयाहूं। मुझमें तूहै और मैं तेरेबीचसमायाहूं। गरतूनापैदातो मैंभीनहीं किसीकाजायाहूं। बनारसी कहै जोतू कुदरत तो मैं भी मायाहूं। तू ने पकड़ा हाथ मेरा मैं बाजू तेरागहताहूं। आबजोतूहै तो मैं भी लहर बहरमें रहताहूं ४॥

खुदातूगरहै इश्क़तो मैं आशक़हूं हरनूरानीका। शान

जोतूहै तो मैं पुतलाहूँ तुझलासानीका। गरतूराज़ेनिहां है तो मैं पोशीदा इसतनूमेंहूं। तूहैगुलिस्तांतो मैंभीगुंचा उसगुलशनूमेंहूं। तूहैचाह तो मैं भी डूबा प्यारेचाहज़-कनूमेंहूं॥ भलातूलौहै तो मैंभी हरदम उसीलगनूमेंहूं। तेरीनहीं तस्वीर मुझेखींचे यह न रुतबामानीका। शान जो तूहै तो मैं पुतलाहूँ तुझलासानी का १ तू है पाक तो मेराभी दिलसाफ़ मिस्ले आईनाहै। औ जान जो तूहै तो मेरा तेरेहाथमें जीनाहै। अगर तू दानिशवरहै तोदिलमेरा दानाबीनाहै। बुलंदहै तू तो मेरा तेरेबाम परजीना है। तूहै मौजदरिया तो मैंभीहूं वह बुलबुला पानीका। शान जो तूहै तो मैं पुतला हूं तुझलासानी का २ तूहै खुदा तो मैंभीतेरसे जुदानहीं जीजानसे हूँ। यक़ीन तूहै तो मैं साबित अपने ईमानसेहूँ। तूहैदोस्त मेरा तो मैं तेरायारभी हरएक आनसेहूँ। तूहै तसव्वर तो मैंभी पूराअपने ध्यानसेहूँ। तूहै लिबासे नङ्ग शौक है मुझेतने उरयानीका। शान जो तूहै तो मैं पुतलाहूँ तुझलासानी का ३ तूहै एक तो मुझसा दूसरा और जहांमें कौनसाहै। कल्मातूहै तो मेरासिवा कुरांमें कौन साहै। देबीसिंहकहै बगैरतेरे मेरीजांमें कौनसाहै। ना-तवानी में और ताक़तेतमामें कौनसाहै। यहीसखुनहै विर्दआशक़े बनारसी हक्कानी का। शान जो तूहै तो मैं पुतला हूँ तुझलासानीका ४॥

तुख्मलाल याकूतकीटहनी बर्गज़मुर्रद मोतीगुल। फल लटके मणियों के जिसमें जो देखे लेले बिल्कुल। शबनमहै इलमास कि उसके बर्गबर्गपर पड़ीहुई। ह-

रेक शाख कुन्दन औ नीलम से है उसकी जड़ीहुई। जिसके हाथमें उस दरख्तकी एकभी यारब छड़ी हुई। सात बादशाहतसे भी वह क़ीमत उसकी बड़ीहुई। उस दरख्तके मेवे से हरदम टपके तौहीदकिमुल्। फललटके मणियों के जिस में जो देखे लेले बिल्कुल् १ बनी मुरस्सेकी ज़मीन और फौवारेबिल्लौरकेहैं। उसदरख्त के ऊपर बैठे हरेक जानवर नूरके हैं। फुनगी है पारस की उसमें रखवाले सब हूरके हैं। वह दरख्त नज़दीक है उसके ख़रीदार सब दूरके हैं। सौदा उनके बनै वहां पर करो न जो कोइ शोरोगुल्। फललटके मणियों के जिसमें जो देखे लेले बिल्कुल् २ उस दरख्त को हमने तो आबेहयातसे सींचाहै। बड़ी मशक्कतकरीरे अपनी करामातसे सींचाहै। किसीसे कुछनाहिं कामालिया अपनीही जातसे सींचाहै। क्या कोईजाने इसकोकी कौन धातु से सींचाहै। हुआ वह जब तैयार तो शैदा बना मेरा ये दिल बुलबुल्। फललटके मणियोंके जिसमें जो देखे लेले बिल्कुल् ३ उस दरख्तकी सायामें हम टांग पसारे सोते हैं। अगचैं जायेंकहीं तो फिर हम उसी तुख्मको बोतेहैं। जहांपर अपना दिलचाहै वैसाहीशजर सब होते हैं। बनारसी यह कहै कि उसपर कुरान पढ़ते तोते हैं। उस दरख्तकी हवालगे तो ज़िगर की आंखेंजायेंखुल्। फललटके मणियों के जिसमें जो देखे लेले बिल्कुल् ४॥

तुख्मखुदा औरशाखपयगम्बर बर्ग औलियावलीहैं गुल्। फलहैं उसमेंफ़क़ीरपूरे फ़क़ीनवहसमझौंबिल्कुल्।

ऊपर उसकाबीजहै और नीचे जिसकेलटकैंडाली। अ-ख़्तरकी शबनमहै उसके बर्गबर्गपर उजियाली। माहो मेहरचौकीदेते दिनरातकरैं हैं रखवाली। नक्शाउसका नबीनहै जिनकी दोजहांमें है लाली। अपने अपनेदीन के पक्षी करेहैं उसपर शोरोगुल्। फलहैं उसमें फ़क़ीर पूरेफ़र्क़ न वहसमझैं बिल्कुल् १ ज़मीन उसकी आस-मानहै जहांसे ये कुल जहांहुआ। वहांसे टपकानूर तो मैंभीआकर पैदायहांहुआ। फ़ख्रहै उसकी खुशबूजिसने पाई वह फिरनिहांहुआ। शरेहै उसकी तरहतरहदारी से शजरवहअयांहुआ। वहदतकी लज्ज़त उसमें लेता है मेरा यहदिल बुल्बुल्। फलहैं उस में फ़क़ीर पूरेफ़र्क़ न वह समझैं बिल्कुल् २ जड़उसकी बाबाआदम जिस से इसआदममें दम् है। साया उसकी क़ुदरत और आलम जिसका यक आलम है। हवाहै मामा हवा जिसे छूगई उसे फिर क्या ग़म है। यादइलाही जोकि करै वह इन बातोंसे महरमहै। नज़र उसीको आये जिसकी ग़फ़लतका परदागयाखुल्। फलहैं उसमें फ़-क़ीरपूरे फ़र्क़ न वह समझैं बिल्कुल् ३ सदाहै उसकी क़ुरान् जिसने सुनी उसे फिर होशहुआ। दिलमें अ-पने गौरकिया कुछ समझके वह खामोशहुआ। राज़ उसीकोखुला कि जिसका ज़रा उधरको होशहुआ। ज़बां से कुछनहिं कहसक्ता जो दिलमेंजुनू और जोश हुआ। बनारसीकहे उसके मेवेमेंतो भरीहै रहमकामुल्। फलहैं उसमें फ़क़ीरपूरे फ़र्क़ न वह समझैं बिल्कुल् ४॥

बुराकिया तो भलाहुआ चोरी करनेसे साह बने।

गदासे होगये बादशाह बन्देसे अल्लाहबने। ज़ातसे हो बेज़ात जो कोई तो उसका वह दीनबने। शकल शबाहत बिगाड़े तब चेहरा रंगीनबने। इमानसे छोड़ें इमानको पूरा जभी यक़ीनबने। लौमेंसोले नूरके जलें तो वो लौ लौलीनबने। ज़बांकटी तब बोलनलागे फूटे नयन निगाहबने। गदासेहोगये बादशाह बन्देसेअल्लाहबने १ करके गौर देखा हमने तो आजाब से बड़ासवाबबने। लाजवाब गरसनमूसे होतो खूब जवाबबने। मय वहदत कहते हैं उसे जो अश्क़से मेरे शराबबने। लज्ज़ते शीरींमिले जब जलके जिगर कबाबबने। बुतखानेसे बिहिश्त और मयखानेसे दरगाहबने। गदासे होगये बादशाह बन्देसे अल्लाहबने २ शिरको काटके अपने दस्तपररक्खें तोसरदारबने। मालमुल्क सब तर्ककर बैठे तो ज़रदारबने। तायर दिलको कभी न उड़नेदेतो वह परदारबने। ज़िन्दाउसको समझतेहैं हम जो मुर्दार बने। चलनसे जब बदचलनहुये तोलामकानकी राहबने। गदासेहोगये बादशाह बंदेसे अल्लाहबने ३ जिसेकहैं सब हराम हमने देखावही हलाल बने। घोलके जिसने लगालिस्याही वह फिरलालबने। जोकिहुये पैमाल जहांमें वह साहबे कमालबने। बनारसीके सखुन पर क्या ताक़त कोइ ख्यालबने। ज़मींसे होगये आसमान और. अख़तरसे हममाह बने। गदासे होगये बादशाह बंदेसे अल्लाहबने ४ ॥

मैंआशक़हूं रंजोअलमका गर ये मेरे पास न हो। मुझमरीज़को तो फिर यकदम् जीने की आस न हो।

बेचैनी से उल्फ़तहै बेकली से याराना अपना। हिज्र है अपना दोस्त औ वतन् है वीराना अपना। आहकी नक़दी पासमें है खाना है ग़मखानाअपना। जीनायही है किसीके ऊपर जीजाना अपना॥

शेर—फुरकते यार वह क्याक्या मज़े दिखाती है।
बेकरारिहि मेरे दिलको बहुत भाती है॥
वस्ल होताहै जो वो बात चली जाती है।
इन्तजारीसे यह तबिअ़त नहीं घबराती है॥

रंगज़र्द नहींहो अपना औ चेहरामेरा उदासनहो। मुझमरीज़को तो फिर यकदम् जीनेकी आसनहो १ जो आशक़ सादिक़हैं उनकी जीस्तजानका खोनाहै। यही खुशी है जो उसदिलबरकी यादमें रोनाहै। ख़ाककेसोने से बत्तर पन्ना औ चाँदी सोनाहै। वज़ूसे बेहतर हमैं अश्क़ोंसे मुँहका धोनाहै॥

शेर—टपक् के आँसू जो रुखसार पर ढलक्ते हैं।
तो मेरी आँखमें जौहर हरएक चमक्ते हैं॥
ये मस्त दोनों हैं और दोजहांको तक्ते हैं।
दीवानादीदके हैं अब ये कब झपक्ते हैं॥

ज़ोरजुल्म और जफ़ामें अपना दुरुस्तहोशहवासन हो। मुझमरीज़को तोफ़िरयकदम् जीनेकी आसनहो २ प्यास हमारी बुझती है इस खूने ज़िगरके पीनेसे। वा-क़िफ़हुआहूं मैं अपनी चाहके ज़रा करीनेसे। कामनहीं काशीसे मुझे नहीं मक्के और मदीनेसे। और न आरज़ू हमैं मरनेकी न मतलब जीनेसे॥

शेर—आतिशे इश्क़से जलके ज़िगर तरहोता है।
ज़ेरसाये से शबनम् के ये जबर होता है॥

औ बेख़बरीसे दिलहर्गिज़ न ख़बरहोता है।
नफ़ा है इश्क़ में येही जो ज़रर होता है॥

गर्चे क़त्ल नहीं होवें हमतो काम इश्क़कारासनहो। मुझमरीज़को तो फिर यकदम् जीने की आसनहो ३ दर्द हमारा दिल्बरहै हरवक्त इसीसे यारी है। बेदर्दोंसे भी अपनी कुछनहीं गिल्ले गुज़ारी है। सूलीपर मंसूर ने वो अनल्हक् सदा पुकारी है। जानगई तो बलासे नाम तो उसका जारी है॥

शेर—इश्क़बाज़ी में अगर जानकी बाज़ीहोजाय।
तो तबीअत यह मेरी खूबसी राज़ीहोजाय॥
चाहैहमपर हो जफ़ा या दग़ाबाज़ी होजाय।
रज़ामेंराज़ी है उसके जो वह राज़ीहोजाय॥

बनारसी कहै अगर्चे मेरा मुरशद देवीदास नहो। मुझमरीज़को तो फिर यकदम् जीनेकी आसनहो ४॥ कहा ये मुझसे रंजने गर्चे आशक़ मेरे पास न हो। तो दुनियामें आशक़ी आशक़की फिर रासनहो। इश्क़ है मेरामकां औ मैं रहताहूं उसीके ख़ाने में। वह नहीं आशक़ कि जिसके दर्द न होवे शानेमें। तीरमें क्या है लुत्फ़ मज़ा मिलजाय जो रहो निशानेमें। बस्तीमेंनहीं गुज़र आशक़हैं मस्तवीराने में। सूखगया मजनू औ वह ताक़त बनीरही मस्तानेमें। अबतक जिसकानाम रोशनहै सुनो ज़माने में॥

शेर—है कहां तकलीफ़ व तलुवों में जो चुभते हैं ख़ार।
हँस पड़ा मंसूर तो शरमा गई उस जायेदार॥
रंज ये कहताहै आशक़ वह करै जो जां निसार।
हर क़दमपर तीरहो पर दिलमेंहो वह ज़िक्रेयार॥

चोट न आशक़सहै औ अपना खूंपीनेको प्यास न हो। तौ दुनियामें आशक़ी आशक़की फिर रास न हो १ दम्भरकाहै रंज औ फिर राहत है क़यामत तक बाबा। उठाले शिरपरअलम तो देखे लुत्फ़ इसमें क्याक्या। रंज यही कहताहै जो आशक़पक्काहो तो इधरकोआ। जुल्म से मुतलक़ न डर और खौफ़ न अपने दिलमेंखा। शिरको काटकर सरमदने जिसवक्त हथेलीपररक्खा। उसीवक्त से नाम मुतलक़ न बादशाह का रक्खा॥

शेर–करदिया तख्तातबाह देहलीकी अबउड़ती है धूल।
क्याखतासरमदकीथी थीशाहकी मुतलक़यहभूल॥
देखिये अब इस गुलिस्तां से वह कब आयेंगे फूल।
गर करेथे अर्ज़ आशक़ तो खुदा को हो क़बूल॥

रंजने ये फ़र्माया आशक़ को मेरा कुछ पास न हो। तो दुनियामें आशक़ी आशक़की फिर रास न हो २ आरे से चिरजायँ नहींघबरायँ जो आशक़हैं पक्के। सीनासामनेकरैं दिलबर जो चोटमारेंतक्के। कभी न निकलैंमकां से गर वह लाखवजेके देधक्के। दरयारको छोड़नहींजायँ वह काबे औ मक्के। जैसे जुआरी जोरूहारके होजावे हैं भवचक्के। तौ भी अपनी ज़बांसे कहाकरैं वह पौछक्के॥

शेर–इश्क़ में बाज़ी है शिरकी काम दौलतका नहीं।
इससे बेहतर खेलहमने और कोइ देखा नहीं॥
जिसने अपना शिर न बेचा कुछ मज़ाचक्खा नहीं।
आशक़ोंने जीतेही जी तनु बदन रक्खा नहीं॥

लाखवजेके सदमोंमें गर दुरुस्त होशहवास न हो। तौ दुनियामें आशक़ी आशक़की फिर रास न हो ३ खाक में गर मिलजाय गोरसे गुलहोकरके निकलते हैं। अजब

है आशक़ मर्गके बादभी फूलेफलतेहैं। रोशनहों कुल आलम् में जो खड़े इश्क़में बलते हैं। उन्हें देखकर जो पत्थरहों तो वह भी पिघलते हैं। देबीसिंहके सखुनपर शायर हरेक हाथको मलते हैं। चारों तरफ़से वाहवाह करैं औ बहुत उछलते हैं॥

शेर—ये कलामें मारफ़त है रंज से राहत मिलै।
जोकि डूबा चाह में तो फिर उसे चाहत मिलै॥
ग़मअगरखाये तो उसको रोज़ फिरन्यामत मिलै।
दीदउस दिल्बरका जीतेजी औ ताक़थामत मिलै॥

रंज ये बोला बनारसी से गर तू मेरा दास न हो।
तौ दुनिया में आशक़ी आशक़की फिर रास न हो ४॥

बाग़ बाग़ हुआ बाग़ आप जब आये बाग़े इरम् के बीच। फूलफूलके गिरपड़े हरयकफूलहरक़दमकेबीच। जुल्फ़ मुसल्सिल देख पेंच में आया सम्बुल चमन के बीच। नैननेतेरे शरमदी नरगिस कालेहरिणके बीच। फूलरही है फुलवारी वो प्यारे तेरी फवनके बीच। क़द पर सदक़े करूं मैं सर्वसही गुलशनके बीच॥

शेर—करूं लबपर तसद्दुक़लाल गुललाले के दोटुकड़े।
औ दंदां मोतियां देखें तो उनकी आब सबउत्तरे॥
अगर्चे मुसुकराके और करै कुछ बात तू हँसके।
तो होवे बेकली हरएक कली फूटैं खिलैं गुंजे॥

कौनवोहैखुशबू जोबसी है नहीं तेरेदमक़दमकेबीच।
फूलफूलके गिरपड़े हरएकफूल हरक़दमके बीच १ रुख़सारों को देख गले गुलगुलाब तेरी लगन के बीच। सदा सुने तो धुनेशिर तूती आगिलगे अगनके बीच। भराहुआहै चाहहुस्नका आपकी चाहे ज़कनके बीच।

डूबगये हम न दहशत करी ज़रा इस मन के बीच ॥

शेर—फ़िदा दिलहै गुलेराना तेरे ऊपर हरेक गुलका।
दिखाबादेबहारी और पिलादे जाम उसमुलका॥
मचैं वोक़हक़हे और चहचहे गुलहोतजम्मुलका।
खुलैंपरबाल कुमरी के कहा ले मान बुल्बुलका॥

शाख़शाख़हो हरी शजरकी लगे कमल हरकमल के बीच। फूलफूलके गिरपड़े हर एक फूल हर क़दम के बीच २ नज़रपड़ी जिसवक्त गुलिस्तांकी तेरे पैरहन के बीच। चाकगरेबां किया ग़श खा के गिरे गुलधरन के बीच। वहहै नज़ाकत आपमें ये है कहांजुही यासमन के बीच। बन बन के सब फूल फूले हैं तेरे योबन के बीच ॥ शेर ॥ हुआमुर्ग़ाने चमनका दिमाग़तर बूसे। महक आनेलगी उल्फ़तकी वो तुझगुलरूसे। सिफ़त में किसतरह तेरीकरूं कानमुँहसे। ख़ारकीबात न तूने करी कभी मुँहसे। लगीचाटने तलवे तेरे आई तरीशबनमकेबीच। फूलफूलके गिरपड़े हरएकफूल हरक़दम के बीच ३ मुरझायादिल हराहुआ हुई गुलज़ारीगुल बदन के बीच। ख़िज़ांकामुतलक़ नामनहींरहा गुलों के वतनकेबीच। झुकझुक के सब करैं डालियां सिजदा तेरे चरनके बीच। कहै देबीसिंह ख्याल तौहीद मारफ़त सखुनके बीच ॥ शेर ॥ खिंचा नक्शा मेरे दिलपर है वहतेरी सफ़ाई का। बसी तस्वीर आंखों में और है जलवा इलाहीका। किसी को ताजबख्शा और किसी को तख्त शाहीका। गदाई हमको दी जिसमें दिया दावा खुदाईका। बनारसी कहै ग़ज़बझलकहै तेरेक़दम

के पदमके बीच। फूलफूल के गिरपड़े हरएकफूल हर क़दम के बीच ४॥

कूचेजानामें गरकोईघरके ज़राक़दम निकला। फिर वो न निकला उसीकूचेमें उसका दम्‌निकला। ये है रास्ता सख़्तगर कोईइसमें नागहां आनपड़ा। जानबूझ के फिर वो देताहै इसी में जानपड़ा। कहीं तपिश में तपै कहीं कांटोंका नज़र मैदानपड़ा। क़दम क़दमपर अब हमको लुत्फ़इश्क़का जानपड़ा॥ शेर॥ हमैं गुलशन से भी बेहतर हैं इश्क़के कांटे। ये फ़र्शेख़ारके तोफ़ाहैं मुझे मख़मलसे। कहूं मैं किस्से सुनै कौन इश्क़के क़िस्से। जो देखै हाल हमारा तो कैसा भी हो रोदे। रहा वहांका वहीं देखने जो अपना हमदम निकला। फिर वो न निकला उसी कूचेमें उसकादम्‌ निकला १ मज़ाचाहका जिसने देखाहोगा वह डूबाहोगा। बहरेइश्क़में जो तैराहोगा वह डूबाहोगा। अश्क़ चश्मसे जिसके बहता होगा वह डूबाहोगा। चाहे ज़कनपर जो शैदाहोगा वह डूबाहोगा॥ शेर॥ बहरेउल्फ़त का किसीको भी किनारा न मिला। याखुदा नाखुदाका क्यांपर इशारा न मिला। किश्ती हरगिज़ न मिली कुछभी सहारा न मिला। थाह मुतलक़ न मिली दमभी गुज़ारा न मिला। लगा न थलबेड़ा उसजापरसे न कोई आदम निकला। फिर वह न निकला उसीकूचे में उसका दम्‌ निकला २ इश्क़को जो देखा तो खड़ा है मेरे शिरपर दार लिये। हुस्नको देखा तो वह धमकाता है तल्वार लिये। जुल्फ़ यही कहती हैं कि मैंने कितनेई आशक़ मारलिये। चश्म

इशारेकरैंहैं जादूकेहथियारलिये। कौनइसक़त्लके मैदां से निकल जायेगा। किसतरह काकुलेपेचां से निकल जायेगा। कोई न इश्क़के तूफ़ां से निकल जायेगा। न निकल जायगा गर जांसे निकल जायेगा। तानके अबरू तू जिसपर वहलेके तेग़ दुदम् निकला। फिर वह न निकला उसी कूचेमें उसकादम् निकला ३ क़त्लहुआ वह जिसने इस मैदां में आके क़दममारा। गिराज़मीं पर न उसने आहकी औ न दम्मारा। उसके हुस्नके अलम्ने एक आलम्का आलम्मारा। कहै देबीसिंह गया मैं भी इस्में उसदम्मारा। इश्क़ने दारपरमन्सूर को चढ़ायाहै। हुस्नने यारके कोहतूरकोजलायाहै। नूर ने जिसकेहरयकनूरकोबनायाहै। शहूर उसनेबेशहूरको बतायाहै। बनारसीकरतर्कजहांकोसीधाराहअदम्निकला। फिर वह न निकला उसीकूचेमेंउसकादम्निकला ४॥

जुल्फ़सिआसे मारसिआहै चश्मसेलाली मुलमें है। नक़्शाक़दका क़यामतधूम यह आलम् कुलमेंहै। सर से हर सरदारबने पेशानीसे जलवै खुरशीद। चीनेजबींकी वहहै तहरीर न जिसकी दीदोसुनीद। अबरूसे झुकी कमां औ पैदाहुआ फ़लकपर माहेईद। खंजरे बुर्राने पाई बाढ़किया लाखोंको शहीद॥ शेर॥ है क़ुरां में वह जो बिस्मिल्लाः अबरूसे बनी। औ अलीकी तेग़ भी वल्लाह अबरूसे बनी। और सिफ़त क्या क्या करूं मैं कहाजातानहीं। जो चलाझुकके तो उसको राह अबरूसे बनी। तुख़्मगुलका चर्चा गुलेराना यही तो हरबुलबुलमें है। नक़्शाक़दका क़यामत धूम यह आ-

लम् कुलमें है १ मिजैसे पैकाबने औ नस्तर चुभेरंगे जांपर आकर। खार भी उसदम् खटकने लगे मेरेवहां पर आकर। निगाहसे वह तलवार चली सो लगी नीम-जांपर आकर। आहवीमुतलक़ न ठहरी मेरी ज़बांपर आकर॥ शेर॥ है शरारत वह तेरी चितवनमें ऐ रश्के कमर। होरहा जीसे जहांके बीचमें जादूसेहर। लड़गई जिस शख्सकी वह आँख तेरी आँखसे। फिर उसे तेरे सिवा कुछ भी नहीं आतानज़र। वही ज़िक्र मयख़ाने में औ यही सदाकुलकुलमेंहै। नक़्शाक़दका क़यामतधूम यह आलम् कुलमेंहै २ बीनी से बना अलिफ़ तेरे रुख़ से वह पैदानूरहुआ। जिसकी झलकसे गिरामूसा औ ख़ाक क़े हतूरहुआ। लबसे लाले यहमन बने याक़ूत वह वहीं ज़रूरहुआ। औ दन्दांसेबने गौहर तो क्याही ज़हूरहुआ॥ शेर॥ है झलकहीरेमें ऐप्यारे तेरे दन्दान से। बर्क़भी चमकी वही दांतों में तेरीशानसे। औ ज़बां से बर्गगुल पैदाहुआ रंगीन वोह। हरसख़ुनशीरीं तेरा निकलै है क्याही आमसे। बादसबा कहती है यही औ वहीज़िक्र हरगुल में है। नक़्शा क़दका क़यामत धूम यह आलमकुलमें है ३ चाहे ज़कनसे आशक़ सादक़ के दिलमें वह चाहहुई। लगा झांकने कुएँ जिस जिस की उधर निगाह हुई। गलेसे मीना बना सुराही भी उसके हमराह हुई। कहै देबीसिंह सिफ़त किस्से तेरी अल्लाह हुई॥ शेर॥ थकगये लाखोंहि शायर करके सब तेराबयां। पर न पाया राज़तेरा तूतो है राज़ेनियां। किसकी ताक़त है जो हो आगाह तेरे हुस्नसे। यक

झलकमें गिरपड़ा मूसाभी होकर नातवां। बनारसीने यही लिखा कबि काशी गोकुल में है। नक़्शा क़दका क़यामत धूम यह आलम् कुलमें है ४॥

आशक़मैं हूँ उस गुलका जिसगुलपर फ़िदाहैं सारे गुल। बहारमेंभी न जिसके नाम ख़िजाँकाहै बिल्कुल्। सदारहै सरसब्ज़ वह उसकी महकसे मस्तानापनहो। दीद उसगुलकी करै तो दिलमें दीवानापनहो। अदासे उसशमशादकी आशक़में तो आशक़ानापनहो। क्यों नहीं गुंचेखिलें जब उसमें मुसुकरानापनहो॥ शेर॥ बनाये क्यों न उसगुलशनमें कुमरी आसियाँ अपना। गुले गुलज़ार गुलरू और जहाँहो बाग़बाँअपना। नहीं सैयादकाडरकुछ न मुतलक़ख़ौफ़नां अपना। मकां है ला-मकां अपना निशांहै बेनिशांअपना। गुंचेभी यही चटक चटकके करैं चमन में शोरोगुल। बहारमें भी न जिसके नाम ख़िजांकाहै बिल्कुल् १ पेंचसे जुल्फ़ सियः फ़ामसे दामें इश्क़पेंचा बनजाय। मुश्के खुतन भी महेक जुल्फ़ों से वह परेशां बनजाय। बालसेआये वहबालसम्बुल प-रजा जुल्फ़पेंचा बनजाय। नाफ़ै आहूका मुँहकालाहो घासेरैहांबनजाय॥ शेर॥ पड़े भूमरवो उस्के रुख़परजु-ल्फ़ोंका जो मुँहखोले। तो अशरतका हिंडोला देखकर खाये वहझकझोले। औरकाकुलसम्बुले कालनामुँहसे अपने कुछबोले। यक़ींएहै कि पीनेके लिये अपने ज़हर घोले। जुल्फ़ अम्बरीहैयांसोसने गुलहै तेरीकालीकाकुल। बहारमें भी न जिसके नाम ख़िजांका है बिल्कुल् २ चश्मसे नरगिस शरमिन्दाहो सरको झुकाय खड़ारहै।

आंख उसगुलसेकभी मुतलक़ न मिलायेखड़ारहै। क़द से सर्व सनोवर गुलशनमें गड़जाय खड़ारहै। दहनसे गुंचातंगहोके शर्माये खड़ारहै॥ शेर॥सफ़ाई देखकर उसकी समन मैलाहो गुलशन में। वोः नाजुकपन नजूही में जोकुछहै यारके तनमें। बिनादेखे हथेलीको तो खंउगलाकरै मनमें। सदा उसकी सुनेतूती तो फिरभागेकोई बनमें। शाख़शाखपै यही चहचहा करताहै शैदाबुल्बुल्। बहारमें भीं न जिसके नामाख़िजांकाहै बिल्कुल् ३

रश्केचमन् गुलबदनको गुलदेखे तो गरेबाँ चाककरै। हरएक गुलिस्तांका वोः यकदम् भरमें दम् नाककरै। गर्चे कोई मुर्गाने चमन जो उससे मुहब्बत पाककरै। बहरे इश्क़का खुदा उस आशक़को पैराककरै ॥ शेर॥ सबाआई जो गुलशन में तो उसकी क्या बन्आई है। नहीं वाक़िफ़थी जिसबूसेवो सब उसमें समाई है। नमुतलक़खार गुलशन्में न कुछ गुलकी बुराई है। नहीं दिल में लगा वोः बुल वहां जलवे खुदाईहै। बनारसी को उस गुलरूने पिलादिया वो जामेमुल्। बहारमें भी न जिस के नाम ख़िजांकाहै बिल्कुल् ४॥

जुल्फ़को तेरीमारकहै तो मार मारसे कटवाऊं। सम्बुले पेंचाकहै तो पेंचमें मैं उसकोलाऊं। क़दसेसबकी निस्बत दे तो खोदके उसको गाड़ूंमैं। अगर सनोवरकहै तो चमनसे अभी उजाड़ूं मैं। चालसे निस्बतदे जो फ़ील कीलातसेउसेलताड़ूं मैं। पंजयेमरजांकहै तो दस्तकेअभी उखाडूं मैं। काकुल को गर दाम कहै तो जालमें उसको उलझाऊं। सम्बुलेपेंचाकहै तो पेंचमें मैं उसकोलाऊं१

चश्मतेरे नरगिस जो कहै तो आंखको उसकी फोड़ूंमैं। दन्दां गौहर कहै तो दांत सब उसके तोड़ूंमैं। दहन को गुंचा कहै तो उसके मुँहको पकड़ मरोड़ूंमैं। जानके निस्बत ये दे तो जान न उसकी छोड़ूंमैं। अगरतेरीकाकुल उलझै तो क्योंकर उसको सुलझाऊँ। सम्बुलपेंचा कहै तो पेंचमें मैं उसको लाऊँ २ ज़कनको तेरे चाह कहै तो कुएंमें उसे डुबाऊँमैं। पेशानीको कहै खुरशेद तो उसे घुमाऊँमैं। गलेको मीना कहै तो गर्दन उसकी अभी कटाऊँ मैं। बीनी को गर अलिफ़ कोई लिखै तो उसे भुलाऊँ मैं। गेसूको कहै घटा तो उसका घटाके रुतबा मैं आऊँ। सम्बुले पेंचा कहै तो पेंच में मैं उसको लाऊँ ३ ज़बांको तेरी कहै बर्गगुल उसकी ज़बां निकालूँमैं। हिलाले अबरू कहै उसके टुकड़े करडालूं मैं। सीनेको कहै आईना तो उसे न देखूं भालूँमैं। कमरको तेरी अगर मूँह कहै तो उसे छिपालूँमैं। बनारसी कहै तेरे बालकी कहीं भी निस्बत सुनपाऊँ। सम्बुले पेंचा कहै तो पेंचमें मैं उसको लाऊँ ४ ॥

रंजको हम राहत समझैं औ दर्दको हम दिलबर समझैं। ग़मको अपनी गिज़ा समझैं और मुफ़लसी ज़र समझैं। अलम को समझैं ऐश और मरने को ज़िन्दगानी समझैं। जफ़ाको समझैं वफ़ा खफ़गी को मेहर्बानी समझैं। झूठको सच समझैं लेबास हमतनु की उरियानीसमझैं। आब को समझैंहमआतश आतश को पानी समझैं। ज़ेरको समझैं ज़बर और कमज़ोर को ज़ोरावरसमझैं। ग़मको अपनी गिज़ा समझैं और

मुफ़लसी ज़रसमझैं १ मुर्देको ज़िन्दा समझैं और सि-
तम्को बड़ारहम समझैं। जहांको समझैं फ़ना हरदम्
को मुल्के अदम् समझैं। बदीको समझैं नेकी दुश्मन
को अपना हम्दम् समझैं। जहां पै समझे वहां पर
हम तो वोही सनम् समझैं। नादां को दाना समझैं
और फ़िक्रको बड़ा फ़ख़र समझैं। ग़मको अपनी ग़ि-
ज़ासमझैं और मुफ़लसी ज़रसमझैं २ गुलको समझैं
दाग़ दाग़को हम अब गुलदस्ता समझैं। उजाड़ सम-
झैं शहर को सहराको बस्ती समझैं। ज़ख़्म को गुल-
लाला समझैं औ रोते को हँसता समझैं। दीवानों को
अक़्बर सिड़ी को हम मस्तां समझैं। आहको समझैं
यादयारकी अश्कों को गौहर समझैं। ग़मको अपनी
ग़िज़ा समझैं और मुफ़लसी ज़र समझैं ३ मारको
समझैं प्यार यारकी गाली वही दुआ समझैं। बेजाको
हम बजा समझैं औ मर्ज़ सफ़ा समझैं। इश्क़को हम
आशक़ समझैं माशूक़को वही खुदासमझैं। क्याकोई
समझै जो हमसमझैं वो और कोई क्या समझैं। बना-
रसी का हरेक सख़ुन आशक़ का ख़ूनेजिगर समझैं।
ग़मकोअपनीग़िज़ासमझैंऔरमुफ़लसीज़रसमझैं ४ ॥

चाहको समझे चाहे ज़कन ज़ंजीर को हम ज़ेवर
समझे। ख़ाकको समझे पैरहन ज़मींको फ़रशेतरसम-
झे। सब्रको समझे शुक्र और नातवानी को ताक़त स-
मझे। ख़ारको समझै चमन औ हिज्रको हम उल्फ़त
समझै। तलख़को समझे शीरीं दिलमें ज़हरको हम
इसरत समझै। सङ्गको समझे मोम और आफ़तको

अशरत समझे। दारको समझे यारका जीना तीरको तेरीनज़र समझे। ख़ाक को समझे पैरहन ज़मीं को फ़रशेतर समझे १ सुबहको समझे शाम शामको अब हम परवाना समझे। माहको समझे मेहर और धूप शामियाना समझे। वहशतको वहदत समझे रोनेको तान गाना समझे। गम्रको समझे मुसलमा मौतको जीजाना समझे। मकांको अब्र समझे लामकां सनम का कूंचादर समझे। ख़ाकको समझे पैहरन ज़मीं को फ़रशेतर समझे २ जुल्मको समझे जशन बुतेख़ूंख़ार को अब ख़ूबांसमझे। तेग़को समझे हमअबरू नश्तर को मिज़्गांसमझे। क़यामत को दुनियासमझे क़ातिल को अपनी जांसमझे। क़ैदको समझे रिहाई ख़िजांको बाग़जहां समझे। रुसवाईको इज़्ज़तवे तौक़ीर बड़ा बकर समझे। ख़ाकको समझे पैरहन ज़मीं को फ़रशे-तरसमझे ३ ख़ौफ़को समझे खुशी औ हैरानीको शैर आलम समझे। गदाको समझे शाह गरदिशको फ़-ज़लोकरम समझे। दोज़ख़को समझे बहिश्त औ पाप को बड़ाधरमसमझे। और जहां कोई नहीं समझे जो कुछ हम समझे। देवीसिंह कहैं बनारसी के सख़ुन को कौन बशर समझे। ख़ाकको समझे पैरहन ज़मीं को फ़रशेतर समझे ४॥

इश्क़है ख़ानेरंज पर इसख़ानये रंजमें राहतहै। लुत्फ़ उसी को हो हासिल जिसे इश्क़की चाहत है। इश्क़में जीजाना हम्ने समझाहै यही जीजाना है। जानाजाना के दरपर जानबेंचकर जाना है। उल्फ़तमें रुसवाहोना

बस यही आबरू पानाहै। नादांको दिले दिया जिस जिसने वोः आशके दानाहै॥ शेर॥ फँसतो इश्कके फन्दे में वोः दुनियासे कूल्कूटे। मज़ेलूटे उन्होंने जिन्के सब घरदर गयेलूटे। हमैंबोखारदेते हैं जो गुलशन्मेंहैं गुल बूटे। खटक्तेहैं मेरे दिलपर वोः कांटे लगके जो टूटे। इश्ककेबीमारोंकी रोशन आलम्बीच शबाहतहै। लुत्फ़ उसीको हो हासिल जिसे इश्ककी चाहत है १ जिगर जलाना आशक्के हक़में ये बड़ी तरावट है। आतशे ग़मसे अब अपनी आठोंपहर लगावटहै। तनुकी उरियानीको हम समझे ये खूबसजावटहै। इश्क़में बिगड़े जो आशक़ उन्हीं की बनी बनावटहै॥ शेर॥ हुआ जो इश्क़ में मुफ़लिस वही ज़रदार होता है। कटाये शिर जो उल्फ़तमें वही सरदार होता है। जो दिल्को छीनले दिल्बर वही दिल्दार होता है। और आंखें बन्दकर देखे उसे दीदारहोताहै। ज़ोरावर है वही इश्क़में जोके हुआ न काहत है। लुत्फ़उसीको हो हासिल जिसेइश्ककी चाहतहै २ क़ैद जहां से छूटै वही जो दामें मुहब्बतमें फँस जाय। निकले दोज़खसेजो इश्ककी आतशमेंधँसजाय। किसीके बशमें कभी न हो गर वो दिलबर दिलमें बसजाय। करै उसीसे रुसाई कभी न जिसगुल्कारसजाय॥ शेर॥ मुहब्बतमें जो दिलदागे वही बेदाग होता है। नफ़ाहोताहै उसको जो कि ज़र उल्फ़तमें खोताहै। वो हँसताहै सदा जो उससनम्के ग़ममें रोताहै। मिलाये तनुको मिट्टी में वो अपने मनको धोताहै। मजाइश्कका यहीकभीराहतहैकभीकराहतहै। लुत्फ़उसीकोहोहासिल

जिसेइश्क़की चाहतहै ३ ग़मखाना आशक़के हक़में ये न्यामतसे बेहतरहै। हरयकमकांहै उसीका जिस्काकहीं न घरदरहै। उसेखौफ़नहीं किसीकाहै जिसको उस दि· लबरका डरहै। अपने आपको जो पहिंचानै वहीअल्ला अकबरहै ॥ शेर ॥ पढ़ेनहीं इल्मकादफ्तर अलिफ़ बेते न हमसीखे। न तख्तीहाथसे पकड़ी न कुछ छूना क़· लमसीखे। फ़क़त इसइश्क़के मकतबमें हमनामेसनम सीखे। सिवाउल्फ़तके और हम कुछ नहीं अपनी क़सम सीखे। देवीसिंहकहै बनारसीके सखुनमें बड़ी फ़साहत है। लुत्फ़ उसीको हो हासिल जिसे इश्क़की चाहतहै ४॥

जिधरको देखूं उधर रोशनी आफ़ताबकी तमामहै। पिऊं न मय मैं क्योंकर ज़िन्दारहूं मेरा यह कलामहै। चश्म नहीं है हमें खुदाने आप गुलाबी जामदिये। मये दीदके प्याले भरभर मुझे बरसरे आम दिये। चलीबह बादेसबा इस्क़दर हाथ हमारे थाम लिये। तोभी परी पैकर ने मेरे मुँहलगावो आठोजामादिये। कहै जो इस को हराम उसका खानापीना हरामहै। पिऊं न मय मैं क्योंकर ज़िन्दारहूं मेरा यहकलाम है १ एकतरफ़ आ· तशभड़के औ एकतरफ़ बारिश आबहै। मेरे दिलके मयखाने में दोनों तरहका हिसाब है। ज़िगरमें शोला उठे और चश्मोंसे टपके शराबहै। ज़बां यही कहती है मेरीलज्ज़त इसकी लाजवाबहै। कुलजहानमें सुनाहो तुमने मस्ताना मेरानामहै। पिऊं न मय मैं क्योंकर ज़िन्दा रहूं मेरा यह कलामहै २ दिलमें ग़ार देखा तो फिरदौर हमारा आयाहै। आज हमें साक़ीने दुबारा साग़र आप

पिलायाहै। देख मेरीबदमस्तीको मोहतसिबने यहफ़र्मायाहै। यह जो शै वहशत कहांसे तेरी नज़रों बीच समायाहै। कहा यह मैंने आंख हमारी मय वहदतका गुदामहै। पिऊं न मय मैं क्योंकर ज़िन्दारहूं मेरायहकलाम है ३ सुना सखुन मोहतसिब ने यह तब उस के दिलमें होशहुवा। यातो मने करताथा मुझे या आपी बहम बनोश हुवा। चढ़ानशा जब इश्क़का उसको जहां से वो बेहोशहुवा। कहा पिऊंगा मैं हरदम इतना कह कर ख़ामोशहुवा। बनारसीकहै हमें तो इसदारूकापीना मुदामहुवा। पिऊं न मय मैं क्योंकर ज़िन्दारहूं मेरा यह कलामहै ४॥

आतशइश्क़की भड़करही है इसदिलके मयख़ानेमें। मयेमुहब्बत पिलादेसाक़ी उल्फ़तके पैमाने में। यकताई का आलमहो औ वहदतकाहो रंगभरा। तुझ गुलकी हो खुशबू जिसमें वह शराब तू पिलाज़रा। ग़मकीहोवे गिज़ा साथमें वहखासाहो पासधरा। और मारफ़त का हो मीना करामातका कामकरा। आफ़ताबकी होवे रोशनी मेरेदिल दीवानेमें। मये मुहब्बत पिलादे साक़ी उल्फ़त के पैमाने में १ मस्तीका हो शरीर हरदम बादे सबाभी चलतीहो। और गुलाबी मौसमहो हरगुल से महक निकलतीहो। बाजे बीन औ रबाब औ काफूरी शमाभी बलती हो। जिसमहफ़िलको देखके हरमोहतसिबकी छाती जलतीहो। भड़कउठे शोलएनूर पहलू में मेरेशाने में। मयेमुहब्बत पिलादेसाक़ी उल्फ़तके पैमाने में २ पास हमारे दिलबरहो फिर और सदाएक़ुल

क़ुलहो। जोशजनूभी दिलमेंहोकहकहाभीहो शोरोगुलहो। शीशासाग़र सुराही हो और गुलस्तान गुंचेगुलहो। हाथमेंहो दिलबरका हाथ हरबातमें वह ज़िकरे मुलहो। कबाबकी लज़्ज़त हुई हासिल अब्रा ज़िगर जलानेमें। मयेमुहब्बत पिलादेसाक़ी उलफ़तके पैमानेमें३ दीदारते-रा दारूसफ़ाहै जिसे मिला वह मस्तहुआ। बदमस्तों में बैठ बैठकर बनारसी अलमस्तहुआ। चाँदसा चेहरा देखतेही तेरा वह सूरज अस्तहुआ। दस्तगीरवहहुआ कि जिसका तेरे दस्तमें दस्तहुआ। कहै बिश्वम्भरनाथ मज़ाहै इश्क़मार्फ़त गानेमें। मयेमुहब्बत पिलादेसाक़ी उलफ़तके पैमानेमें ४॥

पानकीलालीसे जो मेरे वहदिलबरके लबलालहुये। लाले बदख़शांसे भी बेहतर पैदा अब लालहुये। काकु-लसे कालेहुये पैदा ज़ुल्फ़से अफ़ईमारहुये। पेशानी से नूरटपका तो फ़रिस्ते चारहुये। अबरूसे ख़म खाखाके ख़ंजर बिछुये ख़मदारहुये। औ मिज़गाँसे तीरपैकान-श्तर पुरकार हुये॥ शेर॥ चश्मसे पैदाहुआ नरगिसहरेक गुलज़ारहो। और वो बीनीसे अलिफ़ खींचा गया हर कारमें। हैवहजल्वा कुदरती दोनों तेरेरुख़सारमें। जिस से रौशन चाँद औ सूरज हैं इस संसारमें। पानकी रं-गतपाकर दंदां गौहर से जबलालहुये। लाले बदख़शां से भी बेहतर पैदा अब लालहुये १ ज़बां से पैदा क़ुराँ हुआ औ अक़्लसे इल्महज़ार हुये। चाहेज़कनसे चाहके दिलमें ख़ुदबख़ुदस्पारहुये। गलेसे बनीसुराही गुलशनू तेरे गलेके हारहुये। हुस्नसेतेरे परीपैकर बनकरतैयार

हुये ॥ शेर ॥ तेरेसीनेकी सफ़ाईसे सफ़ाईहोगई । ताक़ते बाज़ूसे अब ताक़तसवाईहोगई । हाथसे तेरे सखावत की सखाई होगई । पंजये मरजाँसे लग लाले हिनाई होगई । देखके रंगीनाखूनोंको शरमिन्दा तब लालहुये । लालेबदख़्शांसे भी बेहतर पैदा अब लालहुये २ शिकमसे नरमी बनीकमरसे पोशीदा सब हालहुये । औ जानूसे तेरे दो नूरके थम्भकमालहुये । क़दमसे सिजदाबना औ पाछूनेको सातपतालहुये । चालसे तेरी बन गये फ़ीलन वह बेचालहुये ॥ शेर ॥ क़दसे तेरे अबतलक सर्वेचमन आबाद है । और अदा तेरीसे आशक़ का सदा दिलशाद है । नाज़से तेरे बनी अंदाज़की बुन्याद है । हरसरापे से सरापा तेराही ईजाद है । जो पत्थर तलओंसे तेरे लगगये वह तो सब लालहुये । लाले बदख़शां से भी बेहतर पैदा अब लालहुये ३ ठोकर से तुझजाना की लाखों मुर्दे उठखड़े हुये । आपके पायेनक़श हैं मेरे दिलपर पड़ेहुये । तेरी चंचलाहठसे सदमे बर्कके दिलपर बड़ेहुये । क़दमबोसी में तेरी हम दिलो जानसे लड़ेहुये ॥ शेर ॥ शेरहक्कानी का कहना कुछनहीं आसान है । यह सखुन समझे वही जो आशक़मस्तान है । देबीसिंह की शायरीपर दिलोजां कुर्बानहै । जिस के हरनुक्के के ऊपर हर शख्स का ध्यानहै । बनारसीके खूने अश्क सब टपके यारबलाल हुये । लाले बदख़शां से भी बेहतर पैदा अब लालहुये ४ ॥

काकुलपुरख़म आरिज रौशन दोनों को क्या यार लिखूं । मारज़ुल्फ़को औरुख़को हरदम शोलेमारलिखूं ।

निस्बतहै ये बेजा गरचे सूंजीपूरे शरारलिखूं। दामहुमा का ज़ुल्फ़को रुख़्को हुमा इज़्हार लिखूं। अच्छी नहीं है ये भी तशभी क्या तायर परदारलिखूं। सम्बुले तर में ज़ुल्फ़को बरगे समन रुख़्सार लिखूं। ये सब्ज़े हैं ज़मींके इनको होके क्यों लाचार लिखूं। मारज़ुल्फ़को और रुख़्को हरदम शोलेमार लिखूं १ काकुलको मैं कालीघटा औ रुख़्को वर्क़ आसार लिखूं। घटाके निस्बत न इन्से दूनवर्क़ बेकार लिखूं। उसको तो ज़ुलमात लिखूं और हैवां उसे हरबार लिखूं। वह तो पुरख़मनहीं और वां नयेज़िनूहार लिखूं। काकुलको मैं लैललिखूं आरिजके तईं निहारलिखूं। मारज़ुल्फ़को और रुख़्को हरदम शोलेमार लिखूं २ गरदिश में लैलोनिहारहैं कहांतलक दिल्दार लिखूं। उसको रैहां औ उसको सुनिये लाल ज़ारलिखूं। तशभी उस्से हैरां पुरदागहै वह क्या ख़ारलिखूं। रुख़्को क़ुरआं बिरहमन काकुलको ज़ुन्नारलिखूं। इनसे झगड़ा हिन्दू मुसल्मां हैगा क्याइसरारलिखूं ३ मारज़ुल्फ़को औ रुख़्को हरदम् शोलेमारलिखूं। रुख़्को हरदम् शमये रौशन काकुल को धुआंधार लिखूं। येभी गलतहै और तशभी इसकी यकबार लिखूं। उसको मौज बहर लिखूं उसे आईना बेदार लिखूं। मौजनयकजां आईना हैरां ये क्या शोरलिखूं। ज़ुल्फ़ सुबैहा बनारसी रुख़ नूरे हक़ गुल्ज़ारलिखूं। मार ज़ुल्फ़को और रुख़्को हरदम् शोलेमारलिखूं ४॥

नाज़ोअदासे चलानाज़नी दोज़ुल्फ़ें लटकालटका।

लटका आलम दिखाया जब उसने लटका लटका।
देख तमाशा उन ज़ुल्फ़ोंका फँसा दाम में कुलआलम्। पेंचमें उसके पड़ा है यारो ये बिल्कुल आलम्। ऐसा बाँधा खैंचजुल्फ़में मचारहाहै कुलआलम्। उसके फंद से कहो अब क्योंकर जाये खुलआलम्। नशेमें है सर सार पीकर गेसुयेज़हरका मुल आलम्। हुआ दिवाना देखकर उसकी वह काकुल आलम्। फेरमें ज़ुल्फ़ों के फिरताहै कुलजहान भटकाभटका। लटका आलम्दि-खाया जब उसने लटका लटका १ गदा अम्बिया शाह औलिया और जो ज़ुल्फ़ देखे गरदूं। महक से उसकी होवे सबमस्त औ आये दिलमें जनूं। ज़ुल्फ़ो अम्बरी देखके आलम् आशक़ होगया गनागूं। लामकहूं में या इनको लामकान अलिफ़लिखूं। जिसदम् उस ने बालमरोड़े लाखों अफ़ईकाहुआखूं। सबकेज़हरको नि-चोड़ा क्याताक़तकरे कोई चूं। कालेनेशिरकोपटकाजिस दम् उसने लटकोझटका। लटका आलम् दिखायाजब उसने लटकालटका २ हिलाहिलाके ज़ुल्फ़दुता कितनों के तईं हलाल किया। मारमारके मारसदहाको हाल बे हाल किया। मशरिक़्से मग़रिब्तक उसनेअजब्ज़ुल्फ़का जालकिया। उसके बीचमें डालकर कितनों को पैमाल किया। जिसदम्उसनेज़ुल्फ़बनाके टेढ़ाबांकाबालकिया। कालभी उसको देखकर डरा औ अपना कालकिया। फटकारा जब ज़ुल्फ़को उसने कोई सामने नहिं फटका। लटकाआलम् दिखाया जब उसने लटकालटका ३ दोनों रुख़सारोंके ऊपर लटलटकी घूँघरवाली। गोयामाहके

गिर्द घिरआई घटा कालीकाली। लटकाके जब ज़ुल्फ़ सनमने इधर उधर रुख़पर डाली। बयां क्याकरूं बनाई अजब वह क़ुदरतकी जाली। देबीसिंहके छन्द रंगीले और सदा भोली भाली। सुने से जिसके हुई हरयक शायरको ख़ुशियाली। मतलब है तौहीद ज़ुल्फ़ में और मारफ़तका खटका। लटका आलम दिखाया जब उसने लटका लटका ४॥

फ़क़ीरी ख़ुदाको प्यारी है। अमीरीकौन बिचारी है। बदनपर ख़ाकहै सो अकसीर। फ़क़ीरोंकी है यहीजागीर। हाथ बांधे खड़ेरहें अमीर। पादशाहहो या होय वज़ीर। सदा यह सब्रहमारी है। गदाकी ख़ुदासेयारी है। फ़क़ीरी ख़ुदाको प्यारी है १ हैंइनकानाम सुनोदुर्वेश। कोई नहिं पाये इनसे पेश। ख़ुदासेमिले यहरहें हमेश। कोई नहिं जाने इनकाभेष। कभी गिरियाँ औ जारी है। कभी चश्मों में ख़ुमारी है। फ़क़ीरी ख़ुदाको प्यारी है २ है इनका रुतबा बहुतबलन्द। ख़ुदाकेतईं यहहुआ पसन्द। पादशाहसे भी यहबने दुचन्द। इन्हेंमत बुराकहो हरचन्द। इनकी दिलपर असवारी है। ऐसी नहिं कहीं तैयारीहै। फ़क़ीरी ख़ुदाको प्यारी है ३ चीथड़े शालसे हैं आला। चश्म हरतालसे हैं आला। चने भी दालसेहैं आला। चलन हर चालसे हैं आला। ज़ख़्म जो जिगरपर कारी है। वही दिलपर गुज़ारी है। फ़क़ीरी ख़ुदाको प्यारी है ४ पांवमें पड़ा जो है छाला। वहभी मोतियोंसे है आला। हाथमें फूटासाप्याला। जामे जमशेदसे भी आला। अगरकोई हस्तहज़ारीहै। वह भी इनकाही भिखारी है। फ़क़ीरीख़ुदा

को प्यारी है ५ मकांलामकांफ़क़ीरोंका। निशां बेनिशां फ़-
क़ीरोंका। फ़खहैनिहांफ़क़ीरोंका। खुदाहैइमांफ़क़ीरोंका।
ताक़ते सब्रवहभारी है। मौततक जिनसेहारी है। फ़क़ीरी
खुदाको प्यारी है ६ बढ़गये बाल तो क्यापरवाह। उतर
गईखाल तो क्यापरवाह। आगयामाल तो क्यापरवाह।
हुये कंगाल तो क्यापरवाह। खुदातू जनाबे बारी है। का-
शीगिरिको यादगारी है। फ़क़ीरी खुदाको प्यारी है ७॥

कहो किसे मैं देखूं देखा आलममें कुल हमीं तो हैं।
कहीं पै गुलहैं कहींपर आशक़े बुलबुल हमीं तो हैं। कहीं
अनलहक़बने कहींमन्सूर कहींपर दारहैं हम्। कहींपर
सरमद कहीं सरलेने को तलवारहैं हम्। कहींशम्सतब-
रेज़ कहीं खुरशैद उसीके यारहैंहम्। राही एकहैं कहींपर
देखो बिनाशुमारहैंहम्। कहीं बने खामोश किसी जा पर
शोरोगुल हमींतो हैं। कहींपै गुलहैं कहींपर आशके बु-
लबुल हमीं तो हैं १ किसी जगहपर शेर कहीं बेशेर में
बोले हमींतो हैं। कहींपै स्याने कहींपर बाले भोले हमीं
तो हैं। कहींपर आतिश आब कहींपर पड़े फफोले हमीं
तो हैं। कहींपैरत्ती कहींपर मासे तोले हमींतो हैं। कहींच-
नेमयखोर किसीजापर साक़ीमुल हमींतो हैं। कहींपैगुल
हैं कहींपर आशके बुलबुल हमींतो हैं २ कहीं पै बंदे बने
कहीं पर खुदा खुदाका नूरहैंहम्। कहींपर मूसा कहीं
जल्वा और कहीं कोहतूर हैंहम्। कहीं किसी के पास
रहे और कहीं किसीसे दूरहैं हम्। कहीं मलायक कहीं
पर परिस्तान और हूरहैं हम्। कहीं बने पेशानी कहीं
उस रुखपर काकुल हमींतो हैं। कहींपै गुलहैं कहींपर

आशक़ेबुल्बुल हमींतो हैं ३ कहीं बादशाहबने कहींपर आकरहुये फ़क़ीरहैंहम्। मुरीदभीहैं किसीजाऔरकहीं पर पीरहैंहम्। कहीं निशानाबने कहींपर कमां कमांके तीरहैं हम्। कहीं शमाहैं कहीं पर परवाना गुलगीरहैं हम्। बनारसीकहै मुझे अगर देखो तुम बिल्कुल हमीं तोहैं। कहींपैगुलहैं कहींपर आशक़ेबुल्बुल हमींतोहैं ४॥

ऐगुल्तेरी उल्फ़तमें गुल्ज़ारभी है और खारभी है॥ बड़ा लुत्फ़है इश्क़में मारभी है और प्यारभी है। कभी इशारा अबरूकाहै और कभीतलवारभी है। कभीवस्ल का हमसे इक़रारभी है इन्कारभीहै। कभी गालियां झि-ड़कीहैं और कभी शीरींगुफ्तारभीहै। कभीख़िजांहै कभी गुलशन् है बागबहारभी है। बोला ये मंसूर दारमें दार भीहै दीदारभी है। बड़ालुत्फ़है इश्क़में मारभी है और प्यारभी है १ कभीतौक़ गरदनमें पड़ा और कभीफूलों का हारभीहै। कभी बिरहना बदनहै कभीतनपै सिंगार भीहै। कभी सैरसहराकी है और कभी कूचाबाज़ारभी है। कभी है राहत कभीरंजीदा दिलबीमारभी है। कहा लैलासे अबमजनूंने अबसुलहभी है तकरारभीहै। बड़ा लुत्फ़है इश्क़में मारभी है और प्यारभी है २ कभीहँसी दिल्लगी कभी रोना अश्कों का तारभी है। कभी नज़र का छिपाना कभी निगाहें चारभी है। कभी गलेसेलगे कभी वह करता दारोमदार भी है। कभीजिलाये कभी यकअदासे डाले मारभी है। कभी करे ऐयारी औ वह बनता यारभी है। बड़ालुत्फ़ है इश्क़में मारभी है और प्यारभीहै ३ कभीज़ख्म पुरहोयँ जिगरके कभीबदनपर

ग़ारभी है। कभीकरे खुश कभी वो करता दिलबेज़ारभी है। देबीसिंह येकहै मेरा वह शोख़सितमगर यारभी है। जो चाहै सोकरै अब वही दिलका मुख्तारभी है। बनारसीकहै नेकी बदी दोनोंका उसे अख़त्यारभी है। बड़ा लुत्फ़है इश्क़में मारभी है और प्यारभीहै ४॥

क़ुरानकी आयतें हम उसके रुख़नापावसे लिखतेहैं। लाजवाब उसको हम अपने इस जवाबसे लिखते हैं। अलिफ़को हमनाहिं लिखेंगे बीनी उस गुलरूकी लिखतेहैं। बिसमिल्लाको छोड़ सिफ़त उसके अबरूकी लिखते हैं। लामसे कुछ नहीं काम झलक उसके गेसूकी लिखते हैं। ऐनको करके अलग आंख हम उसमहरू की लिखते हैं। ते को तर्ककर चीनेजबीं दिलकी किताब से लिखते हैं। लाजवाब उसको हम अपने इस जवाब से लिखते हैं १ नुक़्तों को कर अलग हम उसके रुख़े लालको लिखते हैं। हरेक इस्मसे बेहतर उसके हरएक बालको लिखते हैं। कोई लिखे से जीम हे ख़े कोई दाल ज़ालको लिखते हैं। हम इनको गये भूल सिर्फ़ उसके जमालको लिखतेहैं। अरबी फ़ारसी हिन्दी तुरकी सब सिनावसे लिखते हैं। लाजवाब उसको हम अपने इस जवाबसे लिखतेहैं २ कुलकलामुल्लाः हम उसके सारे ख़तको लिखतेहैं। और मायने क़ुरानके उसकी उल्फ़तमें लिखतेहैं। ज़ेर ज़बरसे ज़बरदस्त उसकी ताक़तको लिखतेहैं। पेशसेबेहतर पेशानी उसकी क़िस्मतको लिखतेहैं। रुख़े रौशन् आला हम उसका माहताबसे लिखतेहैं। लाजवाब उसको अपने हम इस जवाबसे लिखते हैं ३ कलमे

से पढ़कर अपने दिल्बरकी बातको लिखतेहैं। मुसल्मान हिन्दुओंसे आला उसकी जातको लिखतेहैं। वो हैंगे नादान जो उसकी तायदादको लिखतेहैं। देबीसिंहदिल पर उसकी हरकरामात से लिखतेहैं। बनारसी तो हिसाब उसका बेहिसाब से लिखतेहैं। लाजबाब उसको अपने हम इस जवाबसे लिखतेहैं ४॥

लामकांहै आशक़ोंका नहीं कहीं मकांहै। जहांखुदाहै मस्तोंकादिल सदावहां है। मालूमहै मुझको जो किसी चीज़निहां है। वाक़िफ़हूं औ कहताहूं वो सारकहां है। हूं ज़ईफ़ पर दिलमेरा बड़ाजवांहै। नाताक़तहूं पर मुझमें बड़ीतवांहै। जहां फ़नाहै मेरेलखेवहीं जहांहै। जहांखुदा है मस्तोंकादिल सदावहांहै १ जहांख़ामोशी है वहींपर शोरोफ़िगां है। जहांसर्दहै नारा वहीं आतिशसोज़ांहै। जहांहिज्रहै उल्फ़त्काभी वहींसामांहै। जहांलहर बहर है वहींखड़ातूफ़ांहै। क्याकहूं मैं कहतीमेरी यहीज़बांहै। जहांखुदा है मस्तोंकादिल सदावहां है २ हूंलिबासपहने पर यह तन उरियांहै। बस्तीको समझताहूं मैं येवीरां है। जहां मुसल्मीनहैं वहींपर हिन्दुस्तां है। मसजिदमें मेरे उस बुतका बनानिशांहै। आशक़की आहहै यही तो एकअज़ांहै। जहांखुदाहै मस्तोंकादिल सदा वहांहै ३ ज़िंदाहैवही जोजानसे भी बेजांहै। करताहै सैर वहइश्क़ में जो हैरांहै। नादानको भी कहताहूं मैं वह इन्सांहै। ये अक़्लहै मेरी और यह फ़हमकहांहै। कह बनारसीहरशमि सरामेराक़ुरांहै। जहांखुदाहै मस्तोंकादिलसदावहांहै ४।

चलते चलते थकगईं यह मेरी पिंडुलियां। लामकां

समझकर फिरे यारकी गलियां । आसमां समझकर ज़मींपै खाकउड़ाई । और ऐशसमझकर करता फिरूंग-दाई। लैलाबनकर मजनूँकी सूरतपाई । इज्जतकोसमझ कर उठाली अबरूसवाई । मन्सूर जानकर अपनीजान गँवाई । दीदारकेखातिर दारपै करी चढ़ाई । सुखमाना मैंने दुखी जो मरी नलियां । लामकां समझकर फिरेयार कीगलियां १ गुलज़ारसमझकर ख़ार जिगरपर खाया। राहतको समझकर रंजो अलम उठाया । हँसनेको समझ रोनेका तार लगाया। औ सब्र किया तो अपना दिल घबराया। नज़दीक समझकर बड़ीदूर फिर आ-या। पाया तो जहांमें अपनाई आपापाया। ठोकर से पांवकी टूटीं सबी अँगुलियां। लामकां समझकर फिरे यारकी गलियां २ काबेको समझकर बैठे बुतखाने में बस्तीको समझजापहुँचे वीरानेमें । जुल्फों को देखकर उलझा दिल शाने में। बातें जो सुनी तो पड़गये ग़म खानेमें। जिन्दगी समझली अपना जीजाने में । वह दतकोसमझ मुलपीली पैमानेमें। गिरपड़े दौड़कर दि-लको हुई तलमलियां। लामकां समझकर फिरे यारकी गलियां ३ मै समझ के पीनेलगे अश्करोरोके। और होश समझ बेहोशरहे हम सोके। समझेथे नफ़ा अब बैठे गांठको खोके। बे बोझहुये सरपर पत्थर ढोढोके। इकताई हासिलहुई भरोसेदोके। कहैबनारसी यहख्याल खुशी होहोके। उस गुलके वास्ते उठाली सब बेकलियां। लामकां समझकर फिरे यारकीगलियां ४ ॥

जो दिलबरका बेटकीतरह मुँहचूमें। उस आशक़ के

सँगसारी खुदाईघूमें। जिसजादेखेजलबयेखुदाईदेखे। माशूक़को अपनाकरके भाई देखे। तनबदनसे उस्की खूब सफाईदेखे। शिरसे औ पैरतक सब रानाई देखे। कभीदेखेवस्ल और कभीजुदाई देखे। हरसूरतसेउसकी इकताईदेखे। जोउसका जलवा कोई देखेहरसूमें। उस आशक़केसँग सारीखुदाई घूमें १ जानीको अपनीजान से ज्यादाचाहे। प्यारे को अपने प्राणसे ज्यादाचाहे। दीनोदुनियां ईमानसे ज्यादाचाहे। उससनमको इसजहानसे ज्यादाचाहे। बेद और पुराण क़ुरानसे ज्यादा चाहे। हरतीरथके स्नानसेज्यादाचाहे। करइश्क़महकता रहेगुलोंकी बूमें। उसआशक़केसँगसारीखुदाईघूमें २ जिसजापर देखेउसके नूरकोदेखे। चाहेपरीकोदेखेचाहे हूरकोदेखे। जोमयेमुहब्बतकेसुरूरकोदेखे। वोआशक़ तो फिरबड़ी दूरकोदेखे। जोअपने दिलमें उसजुहूरको देखे। वहखुदाकोदेखे औ ग़फ़ूरकोदेखे। वोहीमुसल्मीन में वोहीदेखेहिन्दूमें। उसआशक़के सँग सारीखुदाई घूमें ३ गरआशक़होतोहक़्क़कामस्तानाहो। दीवानोंकोजो पढ़े तो दीवानाहो। लौलगा वहांपर जहां में वहजाना हो। जानाहो जहांफिरवहांसेनहिंआनाहो। एदेबीसिंह तेरासखुन आशक़ानाहो। वहसमझेइसेजो कोईशख्स दानाहो। गरदिलको फँसाये उसके कमां अबरू में। उस आशक़केसँग सारीखुदाई घूमें ४॥

तू जिस्मजिगर और जान नहीं जानाना। फिर क्यों नहिंकहता खुदाजो तूहै दाना। किसने तुझको बांधाहै बनाजो बंदा। और कौन पेचका पड़ाहै तुझपर फंदा।

तू अपनेआपकोदेखनहो मतिमंदा। है कौनसी वहबद-
बूजोहुआ तूगंदा। गरतूने अपनेतईं जिस्मनहिंजाना।
फिर क्योंनहिं कहता खुदा जो तू है दाना १ यह हाथ
पांव और सरभी नहीं कुछ तूहै। सीना और बाजू पर
भी नहीं कुछतूहै। जनखा औरत और नर भी नहींकुछ
तूहै। जिन देव परी पैकर भी नहीं कुछ तूहै। तू अपने
बीचमें आपी आप समाना। फिर क्यों नहिं कहता
खुदाजो तूहै दाना २ रोना और तड़पना आहनहींकुछ
तूहै। मुँहज़बाँचश्मवल्लाहनहींकुछतूहै। काबाक़िबला
दरगाह नहींकुछतूहै। और हरामकीभी राहनहीं कुछ
तूहै॥ मसजिदभी नहींतू बनाहै बुतखाना। फिर क्यों
नहिं कहताखुदा जो तूहैदाना ३ तक़दीर और पेशानी
भीतूनहीं है। आतिश और हवा गिल पानीभी तूनहींहै।
अर्वाह और गिलमानीभी तू नहीं है।इस जिस्मकीजरा
निशानी भी तू नहीं है। यह बनारसी का समझसखुन
मस्ताना। फिरक्योंनहिं कहता खुदा जो तूहैदाना ४॥

चश्मों में भराहैरंग गुलाबीगुलका। अश्कोंका पियेंगे
कामनहींकुछमुलका। यह आंख मेरी वहदतका पैमाना
है। अब इसीको हमने समझा मयखानाहै। चश्मों से
ज्यादहकोई न मस्तानाहै। देखे तो इसमें क्यारंगरूयाना
है। है भरानशा आंखों में आलम कुलका। अश्कों को
पियेंगे काम नहीं कुछ मुलका १ जब चुवेंगे आंसूमेरे
चश्मागिरियांसे। मैं समझकेहमपीवेंगे इन्हें दिलजांसे।
[illegible] नहींलेंगे नाम ज़बांसे। रोरोके पियेंगे अश्क
लबेगिरियांसे। हिचकियोंसे मेरे होगाशोर कुलकुलका।

अश्कोंको पियेंगे काम नहीं कुछ मुलका २ बादाम भी येहैं नरगिसके प्यालेहैं। देखा मैंने यहपूरे मतवालेहैं। यहनयनहमारे गुलशन गुल्लालेहैं। मैके इनमें भररहे नदीनालेहैं। जब चाहे खुमके खुन्दममें दे ढुलका। अ-श्कोंको पियेंगे कामनहीं कुछमुलका ३ उस परीकाआ-लम् आंखोंमें छायाहै। इसवादेकशीसे अब दिल घब-रायाहै। मैसे ज्यादा अश्कों में मज़ापायाहै। मज़मूनयह देवीसिंहने नयागायाहै। है यही सखुन आशिक़सादिक़ बुल्बुलका। अश्कोंको पियेंगे कामनहीं कुछमुलका ४॥

साक़ियापिलासागरेदीद उसमुलका। वहदतहोजि-समें भरीवस्ल तुझगुलका। अबमये मुहब्बत आकर मुझे पिलादे। औरजामतू अपनी दीदका मुझेपिलादे। दिलसे दिल अपने जिगरसे जिगरमिलादे। दीदारकी दारूसे तूमुझेजिलादे॥ गुलहोगुलशनमें मचेशोरकुल-कुलका। वहदतहो जिसमेंभरीवस्ल तुझगुलका १ शौक़े शराबका भरकर पैमाना ला। इश्क़की सुराही हाथ में जानानाला। मैंपिलामुझे उसनूरका मैख़ानाला। गुल-शनमेंगुलाबीरंग तुशाहानाला। मालूमहालहो नशे में आलम्कुलका। वहदतहो जिसमें भरीवस्लतुझगुलका २ मैंतुझेपिलाऊँतूमैंमुझेपिलाये। जबलुत्फ़इश्क़काखूब दूबदूआये। मैंकहूँऔरदे तूभी यही फ़रमाये। वहबात हो जिसकीबात न कोईपाये। क़ुदरतकाक़राबा मेरेजाम में ढुलका। वहदतहो जिसमें भरीवस्ल तुझगुलका ३ शीशेदिलमेंभरदेतूमेरेअँगूरी। इसलियेकिदिलकीहोवे दूरकदूरी। वहजल्वाअपना दिखादे मुझकोनूरी। कहै

बनारसीदिलकीमुरादहोपूरी ॥ मैपीकेचहकतारहैयहदि-
लबुलबुलका। वहदतहोजिसमेंभरीवस्लतुझगुलका ४॥

बिनपिये जहांकबीच जिऊं मैंकैसे। भरदेप्यालालब-
रेज़ साक़ियामैसे। मै वहदतका मुस्ताक़हूं यकमुद्दतसे।
वाक़िफ़हूँमैंकुलमलानोंकी आदतसे। जिसवक्तनशासर-
सारहुआशिद्दतसे। बेहोशहुआइसदुनियांकीबिद्दतसे।
हरवक्तज़बांसे कहाकरूंमैं ऐसे। भरदे प्याला लबरेज़
साक़ियामैसे १ शोलयनूरदिलमें मेरेभबकेहै। अशरत
की मै हरदम उसमें टपके है। लौलगीहै और दिलउस
लौमेंलपकेहै। इसनशेसे अबकब आंखमेरीझपकेहै। आ-
ती है यही आवाज़हरजगहनैसे। भरदे प्यालालबरेज़
साक़ियामैसे २ मालूमहुआ मै मौतकी यहदारूहै। हर
गुलोंकीरूहै खिंचीहै वहगुलरूहै। रिन्दानोंकी महफ़िल
में यहीमहरूहै। और इस्से बेहतर नहीं कोई खुशबूहै।
तू पिलादेमुझकोयारबनपड़ेजैसे। भरदेप्याला लबरेज़
साक़ियामैसे ३ एकरोज़ सामने मेरे मोहतसिब आये।
बोले मैपीना कौनतुझेसिखलाये। औ देखक़राबे मैके
वह घबराये। बोला मैंके यह क्या खुदाने नहीं बनाये।
फिर कहनेलगे मोहतसिबभी मुझसे ऐसे। भरदेप्याला
लबरेज़साक़ियामैसे ४ बीनो रबाब मिरदंगकी तय्यारी
हो। मीने में मीनेकी मीनाकारीहो। गुलपास में बैठे हों
औ गुलज़ारीहो। कहैबनारसी उसवक्त वह मै जारीहो।
हरवक्त राग फिर बजाकरै इसलैसे। भरदे प्याला ल-
बरेज़ साक़िया मैसे ५॥

आतेही इश्कने यहां मचादीहोली। वहआतिश और

तनफूस जलादीहोली। चश्मोंसे बरसने लगा खूनेरंग पानी। और इश्कभी करनेलगा वह ऐंचातानी। मैंहँसूं तो गालीदेय मुझे दिलजानी। और लोगबजावें ताली सुनो कहानी। नहीं देखीथी सो मुझेदिखादीहोली। वह आतिश और तनफूस जलादीहोली १ ग़मकेगुलालने ऐसी धूलउड़ाई। अबसिवाखुदाके कुछनहिं देयदिखाई। तनबदनमेंजीतेहीजीआगलगाई। जोहोनीथीसो होली मेरेभाई। शाबासइश्कने खूबलगादीहोली। वहआतिश औरतनफूसजलादीहोली २ जिसवक्तवहआया दिलमें इश्करँगीला। थाचेहरेका रँगलाल सो पड़गया पीला। और जामाजोथा खिंचा वह होगया ढीला। इसपर भी दोस्तोंनेकरदियाहैयहगीला। हज़रतेइश्कनेमुझे खिला दी होली। वह आतिश और तनफूस जलादी होली ३ दिल तड़प तड़पकर अपना नाच दिखाये। यह इश्कन अपनी कुछख़ातिरमेंलाये। दिलआहआहकरशोर और धूममचाये। परइश्कनइसकीमुतलक़सुनेसुनाये। लोसुनो दोस्तोतुम्हें सुनादीहोली। वहआतिश और तनफूसजलादीहोली४ठगगयेइश्ककोकबीरगातेगाते। जिसकोदेखावहआयेढोलबजाते। कोईशिरपरडालेखाककोई चिल्लाते।कहैबनारसीहमइश्कमेंहैंरँगराते। जोहक्कुल्लाथी मैंनेगादीहोली। वहआतिशऔरतनफूसजलादीहोली ५॥

हमतेरेइश्कमेंयारबहुतादिनभटके। अबमिलासनम् त हमें खुलेपटघटके। कइबारगयासरतेरेइश्कमेंकटके। फिर पायाहमने नाम तुम्हारारटके। किये रंज अलम् मंजूर ज़रानहिं ठटके। दिलकी दहशत सब निकलगई

छटछटके। कईलाखबजहकेदियेहैंतनेझटके। अबमिला सनम् तू हमैं खुलेपटघटके १ जिसवक्त तेरी वह जुल्फ़ नागिनी लटके। कोईइधरसेहोजायउधरउधरसेचटके। गरदेखे कालानाग तो शिरको पटके। चढ़जाय ज़हर जुल्फ़ोंका वहघरको सटके। हम आशक़हैं मज़बूत कहां जायँ हटके। अब मिलासनम् तू हमैं खुले पटघटके २ लैलासे लगायादिल मजनूंने डटके। तनबदनभयासब कांट उसीसे अटके। सूलीपरचढ़ामन्सूर उसीपरमटके। नहीं ज़रा नोक सूलीकी जिगरमें खटके। देखा जो तुझे दिलगया जहांसे फटके। अब मिलासनम् तू हमैं खुले पट घटके ३ जबखुले किवाड़े यार कपटके पटके। दिल में पायेदीदार वह बंशीबटके। शिरमोरमुकुट कटिकसे ज़रीके पटके। कहैं देबीसिंह हैं अजबखेल नटखटके। कहैं बनारसी हमआशक़ नागरनटके। अब मिलास-नम् तू हमैं खुले पट घटके ४॥

सखियोंसे कहैं यहबात कृष्णहोलीमें। चोरीसे कुम-कुमेधरे हैं क्योंचोलीमें। कुछरंगहै इनमेंभरा या ये खा-ली हैं। यों हँसकेबातयहपूंछतबनमाली हैं। तब सखियां भीहँसहँसकरदेंताली हैं। वहगाली दें जो कुछभोली भा-ली हैं। कहैंकृष्णभरे हैं गुलाल या रोली में। चोरीसे कुम कुमेधरे हैं क्योंचोली में १ यह कहकर अपनी कृष्ण ने भुजाबढ़ाई। तबसखियोंनेकुचअपनेलियेचुराई। मनमें कुछ ऊपरसेकुछबातबनाई। चित चाहे लज्जासे दियो हाथहटाई। यही कहैं कृष्ण हँसहँस ब्रजकी बोली में। चोरीसे कुमकुमे धरे हैं क्यों चोली में २ कहैं सखी कृष्ण

अबहमको मतीलजाओ। चितचोरहो तुम क्योंहमको चोरबनाओ। नितचोरी करकरके दधि माखनखाओ। अब बरबस क्यों अँगिया में हाथ लगाओ। स्यानेहो पैबोलोहो बतियां भोली में। चोरी से कुमकुमे धरेहैं क्यों चोलीमें ३ यह सुनीबात तब हँसे नन्दके लाला। बंशी ये बजाकेतान वह जादूडाला। लगगईं गलेसे आप सकल ब्रजबाला। कहै देबीसिंह मैं जपूँनाम गोपाला। कहै बनारसी कुछ गोलहै इस गोली में। चोरी से कुमकुमे धरे हैं क्यों चोली में ४॥

हरजगेपै देखा कहीं नहीं तू देखा। जहांयादहै तेरी वहीं वहीं तू देखा। गये बहिश्तमें हम वहां न तुझको पाया। बुतख़ानेमेंभी नहीं नज़रतू आया। काबाक़िबला मक्कामसीतढुँढ़वाया। काशी मथुरामें बहुतदिनों भरमाया। जा जाकर गंगासागर सिन्धु नहाया। मैं तेरे इश्क़में चारोंतरफ़ उठधाया। नहीं हमने प्यारे और कहीं तू देखा। जहां यादहै तेरी वहीं वहीं तू देखा १ जंगल बस्ती सब उजाड़ हमने छाना। नहीं देखा तुझको देखा सबीज़माना। कोई मतवाला कहताहै कोई मस्ताना। जो जो कुछ जिसने कहा वह हमनेमाना। कूबकू फिरादर दरकाहुआ दिवाना। नहींपाया प्यारे तेरा कहीं ठिकाना। अब यादकरी तो दिलमें यहीं तू देखा। जहां यादहै तेरी वहीं वहीं तू देखा २ शिर पटकपटककर पहाड़परदेमारा। और आहआहकरकरकेबहुतपुकारा। देखादेवलदेहरा और ठाकुरद्वारा। सर ता पा सबको देख देखकरहारा। घरबारतजा आलमसे लियाकनारा। जैसी कुछ गुज़री

वैसेई कियागुज़ारा। यहबातैं हमको यादरहीं तू देखा। जहां यादहै तेरी वहीं वहीं तू देखा ३ सब देखाहमनेगुलशन और गुल्लाला। बनफ़क़ीर बनबन फिरा पहिन बनमाला। देखा पत्तापत्ता और डालीडाला। है सबमें तू और सबसेरहै निराला। यह बनारसी का कलामरस का ढाला। है अरज़ मेरी यह सुनो नन्दकेलाला। तुझ दिलबरपर आशक़हूं यहीं तू देखा। जहांयादहै तेरीवहीं वहीं तू देखा ४॥

इश्क़हज़रतनेकी हमपै मेहरबानी। करूं मैं क्याक्या मेहमानी। नज़र देनेको दिल अपना मैं लाया। इश्क़के बहुत पसंदआया। इश्क़नेमेरा जब लख़्तेजिगरखाया। तो मैंने और भी बतलाया। खूनआशक़का यहहै ताज़ा पानी। पीजिये इश्क़ मेरेजानी १ अश्कगौहर का जब गलेहारडाला। इश्क़नेकहा येहै आला। चश्ममें भरभर कर वह मै गुल्लाला। इश्क़केतईं दियाप्याला। बनपड़ी मुझसे जो कुछकिकदरदानी। इश्क़कीसबोबातमानी २ जिगरपर मेरेजोथे उलफ़त्केमार। दिखायाइश्क़को वह गुलज़ार। और सीनेपर गुलखाये कईहज़ार। दिखाई इश्क़केताईं बहार। मालज़र सारा देकरके यहीठानी। कियातन अपनाउरयानी ३ और एक तोफ़ाजोथी सब में भारी। जानहोती सबको प्यारी। इश्क़के ऊपर वह भी मैंनेवारी। नज़ीर देनेसे हुआआरी। कहूं मैं इसके आगे अब क्याबानी। इश्क़केहाथ जिन्दगानी ४ कि मैं हूँ आशक़ है इश्क़मेरा सरदार। हमहैं उसके फ़र्मांबरदार। बजुज़आशक़ी के कुछ और में मेराकार। इश्क़के

सिवा न कोईयार । कहै देबीसिंह है बनारसी ज्ञानी। हरेकछन्द जिसका हक्कानी ५ ॥

भेदकोई बुतोंका क्या पावै । पाकमुहब्बत करो तो जल्वेखुदानज़रआवे। अगरयेचाहें करे दिलसंग । तू कर दिल्कोमोम तो फिर यहहोजायँ तेरेसंग। यह लेके तेगकरें चौरंग। तूदे सरको भुका तौ फिरदेखे उल्फ़त कारंग। यहहै गरसमा तो तूहो पतंग। लगादेलौमेंलौ अपनी मतरखइसदिलकोतंग ॥ दोहा ॥ अव्वलतौयह जलाजलाकरकहेंतुझेताजीर । फिरपीछेहो रौशन तेरा नामबने अक्सीर। तुममतइसदिलमेंघबरावे। पाकमुहब्बतकरो तो जल्वे खुदानज़रआवे १ यहदिलबरहै मेरे दिलके। खुदामिला पीछे हमको पहले इनसे मिलके । हालसुन इसदिलबिस्मिलके। क़तलहुये तौ भी शिकवे नहींकियेउसक़ातिलके। यहगुल सबबने आबोगिलके। अव्वलथेगुंचेगुंचेसेगुलहुवेखिलखिलके ॥ दोहा ॥ बागे इश्क़मेंअयादिले बुलबुलगुलोंकी देखबहार। खारअगर्चे चुभेंतो उनकांटोंपैआसनमार । वोही फिरगुलशन होजावे। पाकमुहब्बतकरो तो जल्वे खुदा नज़रआवे २ वहहै जुल्फों में ज़हरइनके। इसेज़हर मतसमझ यहीहै लहरबहरइनके। लगेहैं वोबाइतरइनके । हरेकतरावट से बेहतरहैंगे सुतरइनके। पेचमेंपड़े अगरइनके। हरेक फन्दसे वाकिफ़होवे वोहीमगर इनके ॥ दोहा ॥ जिसका दिल दिलदारकी जुल्फ़ोंमें बिखरे। देखेनिखरे बाल निरखकर तौ ये दिलनिखरे । वोही उलझावे सुलझावे। पाक मुहब्बतकरो तो जल्वे खुदानज़रआवे ३ इनके

अजब कटीलेनैन। करैंचोटपै चोट बनेहैं गजब चुटीले नैन। बुतोंके छैलछबीले नैन। काले गोरे लालरंग में रँगेरँगीले नैन। बहुतरसभरे रसीले नैन। सबके ऊपर इनकीनोकहै यहहैं नुकीलेनैन ॥ दोहा ॥ जोकोईइनको पाक निगहसे देखे आशक़ आन। उन्हें दिखाई इन्हीं बुतोंमें देवेउसकीशान। रूपवह अपनादिखलावे। पाक मुहब्बत करो तो जल्वे खुदानज़रआवे ४ जिसने इन बुतोंको जानाहै। उसीको जाना मिलाहुआ जिसकाद्वां जानाहै। इनका लामकाँ ठिकानाहै। वहांसे उतरा नूर वह इनकेबीचसमानाहै। सखुनमेरा आशक़ानाहै। जिसने सुनाइतक़ादसे वह आशक़मस्तानाहै॥ दोहा ॥ समझ आशक़ोंकी रमजें और करदिलकोहोशियार। देबीसिंह यों कहै हुआ तौहीदछन्दतैयार। मार्फ़त बनारसीगावै। पाक मुहब्बत करो तो जल्वे खुदा नज़र आवे ५ ॥

आनकेहमनेदेदी अपनीजान तुम्हारेकूचे में। जान भी बाक़ी नहीं रही दिलजान तुम्हारे कूचे में। सारमार करतेहैंगे मुयेमार तुम्हारे कूचे में। बारकरेलेकर अबरू तल्वार तुम्हारेकूचेमें। मिजगांकीनोकोंसेहुई दारनादार तुम्हारे कूचेमें। हैरकमजे के यारचलैं हथियारतुम्हारे कूचेमें। मान न मुतलक़ रहा अरमान तुम्हारे कूचे में। जान भी बाक़ी नहीं रही दिलजान तुम्हारे कूचे में १ जालजुल्फका बिछाहै वह जंजाल तुम्हारे कूचे में। बाल तुम्हारा दिलकोहुआ वबाल तुम्हारे कूचेमें। लाललबोंपर मलक करतेहू लाल तुम्हारे कूचे में। कितने माल वाले होगये पामाल तुम्हारे कूचे में। बानआपकी यहीं

चले नितवान तुम्हारे कूचेमें। जानभी बाक़ी नहीं रही दिलजान तुम्हारे कूचेमें २ यादमेंदिल बुल्बुलहै फँसा सैयाद तुम्हारे कूचेमें। दाद न उसको मिलीरहा बेदाद तुम्हारे कूचेमें। शादकरो आशक़को यहै नाशादतुम्हारे कूचेमें। बादमर्गकेलाश न हो बरबाद तुम्हारे कूचेमें। तानपैतेरीफिदाहै हिन्दुस्तान तुम्हारे कूचेमें। जानभी बाक़ी नहींरही दिलजान तुम्हारे कूचेमें ३ नाम बहुतसा हुआमेरा बदनाम तुम्हारे कूचेमें। रामराम कहताहूंकब हो आराम तुम्हारे कूचे में। आमहै आशक़बनारसी सरे आमतुम्हारे कूचेमें। हम्भीहोगये श्यामआके घनश्याम तुम्हारेकूचेमें। ध्यानलगाके करते हैं मध्यान तुम्हारेकूचे में। जानभी बाक़ीनहींरही दिलजान तुम्हारे कूचे में ४॥

गरचेइश्क़में रंजहोवे तो कोई इसका नाम न ले। आशक़ वोहै रंजके सिवा कहीं आराम न ले। लाखों सदमेसहे जिगरपर ज़बाँ से निकले आहनहीं। चाहने वालेको रंजके सिवा किसीकी चाहनहीं। ग़ममें ख़ुशी होवेसोई आशक़ दिलसे दूरहो दाहनहीं। सिवाइश्क़के दूसरी तरफ़को करे निगाहनहीं। जोकि लुत्फ़ है रंजमें ऐसा मज़ा कोई वल्लाह नहीं। वह क्या जाने जो इस्की लज्जतसे आगाहनहीं। जफ़ाको समझे वफ़ा अलमको छोड़ औरकोईकाम न ले। आशक़वहहै रंजके सिवा कहीं आराम न ले १ जिस्ने इश्क़को चाहा उसने ग़मखाना इख़्त्यारकिया। सरपर आरेचलें इसपरभी नहीं इन्कार किया। आशक़उसीकोकहिये जिस्ने जानोमाल निसार किया। दाग़ इश्क़से जिगरसीना अपना गुलज़ार किया।

दममेंदमको दम कर कर अभेदमकोदमदार किया। जिगर जलाया तौ उससे रोशनदिल दिल्दारकिया। जफ़ा को समझेवफ़ा अलमकोछोड़ और कोईकाम न ले। आशक़वहहै रंजके सिवा कहीं आराम न ले २ दर्जाइश्क़का हुआ रंजसेगरइसमें कुछरंज न हो। फिरकोई इसकोकरै क्यों यह जवाबतुम हमको दो। आशक़थामंसूर दार पर चढ़ाजान अपनी दी खो। लुत्फ़उठाया इश्क़का रंजको राहत समझाजो। आहइश्क़ने किये हैं क्याक्यासितम कहूंमैं क्या इसको। ग़मके दरियामें जिस्ने लाखोंई आशक़दियेडुबो। मुझसेभी कहताहै कि तू अब चैनसुबह और शाम न ले। आशक़वहहै रंजकेसिवा कहीं आराम न ले ३ मज़ा इश्क़का रंजमें है गरइसमें रंजनहीं होता। फिरकोईआशक़अश्कअपनेसेमुंहक्योंकरधोता। क्योंमरता शीरींपैकोहकन और मजनूंक्योंकररोता। अपनेसरको हाथसे वह सरमदभी क्योंखोता। बनारसी गर मज़ा न पाता तुख्म मुहब्बतक्यों बोता। बहरेइश्क़में लहरदेखी तौफिरमारागोता। मैंसलामकरताहूंरंजको चाहेवहमेरा सलाम न ले। आशक़वहहैरंजकेसिवाकहींआरामनले ४

ग़मेइश्क़में मरगये हम तिस्परभी नहीं यहग़मनिकला। आहसेआतिशलगी ख़ामोशहुयेतौ दमनिकला। ज़ब्तकरूंगरआहेसोज़ांकातोदिलबेताबहोवे। आहकरूं जो जिगर जलभुनके मेरा कबाबहोवे। यूंभी मरे औ यूं भीमरे किसतरहसे दिलकोताबहोवे। इश्क़सनमने किया आज़ाद यहउसे सवाबहोवे। क्याताक़त अगर उसके रूबरू ज़बांसे मेरी जवाबहोवे। जोचाहे सो करे अब

उसकाभला शिताबहोवे। लाखों सदमेसहे पर मेरे दि-
लसे न रंजोअलम निकला। आहसेआतिशलगी ख़ा-
मोशहुये तो दम् निकला १ कभी तो ग़मसे घबराकर
सहराकी तरफ़को चलते हैं। कहीं बैठकर हम अश्कफ़े
दस्तको मलते हैं। ग़मसे निकला चाहे तो बस दम्से
अभी निकलते हैं। हमहैंआशक़ हमेशा ग़मीमें फूलेफ-
लतेहैं। शोलेनूर समाया इसदिलमें तो हम्भीजलते हैं।
दिल्को रौशनकिया इससबबसे इसमेंजलतेहैं। आशक़
सादिक जानके मुझपर करने इश्क़ सितम् निकला।
आहसे आतिशलगी ख़ामोशहुये तो दम्निकला २ हम
आशक़हैं इश्क़केग़मखाना और खूनेदिलपीनाहै। जहां
पै देखा वहां आशक़का यही करीनाहै। आहकरूं तो
जिगरजले चुपरहूं तो धड़के सीनाहै। कहोक्याकरेंहुआ
मुशकिल अपनाजीना है। सूलीपर मंसूरने अपने खूने से
लिखा सफीनाहै। मौत नहीं है दार यह यार के घरका
जीनाहै। अनअलहककहनेसे देखने मुझको मेरासनम्
निकला। आहसे आतिशलगी ख़ामोशहुये तो दम्नि-
कला ३ इश्क़नहीं आसान बहुत मुशकिल इसइश्क़का
करनाहै। दिलको देना मोल ग़मलेना और दुखभरना
है। और किसीका ख़ौफ़नहीं बस सिर्फ़ उसीसे डरनाहै।
यहां जोबिगड़ाहुआ फिर उसका वहां सुधरनाहै। देबी
सिंह यहकहै इश्क़में जीतेहीजी मरनाहै। इसदिलऊपर
वही गुजरेगी जोकि गुज़रना है। बनारसी सरकफ़ेद-
स्तपर धरकर साहे अदम निकला। आहसे आतिश
लगी ख़ामोश हुये तो दम्निकला ४॥

वोनूरे रौशन क़मरसे बेहतर तब्क तब्कपर खिला उजाला। क्या ताबोताक़त गर उसको देखे मेरा वो दि-लबरहै सबपैबाला। वोजुल्फ़उसकी अगरचे देखे तोपेंच खाये चमनमें समबुल। हरेक बलमें है उसके छलबल वो दामे उल्फ़त है उसकी काकुल। वो गेसू उसके तौ मुश्कचीं हैं गोयागुलिस्तांमें सोसनेगुल। याहैं वो अब्रे सियाफ़लकपर याहैं आयतें क़ुरान बिलकुल। फँसा है उसमें यहतायरे दिल अजीबफंदाहै मुझपैडाला। क्या ताबोताक़त गर उसको देखे मेरा वो दिलबर है सबपै बाला १ है नौ जवानी में वो पेशानी और उसका माथा मेहरसे रौशन्। वो चीने उसकी किरनहै नूरकी चमक दमकमें क़मरसे रौशन्। और वो सफ़ाई हुस्ने खुदाई हरेकजिन• और बसरसे रौशन्। और वो पसीना गोया नगीना हरेकआवे गौहरसेरौशन्। सुनीहै उसकी सिफ़त यहजिस्ने झुकाकेमाथाज़मींपैडाला। क्याताबोताक़त गर उसको देखे मेरा वो दिलबरहै सबपैबाला २ वो दोनों अबरूझुकेहैंउसके गोया कमांयकताहै खिचीभी। और तीरे मिजगांचढ़ेजिसपर नज़र यह किसपर अबहैक़हर की। अगरख़फ़ाहोकर उससनम्ने ज़राभी अपनी वो भौं सकोड़ी। तौ गिरपड़े लाखोंसर ज़मींपर लगी न एक पलभी उसमें देरी। याहैं वो देगे हुदम चमकते या खं-जरेबुरांहै निकाला। क्या ताबोताक़त गर उसको देखे मेरा वो दिलबरहै सबपैबाला ३ वो चश्म आहू अगरचे देखे तौ आंखहरगिज़ न हो मुकाबिल। और सरझुका कर खड़ाहो नरगिस उसीकी आंखोंपरहोके मायल। व

खूनी नैना औ टेढ़ीचितवन पड़ेजिधरको तौ क्या होहा-
सिल। कोईहो मुरदा कोई तड़पता कोई सिसकता और
कोई बिस्मिल। वोमस्त दोनों पियेहुयेमै भरेनशेमेंलिये
हैं प्याला। क्या ताबो ताक़त गर उसको देखे मेरा वो
दिल्बरहै सबपैबाला ४ वोबीनी उसकी अलिफ़की सू-
रत जो उसको देखेकहै वो अल्लाह। फड़क वोनथुनोंकी
इसक़दरहै कि दिल तड़पताहै मेरावल्लाह। लभायशीरीं
में है वो लज्जत कि होठचाटे हरेकशैदा। हैंबातेंभोली
और वो ठठोली ना ऐसीबोली कहींहोपैदा। सुनेअग-
रचे जो गोशकरके वो उसके बातोंकी फेरेमाला। क्या
ताबोताक़तगरउसकोदेखेमेरा वो दिल्बरहैसबपैबाला५
कभी अगर्चे वो हँसके बोले लौचमकै उस गुलके ऐसे
दंदां। जिगरगौहरकाछिदेजो देखे और दांतपीसे लाले
बदख़्शां। यह सिफ़तसुनतेही खूनसूखा बिकाबेक़दर
जहांमें मिरजां। औ वर्क ऐसीगिरी तड़पके बेहोशाउ-
सकाहुआपरेशां। बयांकरूंक्यादहनका उसके हुआतंग
दिल न बोला चाला। क्या ताबोताक़त गरउसको देखे
मेरावह दिल्बरहै सबपैबाला ६ यह फ़क़त चेहरेकी एक
सिफ़तहै जो अक़्ल अपनीमें कुछथा आया। बयांवह मैंने
किया ज़बांसे पै भेद उसकाज़रा न पाया। कोई किताबें
बनाके थक गये किसीने सीखा किसीने गाया। हज़ारों
मुल्ला करोड़ों स्याने कोई इन्तहा न उसकीलाया। फ़ज़ल
उसीकाहुआतो देखा बनारसीनेवोबारीताला। क्याताबो
ताक़तगर उसको देखे मेरावहदिल्बरहै सबपैबाला ७॥
अकबराबादकेबीच मण्डवी जिवनीकीमें मेराधाम।

हरिकेभरोसे तहांमैं अहरनिशाकरता विश्राम । राधाकृष्णहै नाम जहां लिखनेकाही करतानिष्काम । उदर हेतु ये यत्नकरि मुखसे करता रामहिं राम । इस मेंही करताहूं गुज़ारा जो विधनाले दीनेदाम । लाखयत्नकोई करै तौ उसेमिले नाहिं एकछदाम । और किसीसे काम नहीं है बिधनाकोभजि आठोयाम । हरिकेभरोसे तहांमैं अहरनिशा करता विश्राम १ लिखनेकाहै परिश्रमजैसा करैसोई इसकोजाने । जानते पण्डितसभासद बड़ीकठिनता बखाने । पण्डितजनके सिवा और नहीं कोई भी इसकोजाने । ऐसेभीनरबहुतहैं बिनासमझअपनीतानै । बिनइच्छा भगवतकी क्योंकर जानेगा अक्षरकानाम । हरिकेभरोसेतहांमैं अहरनिशाकरता विश्राम २ सिन्धु फांदनासहज न समझो बड़ीकठिन होसकाहै । हनूमान के सिवानहीं और कोईकहसक्ताहै । जिसकतनपरै पीर वही पीर सभी सहसक्ताहै । क्याजाने कोई पीर और की जिसे तीरनहिंलगताहै । जोकुछ बिधना लिखी भालमें ताबिधिसे निबहै ये काम । हरिकेभरोसे तहां मैं अहर निशाकरता विश्राम ३ करकटग्रीवानयनशीशमुख नीचा करिदुखसहै सुजान । येलक्षण हैं लेखके पण्डितजन करतेहैं बखान । जोकोई सज्जन सुनेसुनावे सुनसमझै मनमें रखध्यान । परमदृष्टिसे कामना तिनकी पुजवैंश्री भगवान । पढ़ोसकलहरिभक्तपियारे राधाकृष्णाकरतापर-नाम । हरिकेभरोसेतहांमैंअहरनिशाकरताविश्राम ४ ॥

इति ॥